ज्ञा न भा र ती

४/१४, रूपनगर, दिल्ली

मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं

अमृतलाल नागर

भूमिका

हिंदी मे जिस शब्द को अब आम तौर से व्यग कहा और लिखा जाता है उसका शुद्ध सस्कृत रूप व्यग्य है। डिक्शनरी मे व्यग के दो अर्थ होते हैं—अगहीन और मेढक। आधुनिक व्यग्य विधा को कम से कम अब तो अगहीन नही मानेंगे क्योकि यह विधा साहित्य का अब एक महत्त्वपूण अग बन चुकी है। हा, सच को या जिदगी के सच को मेढक की तरह फुदकाकर यह विधा हमे निश्चय ही विनोद रसरजित कर देती है। आम तौर से व्यग और हास्य एक-दूसरे से जुडे हुए माने जाते हैं।

हमारे जीवन मे यो तो हास्य व्यग की परपरा बडे पुराने जमाने से ही चली आ रही है, लेकिन यह देखकर बडा अचरज होता है कि सस्कृत साहित्य मे हास्य-व्यग की रचनाए बहुत अधिक नही हैं। सस्कृत का एक श्लोक याद आ रहा है जो शायद हेकडीबाज किसी पडिततुमा बगलोल के लिए किसी मसखरे कवि ने लिखा होगा

"गुरोगिर पच दिनान्यधीत्य
वेदान्त शास्त्राणि दिनत्रयच।
अमी समाघ्नाय चनकवादान
समागत कुक्कुट मिश्र पादा॥

9977
28488

'यह देखिये, कुक्कुट मिश्र जी पधार रहे हैं, जो केवल पाच दिनो मे ही मीमासा-दशन पढकर गिरागुरु हो गये। बहस्पति जी तीन दिनो मे सारे वेदातशास्त्र घोलकर पी गये और सारे तर्कों को फूलो की तरह सूघ-सूघकर फेंक चुके हैं।'

व्याज-स्तुति अथवा व्याज निंदा के रूप मे व्यग का प्रयोग काफी हुआ है। मध्यकाल मे कबीर ने भी अक्सर कस-कसकर चुटकिया ली हैं। मस्जिद की ऊची मीनार पर चढकर अजान देने वाले मुल्ला से कबीर पूछते हैं कि 'क्या तुम्हारा खुदा बहरा हो गया है?' छुआछूत के डर से अधर-आकाश मे अपना धोती-अगोछा सुखाने वाले पाक-साफ पडितो से पूछते हैं, जिस गदी राह से चाडाल, चमार आदि इस धरती पर आया

है उसी राह से तो तुम भी आये हो पडित महाराज शुद्ध कहा हो ?'

व्यग-कविताए भी लगभग उसी जमाने से अक्सर देखने को मिल जाती हैं। हिंदी म इनका पुराना और प्रचलित नाम मडौआ' था। अकबर और जहागीर के जमाने म 'गग कवि ने भी सम्राट द्वारा भेंट दी गयी एक लटी बूढी हथिनी को पाकर एक मडौआ लिखा था जो काफी प्रसिद्ध हुआ तिमिर लग ल माल चढी बब्बर के हल्के' आदि-आदि।

आसफुद्दौला के जमाने के बनी कवि ने बडे ही तीखे मडौए लिखे थे। लखनऊ की कीचड भरी गलियो पर, वैद्य दयाराम द्वारा उन्हें भेजे गये 'चोपी रेसा बिसेस वाले खट्टे और छोटे आमो की व्याज-महिमा म दयारामजी का मजाक उडाकर उन्हें सदा अमर कर दिया है। किसी राजा ने उन्हें खुश होकर एक रजाई इनाम म दी

"रायजू को रायजू रजाई दीन्ही राजी ह्वै के
सहर मे ठौर ठौर सोहरत भई है
मास लेत उडिगा उपल्ला औ मितल्ला सबै,
दिन है की बाती हेतु रूई रह गई है।"

बेनी कवि के मडौए किसी जमाने मे बडे ही लोकप्रिय हुए थे। स्वय भारतेंदु ने भी मुशी अमानत की मशहूर इन्दरसभा' का विडबन (पैरोडी) 'बदरसभा के नाम से किया था। भारतेंदु काल म उनके अतिरिक्त चौधरी बद्रीनारायण प्रेमघन' और पडित प्रतापनारायण मिश्र ने भी हास्य-व्यग के क्षेत्र म काफी कुछ लिखा। महाकवि खुसरो की तरह भारतेंदु जी न भी कई मुकरिया लिखी थी

'भीतर भीतर सब रस चूसै हसि-हसि के तन-मन धन मूसै।
जाहिर बातन मे अति तेज, क्यो सखि साजन नहिं अग्रेज।'
'मुह जब लागे तब नहिं छूटै जाति मान, धन, सब कुछ लूटै।
पागल करि मोहिं करे खराब, क्यो सखि सज्जन नही सराब।'

कलकत्ते से प्रकाशित मतवाला' मे निराला जी 'चाबुक शीर्षक से एक बहुत तीखा व्यग-स्तभ लिखते थे। 'जागरण' मे शिवपूजन सहाय जी ने भी 'क्षण भर नामक स्तभ मे बडे ही चुटीले साहित्यिक व्यग लिखे हैं। इस काल मे जगदबाप्रसाद मिश्र हितैषी' ने बडे ही जोरदार मडौए रचे

क्रम

कौडी के तीन

भारत विख्यात मुगधि-सम्राट प० गौरीशकर गौरीश के कीर्तिशाली करियर की शुरुआत हुई तो कविताई ही स थी मगर बाद मे उनक नसीब न माने के डडे मार-मारकर उन्हें 'गौरीश गधालय' नामक फम तथा गौरीश कुटीर नामक एक चौमजिली हवेली का मालिक और गौरीश केशवधन तथा गौरीश केशलोचन' का निर्माता बनाकर विज्ञापना के द्वारा अखिल भारतीय ख्याति प्रदान की। जब खाकपति से लाखपति हो गय, तो फिर कविताई की चूल उठने लगी। दक्षिणा दे-दकर कवि-सम्मलनो के अध्यक्ष या सरक्षक बनने लगे। अपनी कविताए या कहिए कि तुकबदिया सुनाने लग।

ऐस ही एक निकट सबधी की बारात क लिए आयोजित एक अखिल भारतीय कवि-सम्मलन' म उनकी भेंट कवि सम्मलनो के 'लता मगेशकर' अनराष्ट्रीय ख्याति क गीतकार डॉ० प्रियकातम से हो गयी। डॉ० साहब की आवाज क्या थी मानो इजेक्शन की सुई थी जो सुनने वालों के तन मन म समाकर जादुई टानिक का काम करती थी। उदघोषक ने प्रियकानम जी का अतर्राष्ट्रीय डॉक्टरत्व और कवि-सम्मेलनीय लता मगेशकरत्व बडी लफ्फाजी के साथ बखाना था इसलिए जब दो-दा बार वस मार वस मोर, 'पुन -पुन का शोर मचवाकर तालियो की गड-गडाहट के बीच मे डॉ० प्रियकातम बैठने लगे तो गौरीश जी ने एक चमचे कवि को इशारा दकर उन्हें बुलवाया और अपने पास बिठा लिया। उधर कवि सम्मेलनी तमाशा चलता रहा और इधर गौरीश-प्रियकातम सवाद।

गौरीश ने पूछा, 'डॉक्टर साहब, आप कहा से आये हैं?'

डाक्टर साहब ने तनिक छायावादी ढंग में हमवर कहा, स्व० यि भगवतीचरण वर्मा कह गये हैं— हम दीवानों की क्या बस्ती', सो वहा मे बताऊ वधू । अभी-अभी तो अडमान से आ रहा हू । उसके पहले निकोबार फिरमाला वार लक्षद्वीप और न्यागो गार्सिया भी गया था । परसो रात को साढे बारह बजे जब घर पहुचा तो दरवाजे पर दस कवि सम्मेलन के सयोजक जी मौत हुए मिले । रो-राकर चरण पकडे और अपनी नाक बचवाने के लिए वे मुझे यहा ले आये । क्या करता वधू, आ गया ।'

आप क्या दवाइयो के डाक्टर हैं या चिच्छा के ?

' हू हें मैंने तो बिहारी और मतिराम के शृगार वणन की तुलना त्मक अध्ययन करके पी-एच० डी० प्राप्त की थी ।

वाह-वाह धन्य है ! कहकर गौरीश जी ने अपनी पालथी खोली आर अपनी चादी की डिब्बी खोलकर डाक्टर प्रियवातम के आगे बढायी, किंतु वह नखरे से मुह बनाकर बोले मैंने पान खाना छोड दिया है वधू ! हें हें मेरी एक प्रेमिका ने मुझसे पान छुडवा दिया ।'

गौरीश जी हसकर बोले, हें हें मेरा यह गौरीस ताबूल बहार पडा हुआ ताबूल यदि आप खा लेंगे, तो प्रेमिकाए सुगध की डोर मे खिंची खिंची आयेंगी और अपने अधरो को आपके अधरो से सटायके कहेंगी कि प्यारे हमे भी खिलाइये हें हें हें

इस प्रकार जब दोनो मे परिचय का आदान प्रदान हो ही रहा था कि उदघोषक ने बडे-बडे विशेषणो के साथ अध्यक्ष गौरीश जी को मच पर आमत्रित किया । गौरीश जी अकडकर बोले ' माइक्रोफून हमारे पास ही ले आइए निघटू जी । मैं बैठकर ही कविता-पाठ करूगा ।'

माइक्रोफोन आया । ठोक-ठाक हुआ । उसे उगली से खटखटाया । फिर फूक मारी । तब भाषण शुरू किया । सज्जनो नहीं, पहले देवियो, फिर सज्जनो ! इस समय मैं आपको जो काव्य सुनाने जा रहा हू उसको लेकर विद्वानो के बीच मे बडा गहन और गभीर शास्त्रार्थ भया रहा । कोई कहे हास्य है कोई कहे व्यग्य है । कोई सयोग स गार बखान, तो कोई बिजोग स गार । किसी विद्वान ने उसमे रौद्र रस देखा, किसी ने बीभत्स । सो बडे सौभाग्य से हमारे बीच मे इस समय अडमान रिटर्ड

डॉक्टर प्रियकातम जसे बड़े विद्वान और सुकवि बिराजमान हैं इसलिए सुनाता हू जिसम कि उनका मत भी सज्जनो को विदित हो जाय कि वह कौन-सा रस है।' उदघोषक और कुछ कवियो ने धन्य-धन्य की पुकार की। गौरीश जी दबग आवाज मे कविता सुनाने लगे

रात अधेर मसार की आर
सुप्यार को लै गयी फसाय कू गोरी।
गौरीस जू पास म आय हसी
लिपटाय लयी पिय की बरजोरी।
पिलाय कै चसे, गिराय कै फर्श
पे छीन कै पस कहै मुहजोरी।
और लडाओगे इस्क पिया' हसि
लात जमाय कै कम्मर तोरी॥

बाद मे डॉक्टर प्रियकातम जी ने इसमे साहित्य के नवो रस का कॉक्टेल सिद्ध करके शैली, कीटस, बायरन से लेकर अज्ञेय और बच्चन तक के सारे कविता-सग्रहो से गौरीश जी की इस एक कविता को ताल डाला। कहा, "मैं आपकी इस कविता पर डी० लिट० का शोध प्रबध लिखूगा।"

हैं हैं हमको मिच्छा की डॉक्टरी दिलाओगे प्यारे।"

"आपको नहो बधु, डॉक्टरी तो मुझे प्राप्त होगी, परतु आपका बडा यश फैलेगा। भारत भर की समस्त भाषाओ मे आप विज्ञापन छपा सकेंगे कि डॉक्टर प्रियकातम आपकी कविता पर डी० लिट० डॉक्टर अर्थात डबल डॉक्टर हो गये।'

"हू। खरचा कितना होगा ?"

खर्चे की बात यह है बधो कि भ्रष्टाचार के कारण मैं पिछले आठ वर्षों से बेकार हू, अन्यथा अपने किसी कवि बधु से मैं खर्चे की बात कदापि न करता। चाहे वह लखपती या करोडपती ही क्यो न हो खैर, मैं भूखे पेट रहकर ही, कविसम्मेलनो की आकाशी वृत्ति के भरोसे ही अपने मित्र को अतर्राष्ट्रीय ख्याति दूगा।'

जाने कौन-सी कुशाइत थी कि रुपये की तीन अठन्निया भुनाने वाले

प्रिय कवि इस फटी बुश्शर्ट और बिना क्रीज की पतलून में ही दूल्हा बनकर जायेगा बधू ? धनी मानियों के बीच में वैभव में जाना ही उचित है। इसीलिए हमारे शास्त्रकारों ने हमारे जगदगुरु शंकराचार्यों के सोने चांदी की खड़ाऊं पहनकर हीरा-मोती जड़ित सिंहासनों में बैठने की व्यवस्था दी थी।"

गौरीश जी हंसकर प्रियकांतम की पीठ थपथपाकर बोले, 'रेशम का कुर्ता पहनाय के तुम्हें बैठाऊंगा प्यारे चिंता क्या करते हो ?

प्रियकांतम अकड़कर बोले, 'रेशम नहीं टेरीलीन। कुर्ता नहीं बुश्शर्ट और पतलून। वेशभूषा युगधर्मानुकूल होनी चाहिए बधू !'

"एओमस्तु। जसी कवि जी की इच्छा। गौरीश समशमद कवियों का लाभ है।'

टेरिलीन की बुश्शर्ट और पतलून खड़े-खड़े तयार करवायी गयी। गोष्ठी के दिन गौरीश वंशवर्धन और गौरीश स्नो लगाके जब सब तरह से टिप-टाप हुए, तो बड़े दर्पण के सामने अपनी छवि निहारते हुए गौरीश से कहा हां, अब लखपती कवि का मित्र कहलाने योग्य लगता हूं परंतु '

अब किस बात की परंतु प्यारे ?'

"आपके समान नगजड़ित मुद्रिकाएं चाहिए बधू ! दो तीन न सही एक तो हो बधू। हीरे मानिक की न हो, किंतु पुखराज की तो हो ही। गुसाईं जी महाराज कह गये है— सुंदरता कह सुन्दर करई "

गौरीश जी सुनकर कुछ कुछ उदास ता हुए परंतु एक पुखराज की अंगूठी भी तिजोरी से निकालकर पहना दी।

"बहुत सुन्दर है बधू ! क्या जगमगाता है इस दाहिने हाथ में परंतु परंतु

अब क्या भया ? '

'क्या बताऊं बधू मेरी गति मार जभी है। एक ओर तो वह अपने शरीर की रंगारंग सुन्दरता देखकर प्रसन्न हो रहा है किंतु दूसरी ओर अपने परों की असुन्दरता निहारकर टपाटप आंसू भी गिरा रहा है। जरा मेरे बायें हाथ की घड़ी लखिए डायल का शीशा टूटा है। फीते का चमड़ा

अपनी जीर्ण शीर्ण अवस्था से अपनी बत्तीसी उघार रहा है, यह देखिये।"

गौरीश जी खिसिया गये, बोले 'घडी लाने के लिए अब समय कहा रहा देवता ?'

"परंतु मेरा तो यह नियम है कि घडी देखकर ही कविता पढता हू। मेरा एक-एक शब्द एक-एक क्षण मूल्यवान है। अपने सारे ब्रमव म जब घडी पर निगाह जायगी तो मेरा मूड आफ हो जायगा। कविता क्या खाक पढूगा'

'तब ऐसा है, इस दम तो हमारी घडी पहनकर काम चलाय लओ फिर तुम्हारी घडी का सीसा फीता बदलवाय देंगे।'

गौरीश कुटीर म अपने सम्मान म आयोजित कवि गोष्ठी म प्रियकातम जी का प्रभाव जादू सा पडा। गौरीश जी गले तक गदगद हो गय।

एक बडे सरकारी विभाग के डायरेक्टर जनरल साहब की गारी भस-जसी धमपत्नी श्रीमती कुसुमलता देवी गौरीश केशलोचन की तब से ग्राहिका थी जब वह अपने आई० सी० एस० बडे बाप के घर तथा तथित कौमाय जीवन बिता रही थी। उनकी मूछो क रोयें घने काले थ ठोडी पर भी रोयें दिखायी देने वाली स्थिति म ये मोटापे के अलावा उनके सौंदय की यह विशेषता उनके विवाह म बाधक थी। गौरीश उन दिनो साहब के बगलो और सेठो की हवेलियो म फेरिया लगा-लगाकर अपना तेल पाउडर बेचते थ। कुमारी कुसुमलता के बगले के एक नौकर ने उन्हें कुमारी जी से मिलवा दिया। गौरीश केशलोचन-पाउडर न उनकी मुखछवि को दिखलाने लायक बना दिया। कुमारी जी के आई० सी० एस० बाप और मा भी गौरीश को मानने लगे। पाच सौ रुपये इनाम मे दिये। उ ही रुपयो मे गौरीश जी न अपना काम बढाया था। कुमारी कुसुमलता जी चूकि अपनी कुरूपता क कारण अपन वग-समाज के युवको स उपेक्षिता थी इसीलिए उ हें अपने प्रजाजनो का ही अपन प्रेमबधन म बाधन की चाट लग गयी थी। गौरीश जी को तो उन्होंने अपना विशेष प्रेमी बनाना चाहा था किंतु यह बेचारे अपन घर की काली भस क डर स ही इतन पीडित थे कि यह प्रेम आध्यात्मिक प्रम ही बनकर

रह गया। ब्याह के बाद भी अपने आई० ए० एस० पति के साथ जहा भी रही, वही उन्हें अपन तेल पाउडर और पान बहार बराबर भेजते रहे। तीस बरसो से यह प्लटॉनिक प्रेम सबध कायम है। पति से भी घनिष्ठता है। आज भी दोनो ही आये थ। श्रीमती कुसुमलता जी युवा कवि के कठ और सावली सूरत पर रीझ उठी। सट-मटकर प्रियकातम के इद गिद मच्छर-सी गुजार करते हुए कनखियो के कई डक भी मारे, मगर उस छोटे-से मजमे मे कुछ शरबती और कुछ शराबी चितवनें भी थी। कुछ नय प्रशसक भी थे। प्रियकातम कुसुमलता जी के पल्ले न पडे।

रात मे गौरीश जी के पास उनका फोन आया। गौरीश जी गदगद कठ स बोले, "अरे लता जी ! वाह वाह ! देवी जी का ध्यान करते ही देवी जी बोल पडी। क्या भाग हैं मेरे ! अहा हा हा ! "

'सुनो गौरीश, वो जो तुम्हारा पोएट है ना उस लेकर कल तुम साढे बारह बजे मेरे घर आ जाना, लच साथ लेंगे।"

'ऐसा है दवी जी कि कल्ल तो हमारी कोट म पेसी लगी है। एक लनदार से मामला फसा है। आप अपनी मोटर भेज दीजियेगा।"

हमारी मोटर तो साहब के साथ दौरे पर जायेगी। ऐसा करो गौरी कि तुम रिक्शे पर चले जाओ तुम्हारी गाडी पोएट को मेरी कोठी पर ल आयगी।

"अच्छा ! जसी आपकी आज्ञा भयी, वैसा ही होयगा। बाकी एक प्राथना हमारी भी आपको माननी होयगी। इनकी कही नौकरी लगवाय दीजिये साहेब स कहक।"

"अरे वो सब तो हो ही जायेगा। तुम उन्हें भेज देना, समझे ?"

"नही, मेरा आसय है कि नौकरी मिल जायगी, तो कही घर लक रहेंग '

'ऐसा है तो तुम उन्हें मेरे यहा भेज दो। एक आउट हाउस खाली पडा है, द दूगी।

दूसरे दिन सवेरे गौरीश जी ने प्रियकातम से कहा गाडी मुझे वकील साहब के यहा छोड के तुम्हारे पास आ जायगी। लता जी एक बडे डाइरेक्टर जनरल की पत्नी है। आप नौकरी घर, मतलब यह कि

सातो सुख उनसे प्राप्त कर सकेंगे और मोध काज भी कर सकेंगे।"

"कौन लता जी ? वह गोरी मस तो नही ?" प्रियकातम जी ने नाक चढाकर कहा।

'अरे-अरे तुम कवि होकर सौदय की उपेच्छा करत हो प्यारे ! अरे भम है, तो क्या हुआ ? सरकारी नौकरी लेव, घर लेव और क्या चाहिए। बस यही है जवान आदमी हो अपने गीत सुनाने पडेग, और उसके सुनने पडेगे —ह हे हे '

जिस समय गौरीश जी अपनी गाडी डाक्टर माहब का सुपुद करने की बात कर रहे थे उस समय डाक्टर साहब के मन म एक फोन नबर गुदगुदी मचा रहा था जो रात भर उनके तकिय के नीचे रखा रहा। गौरीश जी के घर स जाते ही उन्होने टेलीफोन मिलाया 'हैलो, श्वेता जी मैं डाक्टर प्रियकातम बोल रहा हू।'

'हाउ चार्मिग ! मैं आप ही के बारे मे अभी-अभी अपनी सहेलियो स बाते कर रही थी। अगर खाली हो तो आ जाइए।

ऐसा है श्वेता जी कि मुझे श्रीमती कुसुमलता जी के यहा लच लेना है। आपको फिर मुझे वहा भी छोड देना होगा।'

आह वो मोटी बुढिया ! मैं अब कुछ नही सुनूगी। कार लेके आती हू।'

"नही कार तो मेरे डिस्पोजल पर गौरीश जी ने कर दी है। आधे घट मे उन्हें वकील के यहा छोडकर आती होगी।

तब तो फिर और भी अच्छा है। मैं अभी अपनी सहेलिया को फोन कर रही हू। दो गाडिया म सवार होकर हम दस ग्यारह लडकिया आपको बोटेनिकल गार्डन म ले जायगी। लेटस एनज्वाय ए पिकनिक टुडे ! आपकी कविताए भी रेकार्ड करेंगे।

उस दिन शाप हो गयी। गौरीश कचहरी से घर भी लौट आये। कुसुमलता जी के बेसब्री भरे फोन भी सुनते-सहते रहे। दोनो समय का भोजन दो जगह अकारण गया तब रात के साढे दस बजे कवि-वर ने गौरीश कुटीर म कार के साथ प्रवेश किया। सयोग की मार कि ठीक उसी समय गौरीश जी के पास लताजी का फोन आया पोएट आ

गये ?"

"हा हा लता जी ! यह ेखिये, कमरे मे आ ही रहे हैं, लो भाई डॉक्टर माहब, लता जी का फोन है बिचारी दिन-भर तुम्हारी बाट दखती रही। लो भई लो, बात करो डॉक्टर नाहब !"

डॉक्टर माहब को बात करनी ही पड़ी "हैलो ! मै डाक्टर प्रियकातम बोल रहा हू। हा, लता जी क्या बताऊ एक जान है और हजारो झझटें मेरे पीछे लगी हुई हैं। वो मठ सुगनामल की ग्राड डाटर अपनी तमाम कालिज की महपाठिनो क माथ मुझे घेर ले गयी। दिन-भर कविताए टेपरिकॉडर पर रेकाड करवायी। बहुत परेशान किया इस समय आऊ ? अब तो बहुत दर हो गयी है लता जी ! क्या कहा फारन लिफ्ट ? अच्छा, तो मैं अभी आता हू।'

गौरीश जी इन तीन दिनो म स्कालरश्किप म काफी तग आ चुके थ। उन्होने ड्राइवर के कान मे धीरे से कहा 'इनके कमरे म इनका बग निकालकर पहले गाडी म रख लो। बगल म छोडकर मीधे चले आना। पीछे मुडकर भी न देखना।"

ड्राइवर बोला, "अरे महाराज, ये महा का छिछोरा आदमी है दिन भर हमने इसको देखा। इन कमीने को आप काहे पकड लाय

गौरीश जी आह भरकर रह गये बोले जो मैन कहा है करो !

इस प्रकार डाक्टर प्रियकातम गौरीश जी के घर स विदा हुए कुसुमलता जी का घर सुशोभित किया। पति देवता आठ दिन के टूर पर गये थ, दूसर दिन कुसुमलता जी ने जाहिरा तौर पर एक आउट हाउस म उन्ह रख लिया और कवि जी का लता जी के इतन गीत सुनन पडे कि वह गल गले तक भर उठे। मगर नौकरी का मामला अटका था। लता जी न कहा, "साहब स कहकर म तुम्हे हिन्दी आफिसर बनवा दूगी।'

जिस दिन साहब ने उन्ह अपन निजी हिन्दी सलाहकार की टपरगी नौकरी दी, उसी दिन स मम माहब न भी उन्हे अपना पसनल असिस्टेंट बना दिया। वनिता समाज शिशु विहार नसरी स्कूल आदि जितनी सस्थाओ स उनका अवतनिक दफ्तरी नाता था उनक पत्र लिखान लगी।

दो भाषण भी लिखवाये। यह सब करवाते हुए खातिरें भी करती था। साहब के लिए आने वाली रिश्वती ह्विस्की में डॉक्टर साहब का हिस्सा भी राज लगने लगा खाने-पहनने का सुख भी था। साहब के दो पुराने सूट भी दर्जी से थोड़े छटवाकर रहें दे दिये। सूट पुराने, मवा निन नयी-नयी। प्रियकातम दफ्तर में जिस तिस के सामने नेसिया बघारने लगे।

कुसुमलता जी का केशलोचनी इतिहास उसके साथ अपना कूटी-सच्ची प्रेमकथाए इतनी सुनायी कि साहब के कानों तक बात पहुंची। साहब ने मेम साहब से कहा यह आदमी आस्तीन का साप है। इसे रखना ठीक नहीं।

केशलोचनी कुसुमलता जी आइ सी०एम० की बेटी, आइ०ए० एस० की अर्द्धांगिनी सुनते ही आग भभूका हो उठी 'इस कानी कौडी के पोएट को मैं असली हैसियत दिखला दूंगी।' नौकर को आदेश दिया कि उसका सूटकेस बाहर निकालकर उसके क्वाटर को ताला लगा दो। कोठी में घुसने न देना उसे। न जाये तो धक्के मारकर निकाल देना।

नौकर को हुकुम देकर केशलोचनी मेम साहब ने गौरीश को फोन करके प्रियकातम की निन्दा के लंबे लंबे थान फाड़े। गौरीश ने कहा, आपने उचित समय पर मुझे चेताय दिया देवी जी। अब मैं सावधान रहूंगा। उसका कच्चा चिट्ठा अब हम विदित हो गया है। न डाक्टर है, न विलायत रिटन।

लेकिन साहब के बंगले से निकल जाने पर प्रियकातम गौरीश के यहा न गये। एक जगह और मेहमान बने। अफसरी भ्रष्टाचार के विरुद्ध लाल बावटा (लाल झंडा) टाइप गीत लिखे। जिनके घर दो-चार दिन के वास्ते रुके उनके लिए ही बवाले जान बने। किसी आतिथेय के कीमती फाउंटनपेन पर बधू बधू वह के अधिकार जमाया किसी के स्कूटर को बिना पूछे सैर-सपाटे के लिए ले गये। किसी की नौकरानी को इतना घेरा कि उसने अपने मालिक से शिकायत की। एक महीने के भीतर छह जगहें बदली और छहों घरों से निकाले गये। कहीं बहाने से कहीं बेआबरू होकर।

हारकर एक दिन फिर गौरीश कुटीर पहुचे । उन्होने इनकी ओर रुख भी न किया। पान चबाते हुए अपने बहीखाते सम्हालते रहे। प्रियकातम बोले, "वधू, मैंने सर्विस छोड दी है। अब निश्चित मन से शोध काय करूगा।"

'हमने अब आप पर ही सोध करके ख्याती पान का निस्चय किया हैगा प्यारे भाई। सुनाय—

रहू गये ना आये कछु पढे ना पढाये जो
कविताई क काने गलेबाजी के सयाने है
नाम के प्रिय अरु काम के अप्रिय महा
झूठे लबार परनिंदक "

"बस बस, अब रहने दीजिए,"

"नहीं, इसे मैं विज्ञापन में छपाऊगा। आपकी फोटू के साथ। यदि यह झूठ है तो आप मुझ पर मुकदमा चलाइए। जाइए, निकल जाइए यहा से।

"कहा जाऊ वधू ? छह महीने का किराया बाकी है मकान मालिक निकाल देगा।

'और मै भी निकाल दूगा।—अरे गजराज!'

आया सरकार!

"इनसे हमारी अगूठी घडी ले लेओ और विदा करो घर से हमारे कामकाज का सम है।"

प्रियकातम जी सहम गये। गिडगिडाकर बोले, 'किंतु आपने मुझे स्नेह भेंट "

'भेंटे सदकवियो को अर्पित की जाती हैं, खाखल अकडबाजो को नही गजराज!"

नहीं मैं स्वय ही दिये देता हू। यह लीजिये। अब मानवता के नाम पर एक प्याला चाय

'हा हा लोटा भर पिया। गजराज, इन्हे जलपान भी कराओ लेकिन घर के बाहर चबूतरे पर।'

अपनी ख्याति की लुटिया डुबोकर डाक्टर प्रियकातम फिर कौडी के तीन हो गये।

सामने हहराते हुए समुद्र की ज्वार-सी उछल उठी, और उन्होंने गम को तस्वीर की तरह फ्रेम में बाधकर अपनी रिआया के सामने इस तरह पेश किया गया प्रेसमनो से कह रही हो, 'तुम्हारे साहब अब नहीं रहे।

यह कहकर मिसेज अहमद फिर बेहोश हो गयी।

जमाने को नौडन म देर लगती है मगर मिसेज अहमद क गम की इस खबर को उनके दोस्त-अहबाव तक दौडकर पहुचने म देर न लगी। दिन भर दोस्त और टेलिफोन की घटियो का ताता बधा रहा। शाम तक मिसेज अहमद की एक एक आह, खिसकी आखो म आसू लाने वाली बातें अहमद के साथ अपने पहले मिलन प्रेम शादी, हनीमून और एयरो-ड्रोम क आखिरी चुबन तक की बातो के साथ तरतीबवार सध गयी। देखने वाले सब एक मुह से यही कहते थे ओह। बेचारी मिसेज अहमद का दुख ता देखा नही जाता।

मिसेज गुलशन भरूचा ने कहा, "जाने। आखो ढारा ठई किया। बेचारी ने कुछ नहा खाया—पुअर मिसेज अहमद कसा ढोका डिया है टकडीर ने।'

मिस्टर पीरोज भरूचा ने आगा हश्र कश्मीरी के ड्रामे पढ-पढकर अपनी जबान को पारसी से फारसी बनाया है उसकी अदायगी मे सोह-राब मोदी स टक्कर लते है। मिसेज अहमद के दुख पर अपनी मिसेज की पारसी के ढग से सवारकर सधी हुई बुलन्द आवाज म वाले 'धोखा नही। कहना चाहिए कि उससे भी जियादह। आह के साथ—

किस्मत की खूबी देखिए
टूटी कहा कमद।
दो चार हाथ जब कि
लबे बाम रह गया।

अगर टूटना ही था तो इग्लड की सरजमीन म टकराकर टूटता। कम-अज-कम लोग अपने दोस्त के आखिरी वक्त पर पहुचकर उनकी लाश पर अपनी मुहब्बत के चार फूल तो चढा सकते। मगर अफ्सोस।'

मिसेज अहमद कुछ देर से सोफे के सिरहाने पर अपनी

सूखी ... बन

डान आसो को हाथ स ढके हुए पडी थी। मिस्टर नरूला की बातें उनकी कल्पना की हर मतह को छूकर रामानी खयाल की रगीनियो स भर गयी। तुरत उत्साह म भरकर बाला, व्हाट ए नाइस आइडिया! काश, कि एसा हाता! बफ म ढक हुए कब्रिस्तान म जब इतन हिंदुस्तानी मिल कर अपन बिछडे हुए साथी को आखिरी आनर' दत, तब इगलडवाला को मालूम हाता कि हमार कौमी जज्बात क्या हात हैं! अहमद की मौत एक नशनल हीरा की मौत की तरह याद की जाती। माइ पुअर अहमद, अब जिंदगी भर क लिए उनकी याद एक दाग बनकर मेरे दिल म रह जायगी। किसी सूरत स भी न भुला सकूगी कभी भी न भुला सकूगी।

मिसज अहमद की बडी-बडी खूबसूरत आखें आसुआ स नहाकर और भी खूबसूरत लगन लगी, जिन्ह दखकर मिस्टर खडवाला का दिल पचर हा गया। उनके साफ की बाह पर आकर बठत हुए, उनक सिर को बडे भाव स थपथपाकर बाल, इतना गम न करा विमी! तुम्हारी तदुरुस्ती खराब हो जायगी।

आप ठीक कह रहे हैं मिस्टर खडवाला —भरे बदन क, गज अधेड मिस्टर भडकमकर सजीदगी का अवतार बनकर आग बढे, 'विमला अगर इतना रज करेगी तो इस टी० बी० हा जान का डर हागा। अभी ता बचारी वर्मा क डायवास-कस स अपन मन का सभाल भी न पायी थी कि यह दुख इसक सिर पर पड गया। कहावत है मराठी म कि चुलीतून धूनिन वतात पडण—एक सकट स निकले कि दूसरे म पड गये।'

मिसज अहमद ने बडी तडप के साथ अपने लिए उछाली गयी सहानुभूति का कच कर लिया। जज्बात फिर आखा म भलक पडे। अल्फाज के साथ साथ आह दिल से बाहर निकली 'आप सच कहते है मिस्टर भडकमकर! मेरी तमाम जिंदगी ही एक दुख की कहानी है, दद का नगमा है एक एसी शमा है जिसे नसीब की आधिया जलने स पहल ही बुझा बुझा डालती है।

ए पाएटेम! डिवाइन पतम! मिस सामा कापडिया यो चह

चहा उठी गोया पिंजरा तोडकर बुलबुल भागी हो। बेचारी की पूरी शाम एक मातमपुर्सी को लकर बेरानक हुई जा रही थी, और यह खयाल अब तो उनके मन पर मातम बनकर छाने लगा था। मिसेज अहमद के कविता भर बखान ने उन्हें मौका दिया और चट से बात का मिस्टर अहमद की मौत से मिसेज अहमद की कविता की तरफ मोडकर बडे जोश के साथ बोली "मैं बाजी लगाकर कह सकती हू कि अपने प्रियतम की इस ट्रेजिक मौत से इमपिरेशन लेकर विमला एक ऐसा मास्टरपीस महाकाव्य लिख सकती है जो कि शाहजहा के ताजमहल से भी ज्यादा ठोस, और रोमियो जूलियट की प्रेम-कहानी स भी ज्यादा महान साबित होगा। आफ, मिस्टर वर्मा की जेलर जमी उस कडी निगरानी और सख्तियो म विमला का अहमद के लिए तडपना मैं क्या भूल सकती हू, वह दिन? तब एक दिन एमी ही आसुओ स धोयी आखो स मुझे दखकर इसने मेरे दिल म प्यार के पर्दे खोले थे। कहा था—मुझे इन सख्तियो म वही सुख मिलता है जो लला को मिला था। अब फिक्र क्या! दिल जिसका था, उसे सौंप चुकी। अब तो उस खाली जगह पर पत्थर रख लिया है जिसका जी चाहे चोट करे।

कमरे म चारो तरफ से वाह-वाह के झोंके आने लगे। मिस्टर खडवाला का तो जज्बाती हिस्टीरिया का दौरा ही उमड आया। सबके बाद तक झूमकर वाह-वाह करते रहे। फिर एक गहरी सास डालकर आखें चढा ली। मिस्टर भरूचा, मिसेज गुलशन भरूचा—सभी मिस्टर अहमद को भूलकर मिसेज अहमद के शायराना दिल की झोली के भिखारी बन गये।

मिसेज अहमद ने मौके की रानी का सिंहासन बडी सजीदगी के साथ सभाला। उसके दुख भरे चेहरे पर हलकी मुस्कान इस तरह खिली जैसे घटाटोप बदली के भीतर झाक जाने वाली बिजली चमकती है। बसवारे हुए बालो पर मुलामियत स हाथ फेरकर कहा, 'क्या सुनाऊ, मेरा सुनने वाला तो आल्प्स की बर्फीली चोटियो म सो रहा है।

मिस्टर खडवाला की सर्द सास कमरे म गूज उठी। मिसेज अहमद ने हमदर्द निगाहो स उनकी ओर दख लिया। नजरें मिलाकर मिस्टर

रवडवाला का गमगीन सिर नीचा हो रहा, और मिसेज अहमद ने कहना शुरू किया 'गो हौसला नही, मौका भी नही, मगर आप इसरार करते हैं तो एक कविता सुनाती हूं। यह मेरे अहमद को बहुत पसन्द थी।

सुनने वालो ने कविता की अगवानी मे सूनेपन के फूल बिखेर दिये। मिस सोमा कापडिया फौरन ही निशानो के स्टूल की ओर लपकी। मिसेज अहमद ने यो घबराकर सावधान किया जैसे कि मिस सोमा छत से नीचे ही टपकने जा रही हो। वाली ना! ना! आज की रात साज न छेड मेरे अहमद की रूह लरज जायगी।

मिसेज अहमद के दर्द की तराश्या से निकली हुई इस बात पर वाह वाह के छीटे उडे हाय हाय की बौछार पडी और मिसेज अहमद की कविता चमकी

> ओ मेरे प्यार के गीत !
> ओ मेरे मन के गीत !
> चुप हो
> खामोश जरा देख तो
> कौन आता है !
> विरह का राक्षस खूंखार
> बना घाता है।
> आ मेरे मीत तुझे दिल मे
> छिपा लू अपने।
> कि इसमे पलते है तेरे ही
> सुखो के सपने।
> चुप हो ढीठ, मेरे गीत
> जरा तो चुप हो।
> दिल से दर्द गया जीत
> जरा तो चुप हो।
> अरे सुख के दिन गये बीत,
> जरा तो चुप हो।
> प्रीत मे हो रही अनरीत

जरा तो चुप हो।
तू य कहता है कि,
प्यारे का पयाम आता है।
अरे दिल, सब्र कर,
बस सुबहा-शाम आता नही
यह जानता अजाम मुहब्बत की तरह—
विरह का राक्षस सूरवा'र
बना घाता है।
चुप हो। खामोश जरा दख
तो कौन आता है।
चुप हो। खामोश जरा दख
तो कौन आता है।
ओ मेरे प्यार क गीत।
आ मर मन क मीत।

टगोर टी० एस० ईलियट, इक्बाल बायरन कीटस शली मिल्टन तक सब कवियो की फेहरिस्त खत्म हो गयी मगर मिसेज अहमद की कविता की तारीफ खत्म न हो सकी। मिसेज कथरआइडीन ने तो मोपासा, वनर्गाग और पिकासो की कविताओ की तरह इस कविता को भी सदा याद रखने लायक चीज करार द दिया। मिस्टर रवडवाला ने एतराज उठाया कि इन तीना नामो म स एक भी कवि नही। इस पर मिसेज कथरआइडीन बिगड गयी। उन्होने कोतीनेन्टुल कुल्चर' पर एक गर्म लक्चर द डाला, जिसके हिसाब स लेडीज की कोई बात काटना शराफत का बडे से बडा जुर्म है। मिस सोमा कापडिया पिछले साल ही यूरोप की सर करक लौटी हैं। उन्होंने मिसेज कथरआइडीन की कोन्तीनेन्टुल कुल्चर' की जानकारी का मजाक उडाया। इस पर मिसेज कथरआइडीन का चमक उठना लाजिमी था। और चूकि इधर कई महीनो म मिसेज कथरआइडीन की चमक का मिस्टर भडकमकर पर खास असर पडता है लिहाजा उनका भडक उठना भी लाजिमी था। मिस सोमा की तरफ से बहस करने वाला कोई यहां मौजूद न था, मगर चूकि बडे बाप की

बेटी है इसलिए वह खुद अपने तजुर्बे के बल पर वकालत करने लगा। मिसेज भरूचा ने जरूर उनकी हर बात पर जोरदार 'हां' की गह दी, और वह भी इस तरह कि जैसे वह खुद भी कुन्तीनेन्त की सैर कर आयी हो। मिस्टर भरूचा ऐसी कुल्चरल लडाइयो के वक्त हमेशा से अपनी साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल सप्लाइज लिमिटेड' के सिलसिले म कुलावे भिडाने के आदी हैं इस वक्त भी उसी मे मसरूफ हो गये। मिस्टर फ्रासिस जोशी को अपनी चमकदार मिसेज की तरफदारी के बजाय उम्र पचपनसाला की झपकियो म ज्यादा रस मिलता है। व उसी रस म डुबकिया लेने लगे।

मिसेज अहमद इस वक्त मातम के मूड मे थी। मिस्टर अहमद की इस अचानक मौत ने उनके दिल म एक जगह खाली कर दी थी। उसमे सूना पन और आने वाले कल की चिंता भर रही थी। उन्हें अहमद की माली हालत का सही-सही अदाज तो शादी के इन आठ महीनो म भी न हो सका था मगर वह इतना जरूर समझ रही थी कि बक म दस-पाच हजार से ज्यादा रकम न होगी। एक बिजनेस फम के मनेजर और छोटे पत्तीदार के पास आखिरकार हाथी घोडे तो बध नही सकते। फिर उनकी रोज मर्राह की जिंदगी काफी खर्चीली थी। इन्ही सब उखडे-से खयालो को लेकर मन ही मन अपनी थकान से जूझ रही थी। मेहमानो पर गुस्सा आ रहा था जो उन्हें अकेली छोडकर आपस मे जूझ रहे थे। मिस्टर रबडवाला की तरफ ध्यान गया। वे हमदद निगाहो से ताक रहे थे।

मिस्टर रबडवाला को मिसेज अहमद के दुख से दुख हो रहा था। वह उस जमाने से मिसेज अहमद की कद्र करते हैं जब वह मिसेज वर्मा थी। उन्हें अहमद पर एक खामोश किस्म का रश्क होता था। अपने ऊपर पछतावा भी आता था कि सोसायटी की किसी प्रेम-कहानी के हीरो न बन सके। अपनी किस्मत पर हा अफसोस होता था जिसने उन्हें अहमद की तरह पुरमजाक, हाजिरजवाब चुस्त, चचल और लेडी-किलर न बनाया। वह अहमद की नकल करने की भरसक कोशिश भी किया करते थे। और जब मिसेज अहमद की अहमद के साथ शादी हो गयी तो वह

मन-ही-मन अपनी 'हीरोइन' के और भी नजदीक सिमट आये थे। इस वक्त भी जब उन्होंने मिसेज अहमद को बहस म हिस्सा लेते न देख खामोश और उदास दखा तो खुद का भी कमरे के कुल्चरल फिजा से समेट लिया। सिर भुकाकर बैठे रहे। बीच-बीच मे उदास आखें उठाकर मिसेज अहमद को देख लिया करते थे। जब नजरें मिल जाती थी तो उनको राहत होती थी। और नजरें मिल ही जाती थीं—खयाल आ ही जाता था।

कमरे क कुल्चर मे जब कोतीनेन्त के मुकाबले मे अपने 'कुत्री' की जहालत फली, मिस सोमा कापडिया ने जब पुरानी कारतूसा स नये कुल्चर का निशाना बेधने की काशिश करने पर हस हसकर एतराज किय, तब मिसेज कथरआइडीन की ऊपरी कुल्चर की खुशबू उड गयी। वह अपनी असलियत पर आ गयी।

और मिसेज अहमद को गश आ गया, "अहमद! माई पुअर अहमद! मैं तुम्हारे बिना कसे जी सकूगी।" बेहोशी मे ही वह रह-रहकर बडबडाने लगी, दद से घुटन लगी।

सबको मिस्टर अहमद की मौत पर नये सिर से अफसोस होने लगा।

मिस्टर भडकमकर ने भरी आवाज म कहा 'प्रेमी की मत्यु प्रेमिका के लिए खुद्र अपनी मौत से भी ज्यादा तक्लीफदेह होती है। बेचारी विमला! इन अवर मराठी दे से कि अल्लाची गाय।"

मिसेज कैथरआइडीन मिस्टर भडकमकर की बाह से सटकर खडी हो गयी, फिर उसास डालकर कहा, "ओह! बेचारी मिसेज अहमद का दुख तो देखा नही जाता।"

थके हुए मन को बल देने के लिए, मिस्टर रबडवाला के इसरार करने पर मिसेज अहमद न दो-तीन पसे भी ले लिये कुछ मुह भी जुठला लिया। खाना खाकर दोनो मिसज अहमद की आरामगाह मे आकर बठे गये। ब्वाय मेज पर जरूरी सामान सजाकर रख गया। मिस्टर रबड-वाला ने सिगरेट एश-ट्रे के किनारे पर रखकर बोतल-गिलास सभाले। मिसेज अहमद ने धुआ छोडते हुए कहा "मेरे लिए अब नही।"

क्यो?"

"नही कुछ अच्छा नही मालूम होता। लगता है कि उम्र के दूसरे सिरे पर पहुच गयी हू न उम्मीद न सुख, न दुख मिलना हर अरमान दिल से दूर गया कुछ धडकनें बची है, जिनका किसी से भी कुछ लगाव नही, बस अपना फर्ज अदा करती हैं।"

मिसेज अहमद अपने दर्द मे खो गया। मिस्टर रबडवाला भी कुछ देर तक खामोश रहे, फिर कहा, "अपने जी को इतना न गिराओ विमी! धीरे-धीरे यह दुख भी भूल जाओगी। मन को कहा न कहा से जरूर शाति मिलेगी।

शाति! मिसेज अहमद ने फिल्म देवदास के हीरो की तरह हसकर कहा 'प्रेम की राह पर चलने वालो की जिंदगी मे शाति नही आया करती, रबडवाला! जो खुद ही अपने तन मे आग लगाता है उसे तो मर कर ही शाति मिलती है।

'तुम पागलपन की बातें कर रही हो विमी!" मिस्टर रबडवाला ने अचानक स्वर्गवासी अहमद की तरह ही आवाज मे जोर का झटका देकर कहा 'लो! लो! योर हैल्थ योर प्रास्पेरिटी!'

मिसेज अहमद की आखो मे छेड की अदा चमकी, होठो पर मुस्कान खेल गयी जो दिन-भर के दर्द से अछूती थी।

मिस्टर रबडवाला के सारे शरीर मे बिजली का करेंट दौड गया। यह दूसरा मौका था जब उन्हें अपने ऊपर घमड हुआ। चचा के मरने पर उनके वारिसदार होकर अपनी फर्म के दफ्तर मे प्रोप्राइटर की कुर्सी पर जब वह पहली बार बैठे थे तब मन-ही मन फूले थे और दूसरी बार आज अपनी डेढ वर्षों की तपस्या का फल मिसेज अहमद की इस एक झलक मे पाकर। यह झलक इसलिए और भी अनमोल थी कि उन्हे किसी औरत ने पहली बार इस तरह अपनापन देकर देखा था। सोसायटी के हर सरनाम मिस और मिसेज से लेकर मिसेज अहमद तक ने उन्हें महज ईडियट, महज खिलौना ही माना।

खुशी मे जोश मे आकर मिस्टर रबडवाला ने एक ही सास मे अपना गिलास खत्म कर दिया। दूसरी सिगरेट जलाकर शान से एक कश खीचा, टांग फलाई और हीरोशाही की अदा मे इतमीनान से कहने लगे मैंने

यह देखा है कि विभो, इसान बडे से बडा दुख भी धीरे-धीरे भूल जाता है। जिदगी जहा ठोकरें मारती है, वहा सहारा भी देती है। मैंने अपनी जिदगी से ही यह सबक सीखा है। और मैंने यह भी जाना कि जिस चीज को मैंने चाहा है, उसे पाया भी है। और इसीलिए अपने ऊपर पूरा भरोसा भी है "

मिस्टर रबडवाला की बकवास लबी होती गयी।

मिसेज अहमद अपनी एक अदा दिखाकर फिर खामोश हो गयी। बीच-बीच मे एक-दो घूट पीकर धीरे-धीरे सिगरेट के कश खीच लेती थी। अपने खयालो म रम गयी थी। उन के मन म आज और कल की गहरी कशमकश चल रही थी। अहमद का खयाल बार-बार चुभकर इस बात का अहसास कराता था कि आने वाले कल के लिए उन्हे किसी का सहारा चाहिए। अपनी पनी सूझ के मुताबिक वह इस नतीजे पर पहुच रही थी कि सोसायटी के अदर आजाद होकर घूमने के लिए मिसेज' का टाइटिल जरूरी है। और वह यह चाहती थी कि उनका मिसेजपन कही नये सिरे से इश्योड हो जाये जिससे कि मातम का साल पूरा होते न होते वह आगे के लिए बेफिक्र हो जायें। इस बार वह किसी ठोस पैसे वाले को अपना प्रेम देंगी। महज प्रेम करने के लिए ही प्रेम नही करेंगी। और भूले से भी वर्मा जैसे पति के पल्ले नही बधेंगी। वर्मा तदुरुस्त खयाला के, सीधे-साद, भले आदमी हैं, प्रोफेसर हैं। हर बात उनके लिए मानी रखती है और हर मानी पर वह ध्यान देते है। हसना, बोलना, मजाक करना सर-सपाटा खेल-कूद उन्हें सब कुछ खूब पसद है, मगर अपनी या किसी की भी जिदगी को गेंद की तरह उछालना उन्हें कतई पसद नही। तमाम हसी-तमाशे के बावजूद जीवन उनके लिए एक गभीर चीज है।— मिसेज अहमद इस गभीरता का मान भी करती है, और साथ ही साथ वह उससे चिढती भी हैं नफरत करती हैं। जिदगी जब उनके सामने कोरा खयाल बनकर आती है तो बडी पवित्र, गभीर और सुहावनी होती है, मगर असलियत म वह उनके लिए एक खेल है, दबने और दबाने के दाव-पेचो का अखाडा है।

बचपन से उन्होंने यही जाना है। विधवा मा अच्छे खानदान की

मगर मुसीबत की मारी, एक बड़े बरिस्टर के बगल पर रसोईदारिन का काम करती थी। बरिस्टर साहब बड़े शरीफ थ। अपनी रसोईदारिन स गुनाह का रिश्ता भी उन्होने बड़ी शराफत और इज्जत क दामन को सभालकर बाधा था। विमला का भी उ होंने अपनी लड़की की तरह ही पढाया लिखाया पहनाया उढ़ाया। उनक एक लडक और भतीज न अपन यहा पलन वाली रसोईदारिन की खूबसूरत और नौजवान लड़की से अपन खानदान क अहसाना की मनमानी कीमत वसूल की। इसी दबाव के रिएक्शन म उन्हें शादी की पवित्रता का अहसास हुआ था और शादी की पवित्रता के रिएक्शन' म फ्री लव' का।

जिंदगी अब एक नये सिरे म शुरू हा रही है। इसम उन्हें शादी की जरूरत है फ्री लव की जरूरत है पसा, हुकूमत और आराम की जरूरत है। अपनी तमाम जरूरता को साफ-साफ समझकर वह अब एक एसा पति चाहती हैं जो कि एक आड भी बन जाय और कभी उनकी मर्जी के आडे भी न आय। उनका खयाल है कि रबडवाला ऐसा पति हो सकता है। मगर वह जल्दबाजी नही करना चाहती। अभी ता उनक पास अहमद के मातम का पूरा एक साल पडा है। तब तक वह परख लेंगी। मगर तब तक के लिए पसा और आराम की कमी न आय इसीलिए फिलहाल चारा डालती चलेंगी। रबडवाला बुद्धू है मगर घमंडी है इस लिए उस दुरकार-दुरकारकर अपने पास बुलायेंगी।

इन गहरी स्कीमा म डूबते-उतारत हुए भी मिसेज अहमद को यह खयाल बना रहा कि अहमद के लिए उनके दिल म कही टीस भी बराबर ही उठ रही है। प्यारा आदमी था उन्हें प्यार भी करता था। वो भी प्यार करती थी। उस प्यार म एक तेजी थी सच्चाई भी थी जो अब बिखर रही है। यह भी मिसेज अहमद को अच्छा नही लगता। पूरी जिद के साथ वह उस सच्चाई को बटोरना चाहती हैं, अपने प्यार की तडप को लेकर घुटना चाहती है उसम रमना चाहती है।' माई पुअर अहमद ! माई पुअर अहमद !

घुटन की सख्त कशिश म उनकी बडबडाहट निकली। मिस्टर रबड वाला की जीत के नशे म सहसा यह उतार आया। बदहवास होकर वह

मिसेज अहमद की ओर देखने लगे। उनकी गरदन एक ओर ढली हुई थी। बद आखो से गगा-जमना बह रही थी। बाया हाथ सिगरेट को थाम सोफे के नीचे लटक रहा था, और दाहिने हाथ से वह अपने घुटने पर टिके हुए गिलास को पकडे धीरे-धीरे बडबडा रही थी।

नशे की झोक मे उठकर रवडवाला उनके पास आये। उनके दोनो गालो को अपने हाथो म दाबकर उनका सिर सीधा कर उन्होंने कहा, "विमी ! विमी ! काम योर सेल्फ ! मुझसे अब तुम्हारा दुख बर्दाश्त नही होता। मैं "

'गेट आउट ! चले जाओ यहा से, मुझे अकेली छोड दो मुझे मेरे अहमद के खयाल मे खो जाने दो—मर जाने दो।"

मिसेज अहमद ने इतने जोर से डाटा कि मिस्टर रवडवाला का सारा नशा हिरन हो गया। वह सहम गय। लगा कि तीर बहुत दूर निकल गया। वह घबडाकर जल्दी से पीछे हटने लगे। पैर लडखडाकर मेज से अटका। वह भी उलटे, मेज भी उलटी ! बेचारे के मुह से एक हल्की-सी चीख निकल ही गयी।

मिसेज अहमद को भी अहसास हुआ कि उनका तीर बहुत दूर नकल गया। फौरन ही खयाल से असलियत मे आयी। लपककर रवडवाला के पास आयी। उनके ऊपर झुककर, उनके चेहरे और सिर पर हाथ फेरते हुए बडे प्यार से पूछा, 'बहुत चोट आयी ! कहा लगी ?"

मिस्टर रवडवाला ने धीरे धीरे बैठते हुए कहा, कही नही। मुझे—मुझे माफ कर दो विमी ! मैं मैं जाता हू।

उठने से पहल ही मिसेज अहमद न उन्हें अपनी बाहो मे जकड लिया। कहने लगी, 'नही, मैं अब तुम्हें न जाने दूगी। मैंने तुम्हें बडी चोट पहुचाई है। मगर मेरे दिल की गहराइयो को समझो रवड-वाला। दिलवर की याद म ऐसी खोयी कि मैं भूल गयी कि किससे क्या कह रही हू। अहमद तो गये। मेरा बस न चला। मगर क्या उनके ही जैसे हमदद को भी यो ही चला जाने दूगी ? अब तो तुम्ही मेरे अहमद हो ! माई पुअर अहमद ! माई पुअर अहमद

कहते हुए उन्होंने मिस्टर रबड़वाला के ओठों पर अपने प्यार की छाप लगा दी—वैसे ही अचानक जैसे कि मिस्टर अहमद ने चलते वक्त उनके ओठों पर अपने प्यार की छाप छोड़ी थी।

नही दिखाई पड़ता था लेकिन आज पूरे फर्श पर जूट की कार्पेट बिछा हुई नजर आयी मोढ़े-कुर्सियों की जगह शीशम का शानदार सेट, सेंटर टेबुल दो छोटी तिपाइयां उन पर प्लास्टिक के कवर और फूलों के गुलदस्ते लगे दोनों खिड़कियों और सड़क पड़ते दरवाजे पर भी पर्दे नजर आये चारों दीवारों पर चार तस्वीरें थी एक श्रीराम पंचायतन की, दूसरी दिलीपकुमार और वजयंतीमाला की तीसरी हनुमान जी की और चौथी पंडित जवाहरलाल की।

उन्हें आज बड़ा आश्चर्य हो रहा था। ऊपरी आमदनी रूपी हींग से छोंकी हुई उनके जीवन क्रम की मसालेदार दाल में जिस नमक की चुटकी की कसर थी सो आज पूरी हो गयी। वे हीनकुल के दरिद्र ब्राह्मण के बेटे हैं। भीख-वजीफे ट्यूशनों से एम०ए० गोल्ड मेडलिस्ट होकर सप्लाई-विभाग में दस वर्षों से उन्नति करते हुए इस हैसियत पर पहुंचे हैं। कन्हैया बाबू दिल से अपने पिता आदि नातेदारों और सारे गांववालों को तुच्छ समझने के मूड में रहते हैं पर वे अब तक उन सबसे केवल इसीलिए दबने को मजबूर हैं कि उन लोगों के घर में घुसते ही सीला घूंघट काढ़कर उनके परों में पड़ जाती है। कई बार इसी पर पति-पत्नी में बजी है। आठ बरसों में जब से वह शहर आयी है न जाने कितनी बार कन्हैया बाबू का यह कहते-कहते मुंह सूखा है कि सीला जरा माडर्न बनो। मैं तुम्हें एजूकेशन दिलाऊंगा। अरे मुझसे छोटे अफसरों में भी कइयों के घर मुन्ने अच्छे सजे हैं। लेकिन तब सीला को अपने को न सुधारना था और न सुधारा। हां इधर दो तीन महीनों से उसमें कुछ परिवर्तन आने लगा था। अपने और बच्चों के चेहरे-कपड़ों की सफाई पर थोड़ा-बहुत ध्यान देने लगी थी, फिर भी आज का परिवर्तन इतना क्रांतिकारी था कि कन्हैया बाबू एकाएक अपनी आंखों पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि सीला माडर्न बन गयी। वे अपनी सीला को देखने के लिए बेताब थे। अपना नेशनल कोट उतारकर उन्होंने खूंटी पर टांगा और बड़े ठाठ से सोफा पर बैठ गये। सुहागरात और उसके कुछ दिनों बाद तक तो कन्हैया बाबू ने अवश्य अपनी शीला का इंतजार किया था पर उसके बाद उनके दिल का पेंडुलम इस तरह कभी न हिला था। खैर, दरवाजे का

नया पर्दा हिला, कमरे के मद्धिम उजाले में आसमानी रंग की नये ढंग की सुफ़ियानी साड़ी पहन, जूड़े में प्लास्टिक के फूलों की वेणी लगाये, चमचम मुखवाली कन्हैया बाबू की अर्द्धांगिनी विजयोल्लास पर लाल-रंगी मुस्कराहट लिये आँखों में बना हुआ का मस्ताना अंदाज लिये हाथों में चाय की ट्रे लिये हुए आयीं। "हाय!" कन्हैया बाबू ने तुरंत सोफ़ा पर हाथ रखकर 'टच-वुड' का नाटक कर लिया ताकि उनकी सीलों को उनकी नजर न लग जाये। पान लेने पर दोनों ने एक-दूसरे को प्यार भरी नजरों से इस तरह देखा जैसे सिनेमा के परदे पर हीरो-हीराइन देखते हैं। टेबुल पर चाय की ट्रे रखते ही कन्हैया बाबू ने शीला के दोनों हाथ थामकर पूछा, "ये क्या माजरा है? कहीं से लाटरी निकल आयी है?"

"गाना बनावटी रात-भर ख्वाब ख्वार में वालो, छोड़ो अब ही इन्हें फ़ुरसत नहीं है। अलकापुरी से मिसिज महरा और मिसिज गुप्ता आयी हैं। ऊपर बैठी हैं।'

"ये मिसिज महरा और मिसिज गुप्ता कौन हैं?' कन्हैया बाबू ने पूछा।

"अरे, अपने पड़ोस के बजू बाबू, जो अब अलकापुरी में कोठी बना रहे हैं, उनकी मिसिज। और मिसिज महरा उनकी नयी पड़ोसिन हैंगी। पिछले मंगल को हम वहीं गयी रहीं न—तो मिसिज बजू ने हम और मिसिज महरा को चाय पिलायी सो हमने भी उन लोगों को बुला लिया। अच्छा, अब हम जाते हैं।'

शीला चली गयी। आज तो बस दिल को धड़ाम-धड़ाम से हो कोई ग्रह-नक्षत्र कन्हैया बाबू की जन्मकुंडली में उदय हु पर नजर डाली, एक तश्तरी में मद्रासी 'डोसा' दिखायी में शाही टोस्ट, तीसरी में बिस्कुट और चौथी में केले ट्रे फिर नयी सेंटर टेबुल पर उसे रखकर नये साफ़ा पान में जो नया आनंद उन्हें प्राप्त हुआ, उसका क्या ऐसा लगता था कि मानो कन्हैया बाबू अपने घर के घर में चाय पी रहे हों। ख़ैर, औरतों के

उत्साह के साथ अपने पति को ऊपर वाले कमरे की नयी सजावट भी दिखलायी जहां कुछ नया फर्नीचर आ गया था। कन्हैया बाबू ने नीला से पूछा, "ये एकाएक इतना फर्नीचर खरीदने की क्या जरूरत आ पड़ी? मेरे ख्याल से चार-पांच सौ रुपया तुमने बिगाड़ दिया।"

नीला तुनककर बोली 'हाऽ चार-पांच सौ नहीं, चार-पांच हजार बिगाड़ दिया। तुम हमको समझते का हो?' नब्बे रुपये में सोफा लाय। जस्मी का पलंग हैगा। चौबीस रुपये में ई मर्जे तिपाइयां लीं और बाईस रुपये में ई सब गद्दी-पर्दे औ अठारा रुपये का सिट नाय। मंगल के दिन अलकापुरी में नौटंकी बिरिया फरनीचर का आडर दिया। पर्दे-गद्दी सियन खातिर कपडा लेके दर्जी के हियां हम दे आयी। आज तुम्हारे दफ्तर जाने के बाद हम दौड़ के फरनीचर लायी सब सजाया—ऐसी कसी सोभा आ गयी हमारे घर में। अलकापुरी के घरन जसी।

पर मैं पूछता हूं कि इस सोभा की फिलहाल आवश्यकता क्या थी महारानी?

वाह, थी कसे नहीं? मिसिज मेहरा हमारी नयी-नयी फरेंद भई हैं मिसिज गुप्ता के यहां हम दुइ-दुइ बार चाय पी आये। जो न बुलौते तो यही कहती कि इत्ते बड़े मारकेटिंग अफसर की घरवाली हाय के कजूसी दिखाय गयी। हम कोई का कहन लायक मौका काहे का देईं?'

शीला के मुख पर रूप की पालिश चढ़ आयी। कन्हैया बाबू ने पूछा, 'और ये मदरासी डोसे बाम बनाना कहां से सीखा?'

अरे अबही का है जरा अलकापुरी में कोठी बन जाय दआ हमारी, तब हुआ रोज नयी-नयी चीजें बनायके तुम्हें खिलावेंगे। अरे अलकापुरी में बहुत मजे हैं भाइ।

कन्हैया बाबू ने तुनककर कहा, मेरे बस का नहीं है घर बनवाना। प्राविडेंट फंड की रकम हाथ लगने में अभी बरसों की देरी है और ऊपर की कमाई निकालूंगा तो सरकार मुकदमा चला देगी।'

चलो चलो, हमें पट्टी न पढ़ाव। वजू की मिसिज बतावत रहा कि जमीन खरीद लेव तो कोपरेटी से लोन मिल जात हैगा। पचीस-तीस बरस में अदा हुइ जात हैगा। अरे किराया न दिया, कोपरेटी को पसा

उत्साह के साथ अपने पति को ऊपर वाले कमरे की नयी सजावट भी दिखलायी जहां कुछ नया फर्नीचर आ गया था। कन्हैया बाबू ने शीला से पूछा ये एकाएक इतना फर्नीचर खरीदने की क्या जरूरत आ पड़ी ? मेरे ख्याल से चार पांच सौ रुपया तुमने बिगाड़ दिया।'

शीला तुनककर बोली, हाऽऽ चार-पांच सौ नहीं, चार-पांच हजार बिगाड़ दिया। तुम हमका समझत का हो ? नब्बे रुपये में सोफा लाये। अस्सी का पलंग हैगा। चौबीस रुपये में ई मेजें तिपाइयां लाए और बाईस रुपये में ई सब गद्दी-पर्दे औ' अठारा रुपये का सिट लाये। मंगल के दिन अलकापुरी से लौटती बिरिया फरनीचर का आडर दिया, पर्दे-गद्दी सियन खातिर कपड़ा लैके दर्जी के हियां हम दै आयीं। आज तुम्हारे दफ्तर जाने के बाद हम दौड़ के फरनीचर लायी सब सजाया—देखो, कैसी सोभा आ गयी हमारे घर में। अलकापुरी के घरन जैसी।

पर मैं पूछता हूं कि इस सोभा की फिलहाल आवश्यकता क्या थी महारानी ?

वाह थी कैसे नहीं ? मिसिज महरा हमारी नयी-नयी फरेंड भई हैं, मिसिज गुप्ता के यहां हम दुइ-दुइ बार चाय पी आये। जो न बुलौते तो यही कहती कि इत्ते बड़े मारकटिंग अफसर की घरवाली हाय कैसी कंजूसी दिखाय गयी। हम कोई का कहन लायक मौका काहे का देईं ?"

शीला के मुख पर दर्प की पालिश चढ़ आयी। कन्हैया बाबू ने पूछा, 'और ये मदरासी डोसे वोसे बनाना कहां से सीखा ?

' अरे, अबही का है जरा अलकापुरी में कोठी बन जाय देखो हमारी, तब हुआ रोज नयी-नयी चीजें बनायके तुम्हें खिलावेंगे। अरे अलकापुरी में बहुत मजे है भाइ।

कन्हैया बाबू ने तुनककर कहा ' मेरे बस का नहीं है घर बनवाना। प्राविडेंट फंड की रकम हाथ लगने में अभी बरसों की देरी है और ऊपर की कमाई निकालूंगा तो सरकार मुकदमा चला देगी।'

चलो चला हमैं पट्टी न पढाव। बजू की मिसिज बतावत रहीं कि जमीन खरीद लेव तो कोपरेटी से लोन मिल जात हैगा। पचीस-तीस बरस में अदा हुइ जात हैगा। अरे किराया न दिया कोपरेटी को थमा

दिया, पर घर तो अपना हुइ गया।"

बहरहाल शाही टोस्ट खिलाकर मडम शीला ने अपना शाही प्रस्ताव इस जोर से पेश किया कि कन्हैया बाबू ना न कर सके। एक साल के अदर वे लोग भी अलकापुरीवासी हो गये। गवई-गाव के कन्हैयालाल बरसो शहर की सडी-बुसी गलियो के सस्ते किराये वाले मकानो मे रह चुकने के बाद पोखरमल जसे स्वार्थी मकान-मालिको के चगुल से मुक्त होकर अब अलकापुरी के बी' टाइप की कोठी शिला विला के लान की हरी-हरी घास पर 'तरावटें' लिया करते है।

अलकापुरी मे कुछ 'सी' टाइप के मकान है कुछ बी टाइप और कुछ ए' किस्म की कोठिया है। 'ए' टाइप की कोठियो म कारे हैं, अल्सेशियन कुत्ते है, बडे-बडे लान, विलायती फूलो के गमले और क्यारिया, कूलर और रेफ्रिजिरेटर हैं, कीमती फर्नीचर, पर्दे पोशाक, बैरा-बावर्ची हैं और इन सबके ऊपर अग्रेजी बोली है। 'बी टाइप के बहुत-से मकानो मे भी कमोबेश यही सब मजे हैं जिनकी देखादखी 'सी' टाइप की कोठियो पर भी असर पडता है। 'सी सेक्टर मे विलायती न सही मगर देसी कुत्ता की कमी नही, करीब करीब हर घर मे उन्हें क्रिश्चियन नाम दकर विलायतीनुमा बना लिया गया है। ड्राइगरूम भी अपने भरसक सजा ही लिय गये है। कन्हैया बाबू के पडोस म वसन वाले डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर के बडे बाबू धौकलसिह की घरवाली ने यहा आकर भी जब अपना पुराना मुहल्लेशाही ढर्रा ही चलाया तो मडम शीला और उसकी फरेंदें मजाक उडाने लगी।

एक दिन शीला अपने पति से कहने लगी, "मिसज धौकलसिह के यहा तो मक्खिया भिनकती है मक्खिया। उनके बैठके मे कभी गये हाग? डिराइन रूम नौ कह हो नही मक्त उसको। बैठके म पलग विछाइन है दुइ कुरीसया, दुइ मूढे रक्से हैगे और चाय पियन खातिर लोहे की टूटी कुरसी हैगी।'

कन्हैया बाबू ने कहा, 'शीला तुम अब बहुत वढ-चढकर बोलने लगी हो। वो दिन भूल गयी, जव देहाती बुच्च बनी गाव से मेरे पास आयी थी?'

मैडम सीतो उस समय अपनी किसी फ्रेंड के यहां जाने की तैयारी में होठों पर लिपस्टिक रगड़ रही थी, ताव सा गया था, जब आयी थी तब आयी थी, पर अब तो हम राई से नहीं रह सकते हैं कि हमारे घर में डस्ट जमा पड़ा रहता होगा। सब जनी यही कहती होंगी कि मिसिज मिगरा का घर साफ-सुथरा और ढंग से रहता है। क्या बनायें एक सोफासेट इस्प्रिंग गद्देदार वाला और सजा लें तो हमारा ड्राइंग रूम भी मिसिज ढोल के जैसा खूबसूरत हो जाय। मिसिज चन्ना कहती रही कि मिसिज ढोल को अपने सोफासेट का बहुत बड़ा गरूर है। उनके ठाठ साहब सुपरडेंट हो भाई! तो इस पर हमने कहा कि हमारे साहब भी मार्केटिंग अफसर हैं।

कन्हैया बाबू अपनी पत्नी का मुंह ताकने लगे और फिर धीरे से बोले, "यह तो ठीक है मगर इतना रुपया कहां से लाऊंगा मैडम?"

'चावल वाले सेठ से जो रुपये तुम लाये थे वे मेरे पास धरे हैं।' यह सुनकर कन्हैया बाबू सोचने लगे कि अब मैं रिश्वत की रकम सीतो के पास जमा न कराऊंगा। खैर शाम तक में एक बढ़िया सोफासेट आ गया, गलीचा भी बिछ गया और दो-चार खिलौने, गुलदस्ते भी सज गये। इनकी मंडली भर में इनका ही घर ऐसा था जिसमें पहले-पहल ऐसा सोफासेट आया।

बृहस्पतिवार के दिन सीता ने सवेरे ही से और को आदेशों की धूम बांध दी। अपने घर के प्यालों की गिनती करने के बाद अपने छोटे लड़के से कहा, "अरे पप्पू, जा बेटा मिसिज सामलाल के यहां से चार कप तो मांग ला। कहना कि आज हमारे यहां टिपार्टी है। ओ बिम्मी, तू जरा दौड़ के मिसिज मधोक के घर से बिजलीवाली केतली ले आ। कहना, आज हमारे यहां टिपार्टी है तो तीन बजे जरूर-जरूर आवें और कहना कि मम्मी ने केतली मंगाई है।

बिम्मी बोला, "मैं नहीं जाऊंगा। उनके यहां से पिछली बार केतली आयी थी तो एक दिन कहने लगीं कि उनका तार खिंच गया और हमारे साढ़े चार रुपये बनवाई में लग गये।

"अरे तो मेरे हाथ से थोड़े ही टूटी थी। वो तो मिसिज भगवानदास

के घर म टूटी थी। कहना, दें तो दें, नहा तो हम अवहीं के अबही बजार से खरीद लावेंगी, हम किसी की मिजाज नहीं बर्दास करेंगी।'

"हा, तो ले आइए। मैं नइ जाऊगा उनके यहा।' कहकर विम्मी अपनी देसी कुतिया लेका' के गल म पुरानी धोती की किनारी बाधकर उस वाहर खींच ल चला। मडम सीलो का पारा चढ गया। इस वकझक से कन्हैया बाबू वोर हो गय, चिडचिडाकर बोले, 'ये क्या हर हफ्त चाय का तूफान मचा रखा है जी तुमने! सर्चे पर खर्चे बढाती ही चली जाती हो"

"तो मैं कौन-सी बिना जरूरत की चीज लायी जरा बताओ तो सही?" शीला लडाई के जाम म एक डग आग बढ आयी। कन्हैया बाव भी इस समय भरे बठे थ, बोले, 'आप बिजली की केतली लायेंगी, इसकी कौन-सी जरूरत है? चूल्हे पर नहीं बन सकती चाय? लेकिन आपको तो सान जताना है। य सोफासेट और गलीचा मुझे तुम्हारी जिद पर खरीदना पडा, वरना मेरी तबीयत नहीं थी कि इन सब म पासौ रुप बिगाडे जायें।"

"जब हम ई सब नहीं करत रह तब तुम हम फूहड़ कहत रहे और अब" मडम सीलो न मान म आसू ढलकाये। कन्हैया बाबू भी नम पडे, बोले, "ठीक है, घर को मॉडन बनाकर अवश्य रखना चाहिए मगर खर्चे और साबाजी की भी एक लिमिट होती है। ससुरा तीस चालीस रुपये का खच तुम्हारी टी-पार्टियो का ही बढ गया है हर महीने।'

"हा-हा, अकेली मरी फरेंदा की ही पाटिया होती है, तुम्हारे फरेंदो की तो जाने होती ही नहीं।'

"मेरे फरेंद नहीं फ्रेंडस हैं, फ्रेंडज," कन्हैया बाबू की चखचख चल ही रही थी कि पप्पू न आकर खबर दा, मम्मी! श्यामलाल अंकिल की आंटी कहती है कि कप नहीं देंगी। कहती है कि अंकिल गुस्से होत है मिसिज ढोल के यहा कप गये थे तो दो टूट गये।"

कन्हैया बाबू ने ताना दिया, 'जाओ, बिजली की केतली के साथ-साथ सौ-पचास कप भी खरीद लाओ अपनी सान जताने के लिए।'

शीला ने ताने का उत्तर न दकर कहा, "ठरो मैं जाके लाती हू

उनके यहा से। मरी बडी परेंद है।" और थोडी ही देर म वह खुशी-खुशी प्याले लेकर लौट आया। चेहरे पर ऐसी चमक थी, लगता था मानो किसी प्रतियोगिता से कप जीतकर लौटी हो। कन्हैया बाबू तब तक अपनी हजामत बनाने बठ चुके थे। उनके सामने कप खनखनाकर रखते हुए इठलाकर बाली, "लीजिए हजूर आपका आडर मान लिया। बिना खर्चे के काम बनाय लिया। अब तो खुस हुइ जाइए।" कन्हैया बाबू प्यार से देखकर मुस्करा दिये। शीला बोली 'अच्छा य बताओ कि नास्ते म क्या बनाय लें। मिसिज भगवानदास की टिपाटी म माही टोस थ, ढोल के हिया रसगुल्ले थ मिसिज मधोत्र ने मलाई चाप और कुल्फी दुइ दुइ चीजे खिलाइ। अब हमरे यहा बारी है बोला क्या खिलावें?

कन्हैया बाबू ने गाल पर ब्रेड दौडात दौडाते रुककर कहा 'तुम्हारी फ्रेंडो के नास्ते की बाबत मैं कुछ न कहूगा।'

"क्यो?

क्या क्या! तुम तो सान जताओगी। उसने दो मिठाइया खिलाइ तो तुम चार खिलाओगी। मै इस दीवाला पीटू स्कीम म अपना कोई सजेसन नही दे सकता।

पति की बातो पर ध्यान न दकर बडी उमग से पास खिसककर उनके हजामत बनाते हाथ को पकडकर बड प्यार से कहा मेरी एक बात मानोगे?'

'क्या?'

तुम हसी उडाओगे। बहुत दिनन स हमारे मन मे थी कि तुमसे कहें। हसी तो नहा उडाओगे?

'अरे पहले बात तो बतलाओ।' कन्हैया बाबू ने कहकर फिर रेजर सभाला। शीला के चेहरे पर लाज का गुलाबीपन निखर आया मन के सकोच का तोडने का प्रयत्न करके बोला 'मिस्टर चटर्जी और मिस्टर सामलाल दोना जने अपनी-अपनी मिसिजो को डोल कहते है, तुम भी हम ऐसे ही पुकारा करो।'

डोल? ये डोल क्या बला है?'

अला-बला क्या करते हो? अब तो सभी अपनी-अपनी मिसिजो को

डोल या डोली कहते हैं। पीछे वाली सडक की तो सभी कोठियो म मिसिजो को उनके साहब लोग डोली पुकारते हैं।" मैडम सीलो भावविभोर हो गयी। मिस्टर मिसरा अपनी पत्नी की बात अब तक न समझ पाये थे पर एक मजाक अवश्य सूझ गया। तौलिय से मुह पोछकर बोले, "सुनो, एक फसन से ही काम नही चलता, दो-चार फसन होने चाहिए।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यही कि डाल-डोली तो कहा ही जाता है अब अपनी मिसेज को बाल्टी कहें या पालकी पुकारें तो नया फैसन चल। तुम्हें क्या कहू ?" कन्हैया बाबू ने हसते मुख से बात कही पर मडम सीलो का पारा ब्रह्माड मे चढ गया। ऐस झटके से गरदन घुमाई कि जान पडा कि अब कभी इस ओर रुख भी न करेंगी।

कन्हया बाबू के मन से बात आयी-गयी हो गयी, लेकिन जब पार्टी के बाद रात को, यहा तक कि दूसरे दिन सवेरे भी मैडम का मुह सीधा न हुआ तो उन्होंने उसका जी खुश करने की नीयत से आवाज लगायी, "अरे डोल आज अभी तक चाय नही बनी भाई!" डोल ने कोई उत्तर न दिया। कन्हैया बाबू ने जब दो चार बार डोल-डोल पुकारा तो पप्पू हस पडा, बोला, "मम्मी डोल हो गयी मम्मी डोल-डोल।' बस घर मे महनामथ मच गया। पप्पू को मार पडी, कन्हैया बाबू इस पर बिगडे, फिर मडम शीला तडपते वाक्य जबान से तोड-तोडकर रोयी फिर उनके सिर म दद हो गया, न चाय बनी न खाना। कन्हैया बाबू भी समझौते के मूड मे न आ सके, नहा-धोकर तयार हुए मोटरसाइकिल उठाई और जल्दी ही दफ्तर चल दिये।

चार-पाच रोज तनाव रहा। वो सामने पड जायें तो ये कतरा जायें और इनके आने का वक्त हो तो वो टल जायें। कन्हैया बाबू ने घर मे चाय तक पीना छोड दिया। रात म देर से घर आने लगे। अत मे शीला झुकी, रोना-गाना हुआ मनावन रिझावन हुआ शाम को मियाबीवी मोटरसाइकिल पर बाजार गये। वहां घूमते हुए कन्हैया बाब का आमना-सामना एक चश्माधारिणी रोबीली मगर काली-कलूटी महिला से हो गया। दखते ही दोनो मुस्कराये। कन्हैया बाबू ने लटककर कहा,

"अरे डॉली ! तुम यहां कहां ?"

मैं तो यहां चार महीने से आ गयी हूं। लडकियों के स्कूल की इस्पेक्ट्रेस हूं। तुम क्या करते हो हिया ?" डाली ने पूछा।

'मैं मार्केटिंग आफिसर हूं। ये मेरी वाइफ हैं सील' और ये डॉली। मेरे साथ यूनिवर्सिटी में पढ़ती थी। कभी मैं फस्ट आता था, कभी ये। मैं बड़ा खुश हुआ। डॉली, परसों सडे है, तुम हमारे यहां लच पर आओ, बातें होगी।" कन्हैया बाबू के निमन्त्रण को डाली ने सहर्ष स्वीकार किया, उनका पता नोट किया और विदा हुई। तब तक शीला को काठ मार चुका था। कन्हैया बाबू ने इस पर ध्यान न दिया और अपने उत्साह में डाली के सबध में बतलाते रहे। शीला गुमसुम, पत्थर। घर पहुंचते ही शीला सीधी सुटटमार अपनी कमरे में घुस गयी और दरवाजे की सिटकनी भीतर से चढ़ाकर बिना साडी बदले ही पलग पर लेट गया। दोनो जने अपने और बच्चों के लिए मिठाई-नमकीन लाये थे। कन्हैया बाबू ने शीला को खाने के लिए पुकारा। शीला न आयी। दो-तीन बार पुकारा फिर कन्हैया बाबू उठकर गये। बडी मुश्किल से दरवाजा खुला। "क्यो सीलो, क्या बात है ?" पूछते-पूछते बडी मुश्किल से फूल मुख से जवाब फूटा 'मुझसे क्या पूछते हो, जो तुम्हारी डोली है उसी से जाके पूछो।"

मिस्टर कन्हैयालाल मिसरा एम० ए० गोल्डमेडिलिस्ट को अब जाकर अपनी पत्नी की डोल-डोली वाली फरमाइश का मतलब समझ मे आया, लेकिन तब आया जब कि वह शब्द परिस्थितिवश नासूर बनने की धमकी देने लगा था। पूरे दो घटो के अथक परिश्रम के बाद वे अपनी सीला को समझा पाये कि डाली मुखर्जी तो उस औरत का नाम है। कहा "तुमको तो स्कूल इस्पक्ट्रेस की भावज बनने से एडवाटेज रहेगा सीलो। परसो उससे दोस्ती कर लो फिर एक दिन टी-पार्टी करके उसका लेक्चर कराना, फिर क्लब खोल देना। डाली के सहारे तुम लीडर बन सकती हो लीडर।

मडम मीलो की समझ में यह बात आ गयी, लेकिन खटटी को मिट्ठी मे बदलने की घात रखते हुए उन्होने कहा, 'अच्छा तुम खुसी से

उसे डोली कहो, मगर हमे भी डोल कह के पुकारा करो।"

इस प्रकार मडम सीलो अपने पास-पडोस मे तीसरी 'डोल' बनी। लेकिन यह सतोष भी अधिक दिन न टिक सका, क्योंकि उनके पडोस वाली कोठियो म मिसेज ढोल के यहा पहला रेफ्रिजिरेटर आ गया था। सुनकर कन्हैया बाबू की डोल को रात-भर नीद न आयी।

क्लार्क ऋषि का शाप

(इस बार बबई म रहते हुए मेरा समय इतिहास ग्रथो की कृपा से मोहनजोदडो के युग म बीता। स्वप्न और वास्तविकता के सगमलोक म सब कुछ देखते-सुनते हुए एक दिन मेरी भेंट भविष्ययुगीन सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता डाक्टर ससारकर स हो गयी। डाक्टर ससारकर आने वाले समय के ख्यातिसिद्ध विद्वान हैं। बहस्पति लोक की युनिवर्सिटी से उन्हें नवीन सभ्यता के विकास सबधी थीसिस पर डाक्टरेट की उपाधि मिली है। वे चतुरगिणी प्रतिभा के धनी हैं। चद्रलोक के कायरस की युनिवर्सिटी ने उन्हें आनरेरी डाक्टरेट प्रदान कर अपना गौरव बढाया है। आप शुक्रलोक के विलास विश्वविद्यालय के फूलो और मगललोक की ऐथलेटिक असेंबली के सदस्य भी है। आशा है डाक्टर साहब की प्रस्तुत रचना से पाठको का मनोरजन होगा।)

आज से दस साल पहले सन १९५१ के अगस्त महीने की बात है। कल्याण नगर के पास पडे हुए वीरान ऊसर द्वीप म इतिहास और पुरातत्त्व के विद्वानो की एक टोली को लगभग चार हजार वर्ष पुरानी सभ्यता के चिह्न मिले। अखबारो म बडी धूम से इसकी चर्चा होने लगी।

इधर कुछ दिनो तक कल्याण म युनिवर्सिटी हिस्ट्री' काग्रेस का अधिवेशन बडे समारोह और सफलता के साथ होता था। डाक्टर नेपच्यून ने पृथ्वी और मगल लोको के बीच होने वाले पहले महायुद्ध की तारीख निश्चित करते हुए अकाटय तर्क और प्रमाण प्रस्तुत किये और अब करीब-करीब सदसम्मति से यह मान लिया गया है कि पृथ्वी और मगल का पहला महायुद्ध ईसा की बाइसवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध काल म किसी समय हुआ था। इस प्रकार उक्त हिस्ट्री काग्रेस म अनेक विद्वानो ने महत्त्व

के विषयो पर गभीर चर्चा की। अधिवेशन के समाप्त हो जाने पर कुछ विद्वानो ने पिकनिक मनाने के लिए उस रेतीले ऊसर द्वीप को चुना जो लगभग दो हजार वष पहले समुद्र के गर्भ से निकला था और जो इस समय ऊजड और निकम्मे तौर पर कल्याण की भव्य बस्ती के पास सुदर शरीर पर कोढ के एक सफेद दाग की तरह पडा है।

इस द्वीप के बारे म जनश्रुति यह थी कि वहा कोई आबाद नही हो सकता। धार्मिक लोग पुराण मत से बतलाते है कि सनातन काल मे क्लाक ऋषि के शाप स यह द्वीप रसातल मे लीन हो गया था। चूकि इस शापभ्रष्ट द्वीप की मनहूसियत से शेषनाग का रसभग होता था इसलिए उन्होने अति घणा करक इसे फिर मर्त्यलोक मे फेंक दिया। तब से यह द्वीप पुन पथ्वी का भाग तो अवश्य बन गया मगर आबाद न हो पाया। कहा जाता है कि क्लाक ऋषि के शाप के कारण इस रेतीले द्वीप मे मनुष्य पशु, पक्षी आदि जो भी जीव जाकर बसते हैं वे अपना ठोस रूप खोकर शुष्क और रेतीले हो जाते हैं। इन किंवदतियो के कारण जनसाधारण म से कोई भी कभी भी इस रेतीले द्वीप की ओर मुह उठाकर देखने का साहस भी नही करता था। इसलिए जब इतिहास और पुरातत्त्व के विद्वानो ने उस अभिशप्त द्वीप मे पिकनिक मनाने का निश्चय किया तो अखबार और उनके पाठको की दुनिया मे बडे कौतूहल के साथ इस विषय की चर्चा होन लगी। विद्वानो के सनकी और झक्की होने की सिफत को लेकर कुछ मजाक भी चला।

मगर जब उस ऊसर धरती से लगभग पाच वष पुरानी सभ्यता के अवशेष प्रकट होन की खबरें प्रकाश म आयी तो ब्रह्माड का—विशेष रूप से सारी पथ्वी का— ध्यान उस ओर आकृष्ट हुआ। ऊसर द्वीप का माहात्म्य एकाएक बढ गया।

पुरातत्त्व विभाग की ओर स ऊसर द्वीप म खुदाई का काम लगभग सात वर्षों तक चलता रहा था और इस समय तक उस द्वीप म पुरानी सभ्यता के लगभग सभी ध्वसावशेष अपना रहस्य प्रकट कर चुके हैं।

प्राचीन इतिहास की उपलब्ध सामग्री के साथ इन ध्वसावशेषो का मिलान करने से हम इस निर्णय पर पहुचे हैं कि नयी सभ्यता के कैल्क-

लिथिक काल म यह द्वीप आबाद रहा होगा, सभ्यता म बबरता के यथेष्ट प्रमाण हमे इस ऊसर द्वीप म मिले हैं । यह कल्वलिथिक युग ईसा की बीसवी शताब्दी म आया था इस विषय म विद्वान अब दो मत नही रखते । इन अवशेषो की सूक्ष्म जाच करने के बाद मैं इस निश्चय पर पहुच गया हू कि बीसवी सदी के मध्यकाल म यह द्वीप मध्याह्न के सूर्य की तरह तप रहा था । इस द्वीप की सभ्यता तत्कालीन पृथ्वी पर राज्य करती थी ।

खुदाई मे हम बहुत-सी चीजें मिली हैं । उस समय लोग भाप से चलने वाले जहाज और पेट्रोल से उडने वाले हवाई जहाजो का इस्तेमाल करते थे । चूकि इस द्वीप म दोनो के अवशेष मिले हैं इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह द्वीप व्यवसाय वाणिज्य का प्रधान केंद्र रहा होगा । पट्रोल से चलने वाली छोटी-बडी और दो मजिला मोटरा तक के चकनाचूर हम इस द्वीप के खडहरो से मिले हैं । रेल और ट्रामो की बनावट पर गौर करने से यह मालूम होता है कि बिजली का प्रयोग करने म ये लोग सिद्धहस्त थे । दो पहिये वाली किसी सवारी गाडी का इस्तेमाल भी होता था और मैं तो यहा तक कहने का साहस करूगा कि प्राचीन ग्रथा म जिस साइकिल नामक सवारी की महिमा बखानी गयी है वह यही चीज है । प्राचीन ग्रथो मे अनेक स्थलो पर कलाक ऋषि का साइकिल पर चढ़ना बखाना गया है ।

कई जगह हमे एक अजीब किस्म की सवारी के टूटे-फूटे हिस्से भी मिले हैं । यह गाडी लकडी की होती थी । इसके दो पहिये होते थे और इसे कोई जानवर खीचता था । यह जानवर घोडा नहा हो सकता, इसके तो मेरे पास पक्के प्रमाण हैं । इस द्वीप म कई जगह हम घोडागाडियो के अश भी मिले हैं । इसलिए उस भद्दी-सी पुरानी गाडी को जरूर ही कोई दूसरा जानवर खीचता रहा होगा । लगभग दस हजार वष पहल आय जिस किस्म की गाडियो का इस्तेमाल करते थे, यह हूबहू वसी ही है । आर्यों की गाडिया बल खीचते थे । हो सकता है कि इस द्वीप की इन गाडियो को भी बल ही खीचते रहे हो । निजी तौर पर मेरा यह अनुमान भी है कि इस गाडी को बल और कहा-कही कुली जाति के आदमी

ऊसर द्वीप म भी इन्ही खटमलो का शासन था, यह बात निर्विवाद रूप स सत्य सिद्ध हो चुकी है। द्वीप के मध्य भाग की बडी-बडी इमारतो म अनेक लोहे के चक्के और कलपुर्जे मिले हैं। यह शायद उन्ही दानवो के ध्वसावशेष हैं जिनकी शक्ति स खटमल पृथ्वी पर राज करत थ। प्राचीन ग्रथो म इन लाहे के दानवो को मशीन कहा गया है। उनसे हम इस बात का भी पता चलता है कि तत्कालीन सभ्यता के विकास म सहायक होते हुए भी खटमलो की अधीनता म रहने के कारण इन मशीनो से मानवो का रक्तशोषण ही अधिक हुआ। इन मशीनो के रहने क स्थानो को मिल या फक्टरी कहा जाता था।

ससार का खून चूसकर खटमल वडे विलास-वभव स रहा करते थ। कीमती रत्न और सोने के गहने इस द्वीप म हम मिल हैं। अनुसधान की सुविधा के लिहाज से हम कुछ अमूल्य सामग्री उपलब्ध हुई है। बहुत-स प्रस्तर-पट्ट और लाहे के पत्तरो पर रगे हुए साइनबोर्ड हम मिले हैं। लिपि क लिहाज म इनम विभिन्नता है। बीसवी शताब्दी की अग्रेजी, दवनागरी, गुजराती और फारसी लिपियो म हम व्यक्तियो और मुहल्लो के नाम मिलत हैं। सबसे अधिक गहने और कीमती सामग्री हम कालबादवी, मलाबार हिल और मरीन लाइस के खडहरो से मिली है।

कालबादेवी की दो विशाल इमारतो म एकसाथ अनेक ठठरियो का पाया जाना इस बात का द्योतक है कि यहा सभाभवन रहे होग। चूकि ठठरिया खटमलो की हैं, इसलिए निस्सदेह ये स्थल खटमलो के सभा भवन ही रहे होगे। खटमलो की सभा का स्पष्ट अथ है खून चूसने वाली सभा। यह खून चूसने वाली सभा किस प्रकार की रही होगी, इस विषय को लकर विद्वानो म मतभेद है। कई विद्वान यह मानते हैं कि ये इमारतें विधानसभा या पार्लियामट रही होगी। मैं ऐसा नही मानता। विधान तो नेता जाति के लोग ही बनाया करते थे। प्राचीन नगरो की खुदाई मे जहा-जहा विधानसभाए मिली है वहां जो मानव ठठरिया हम प्राप्त हुई हैं वे अधिकाशत नेता जाति की ही हैं। यह नेता जाति खटमलो तथा कुलियो का वणसकर थी। उस समय दो ही प्रमुख जातियो के मानव पृथ्वी पर निवास करत थे—खटमल या कुली। खटमल लक्ष्मी-

नारायण के उपासक होते थे और कुली दरिद्रनारायण के। इन दोनो जातियो के योग से नेता नाम के वर्णसंकर उत्पन्न हुए जो आधे नर और आधे खजर हुआ करते थे। ऊसर द्वीप की विधानसभा म हम नेता जाति की बहुत-सी ठठरिया मिली हैं। परतु यह विधानसभा कालबादेवी म नही थी। इसलिए मैं इस निश्चय पर पहुच गया हू कि कालबादेवी क्षेत्र मे जो दो सभाभवन खटमलो की ठठरियो से भरे मिले है, वे सट्टा-भवन रहे होगे। विज्ञान और आनद के इस परम युग मे हम सटटे को नही समझ पाते। क्या बला थी ? इसका कैसा उपयोग होता था ? यह कुछ भी समझ मे नही आता। प्राचीन ग्रथो म लिखा है कि खटमल सटटा खेला करते थे। खटमलो का खेल भी कैसा भीषण होगा, इसका अनुमान ता किया जा सकता है।

इस छोटे-से लेख मे ऊसर द्वीप की खुदाई से प्राप्त सभी चीजो का वर्णन करना कठिन है। इसलिए अत म एक प्रचलित जनश्रुति का उल्लेख कर अपना यह लेख समाप्त करूगा। कल्याण नगर के निवासियो मे इधर एक जनश्रुति चमत्कारिक रूप से प्रचलित हो रही है कि ऊसर द्वीप के इन खडहरा म आधी रात के बाद एक नरककाल अक्सर डोला करता है। वह मिल और फक्टरियो के क्षेत्रो म जाकर उनके चक्के-पुरजो को देख-देखकर हिंसात्मक रूप से हुकार भरता है और उनको स्पर्श कर बुरी तरह से कराहता है। सटटे और विधानसभा के खडहरा मे जाकर यह नरककाल दोनो हाथ उठा-उठाकर कोसता है और क्रोध मे पागलो की तरह प्रलाप करता है। खटमलो और नेताओ की ठठरियो को वह घृणा और क्रोध की दृष्टि से देखता है और अत मे कुली जाति के एक मुहल्ले म जाकर बहुत-सी ठठरियो को कलेजे से चिपकाकर फूट-फूटकर रोता है। इन ठठरिया म बच्चो की ठठरिया भी हैं। लोगो की मान्यता है कि उस नरककाल म स्वय बलाक ऋषि की आत्मा भटकती है जिनकी पत्नी और बच्चो को खटमलो के अत्याचारो के कारण भूख स तडप-तडपकर मरना पडा था। इन्ही बलाक ऋषि के शाप से **खटमलो** का यह वैभव-शाली नगर ध्वस्त हो गया।

ब्रिटिश राज्य का तिलस्मी दरवाजा

इस रफ्तार को देखते हुए तो यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि मुन्नू के परम पूजनीय चचा साहब जिन्होंने उन्हें अपनी शान और गद्दी का अधिकारी बनाया है मेरा [illegible] वसीयत में भी यह लिख जायेंगे कि अगर मुन्नू देश का नेता प्रसिद्ध और पूजनीय उपन्यास लेखक अथवा बड़ा आत्मा न बने तो उसे उनकी तहसीलदारी की गाढ़ी कमाई की एक पाई न दी जाय।

मुंशी शिव्बननाथ की सचमुच इस बात की बड़ी भारी तमन्ना है कि जब वह किसी जगह जायें तो राह चलते लोग उन्हें देख-देखकर कहें यह उस बड़े नेता का चाचा है।

तहसीलदारी के जमाने में गांवों में नेताओं का स्वागत होते देखकर उनके मन में प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई थी। चूंकि कोई बेटा न था इसलिए भतीजे को लेकर ही यह मनोकामना वेगवती हो रही थी।

तहसीलदार पंडित जवाहरलाल नेहरू के बड़े भक्त हैं। सैकड़ों से सुन रक्खा है कि पंडित जी का बंगला किसी बादशाह के महल से कम नहीं सजा है।

जवाहरलाल जी के ड्राइंग रूम का वर्णन एक कांग्रेसी मित्र से सुनकर आपने भी मुन्नू के कमरे को ठीक उसका इमीटेशन बना दिया। अखबार वाले को भी लीडर, पायनियर, हिंदुस्तान टाइम्स, अमृत बाजार पत्रिका, प्रताप, भारत, वर्तमान, नवयुग, अर्जुन, आज तथा और भी बहुत-से दैनिक साप्ताहिक और मासिक पत्र लाने की आज्ञा दे रखी है।

अपने दूसरे मकान को किराये पर न उठाकर उसमें मुहल्ला पोलिटिकल कांफ्रेंस, हिंदी साहित्य परिषद, श्री सनातन धर्म रक्षिणी सभा, गांधी

नाइट स्कूल, जवाहर बेकार मडल आदि कई सस्थाओ के साइन बोड लटका रखे है । इनमे से मुन्नू किसी सस्था का सभापति है और किसी का उपसभापति है अथवा मत्री । बडे-बडे पत्रो म मुन्नू के व्याख्यानो के समाचार, उमके प्रोग्राम तथा उसके चित्र छप हुए दखने की वडी इच्छा है । गरज कि किसी तरह मुन्नू को ठोक-पीटकर वद्यराज बनाया जा रहा है ।

चाचा ने भतीजे स महात्मा गाधी का जीवन चरित्र पढने के लिए कहा । गनीमत इतनी ही है कि वह इन बडे-बडे आदमियो के कारनामो स बहुत अच्छी तरह वाकिफ नही थे महज उनके नाम ही सुन रखे हैं और उनके बारे म बहुत सी सच्ची झूठी बेपर की लनतरानिया ।

मुन्नू अपने चाचा साहब की इन तयारियो म तग आ चुका है । एक दिन रात का मुन्नू अपन चाचा म छिपाकर भूतनाथ का पहला भाग लाइब्रेरी से लाया । पलग पर लेटकर एक बडे नेता की तरह वह टाग चढाकर इतमीनान से 'भूतनाथ' पढने लगा । अक्सर वह इसी तरह चद्रकाता, नरेंद्रमोहिनी कटोरा भरा खून आदि पुस्तको को महात्मा गाधी और पडित जवाहरलाल के जीवन-चरित्रो की आड म पढता है ।

वह तन्मय होकर पढ रहा था । मुशी शिब्बनलाल अफीम की गोली गटक लने के बाद इत्मीनान म पलग पर लेट हुए हुक्का गुडगुडा रहे थे । एकाएक वे बोले, 'मुन्नू !"

मुन्नू ने हडबडाकर उत्तर दिया, जी जी हा ।'

वे कहने लगे "देखो इस बार काग्रेस मे कुछ न कुछ बोलना जरूर । जरा लवा-सा व्याख्यान देना । इससे बडी धाक जम जायेगी । '

सारा मजा किरकिरा हो गया । कहा तो भूतनाथ अपना ऐयारी का बटुआ और पसेरी-भर भग लेकर तिलिस्म मे घूमने जा रहा था और कहा वही कमबख्त काग्रेस का पुराना गाना चालू हो गया ।

मुन्नू बेचारा मन ही मन खिजलाया तो बहुत पर आखिर म उसे कहना ही पडा "जी हा देखियेगा कि इस बार गाधी जी और जवाहर-लाल जी खुद मेरी पीठ ठोकेंगे । इस वक्त जरा उसी व्याख्यान के लिए सुभाषचद्र बोस की लिखी हुई ब्रिटिश राज्य का तिलिस्मी दरवाजा' पढ

ब्रिटिश राज्य का तिलस्मी दरवाजा

इस रफ्तार को देखते हुए तो यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि मुन्नू के परम पूजनीय चचा साहब, जिन्होंने उसे अपनी गोद और गद्दी का अधिकारी बनाया है मरते समय शायद वसीयत मे भी यह लिख जायेंगे कि अगर मुन्नू देश का नेता प्रसिद्ध और पूजनीय उपन्यास लेखक अथवा बड़ा आदमी न बने तो उसे उनकी तहसीलदारी की गाढी कमाई की एक पाई न दी जाय।

मुंशी शिब्बनलाल का सचमुच इस बात की बडी भारी तमन्ना है कि जब वह किसी जगह जायें तो राह चलते लोग उन्हे देख देखकर कहें, यह उस बडे नेता का चाचा है।

तहसीलदारी के जमाने म गावो म नेताओ का स्वागत होते देखकर उनके मन मे प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई थी। चूकि कोई बेटा न था इसलिए भतीजे को लेकर ही यह मनोकाक्षा वेगवती हो रही थी।

तहसीलदार पडित जवाहरलाल नेहरू के बडे भक्त हैं। सकडो से सुन रक्खा है कि पडित जी का बगला किसी बादशाह के महल स कम नही सुना है।

जवाहरलाल जी के ड्राइग रूम का वणन एक काग्रेसी मित्र से सुनकर आपने भी मुन्नू के कमरे को ठीक उसका इमीटेशन बना दिया। अखबार वाले को भी लीडर पानियर हिंदुस्तान टाइम्स, अमृत बाजार पत्रिका, प्रताप भारत वतमान नवयुग अजुन आज तथा और भी बहुत स दनिक साप्ताहिक और मासिक पत्र लाने की आज्ञा दे रखी है।

अपने दूसरे मकान को किराये पर न उठाकर उसम मुहल्ला पोलिटिकल कान्फरेंस हिंदी साहित्य परिषद श्री सनातन धर्म रक्षिणी सभा गाधी

रहा हूं।

मुंशी जी पीनक से जरा चौंककर बोले "अच्छा, सुभाषचन्द्र जी की किताब है। वही तो इस साल कांग्रेस के सभापति है ना ?"

मुन्नू ने कहा "जी हां इसी से तो उनकी ही किताब पढ़ रहा हूं।"

वे प्रसन्नतापूर्वक बोले, "हां-हां बेटा तो तुम अच्छा कर रहे हो। खूब मन लगाकर पढ़ना।"

मुन्नू ने कहा "चाचा जी बड़ा मन लग रहा है इस किताब में। बड़ी अच्छी किताब है।"

वे बोले "ठीक है पढ़े जाओ।" फिर दूसरे के दो कश खींचकर आराम से कहने लगे "भगवान करे मेरा मुन्नू भी एक दिन राष्ट्रपति बने। सब लोग इसकी जय जयकार करें।"

भूतनाथ एवं शत्रु एयार की कहानी की रचना सुधाकर उसकी गठरी बांध जंगल के बीच से चला जा रहा था।

अपने चचा को प्रभावित करने के लिए मुन्नू पढ़ते-पढ़ते एकाएक कह उठा "वाह् वेरी नाइस।"

चचा साहब फिर बोले, "बड़ी अच्छी किताब मालूम होती है मुन्नू! जरा जोर जोर से पढ़ो तो बेटा हम भी सुनें, क्या-क्या बातें लिखी हैं। सच तो यह है बेटा कि सारे धरम शास्तर और पुरान, सब इन्हीं किताबों में है आजकल।"

मुन्नू के सिर पर जैसे पहाड़-सा टूट पड़ा। फिर भी मुन्नू अपने को संभालते हुए कह उठा "इस समय मैं इसकी खास-खास बातों पर गौर कर रहा हूं।"

"अरे एक बार सुना जा न! फिर दूसरी बार व्याख्यान के लिए पढ़ लेना। हां सुना तो बेटा!"

अजीब उलझन में पड़ा। बेचारे को उस समय कुछ भी न सूझा। नौकर भी उस वक्त मौजूद न था वरना बिस्तर ठीक तौर पर न झाड़ने के बहाने ही उसे फटकारने लगता। पास में कोई राजनैतिक पुस्तक भी नहीं रखी थी कि उसे ही पढ़कर सुनाने लगता। उधर मुंशी जी को अगर दो बार और मुन्नू से खुशामद करनी पड़ती तो वह नाराज हो

आते। बडे पसोपेश मे पडे मुन्नू ने आखिरकार किसी तरह पढना शुरू कर दिया।

"रात लगभग ग्यारह घडी जा चुकी है। महात्मा गाधी, जवाहरलाल नेहरू और खा अब्दुल गफ्फार खा उत्कठा के साथ अगस्त मुनि की मूर्ति की तरफ देख रहे है। एक आल पर मोमबत्ती जल रही है जिसकी रोशनी से उस मदिर की सभी चीजें दिखायी दे रही है। महात्मा गाधी और पडित जवाहरलाल का कलेजा उछल रहा है कि देखें अब यह मूर्ति क्या बोलती है'

एकाएक कुछ गाने की आवाज आयी, मालूम हुआ कि यही मूर्ति गा रही है। सब कोई बडे गौर से सुनने लगे।

'सबहि दिन नाहि बराबर जात।
कबहू कला बला पुनि कबहू
कबहू करि पछतात॥'

इसके बाद मूर्ति इस तरह कहने लगी

'अहा! आज मै अपने सामने किस-किसको बठा देख रही हू। महात्मा मोहनदास। धर्मात्मा जवाहरलाल। मैं अभी धर्मात्मा कस कहू। क्या सभव है कि भविष्य मे भी यह धर्मात्मा बना रहेगा? खर, जो कुछ होना होगा, देखा जायेगा। हा यह तीसरा आदमी मेरे सामने कौन है? वही अब्दुल गफ्फार खा, जिसने अपनी काया पलट कर दी और अपना नाम बदलकर सीमात गाधी कहलाया? अहा! इस बात का किसी को स्वप्न मे भी गुमान न था कि गोविंदवल्लभ पत ऐयार एक दिन दुश्मनो के तिलस्म का दरोगा बनेगा, धन्य है उसके साहस को।'

इतना कहकर मूर्ति चुप हो गयी।

महात्मा गाधी इसके बाद जवा के दो फूल मूर्ति के चरणो पर चढाकर हाथ जोडकर खडे हो गये। जवाहरलाल नेहरू और अब्दुल गफ्फार खा भी हाथ जोडे खडे हुए थे। मूर्ति ने फिर कहना शुरू किया

अब एक काम करना कि ऐयार सुभाषचद्र बोस को पश्चिम के फाटक की तरफ भेजना। बडे से जगल के बीच होकर त्रिपुरी नगर के पास जब वह पहुच जाये तो उसको चाहिए कि सिर पर मुकुट रखकर तमाम महाराजा

का वेग बनाकर सिंहासन के बायें हाथ का गूटा को खाच ल। लोग उसकी जय जयकार करेंगे और दुश्मनों को इस भेद का पता भी न लगने पायेगा। अच्छा अब इस वक्त जाओ। फतह होगी। और अगर बीच म कोई घटना न घटी तो अगली अमावस्या के दिन मैं फिर इसी तरह बोलूगी। तब आगे की बातें होगी।

मुशी जी बडे गौर से सुन रहे थे। बोले एक बार, "क्या मुन्नू यह बातें तो एकदम नयी हैं। अच्छा क्या इनमें तिलिस्मी भी हो रही है?"

मुन्नू घबराया तो जरूर लेकिन झट से उत्तर दिया, "जी यह तो कोई खास बात नही चाचा जी! आप समझिए कि यह साइंस का जमाना है लेकिन महात्मा गांधी जी ने कहा कि हम अपने स्वदेशी तरीके से ही लडाई जीतेंगे। इसमें आगे चलकर और भी बडी-बडी बातें हैं।

चाचा साहब ने हुक्का गुड़गुड़ाते हुए कहा 'अच्छा, आगे पढ़ो।'

मुन्नू ने पढ़ना शुरू किया "ऐयार सम्राट महात्मा गांधी जब अपनी ऐयारी का बटुआ और पसेरी भर भग का झाली बाधकर चले "

"लेकिन मुन्नू" चाचा जी ने बीच म ही टोककर कहा, "महात्मा गांधी तो भग पीते ही नही। फिर यह क्या लिखा है?'

मुन्नू ने कहा, 'बात यह है चाचा जी कि महात्मा जी अंग्रेजों को धोखे से भग पिलाकर नशे म लाना चाहते थे न।"

इसके बाद वह कुछ न बोले। मुन्नू ने पढ़ना शुरू किया

"बियाबान जंगल म एक बरगद के पेड़ के पास टूटा-सा शिवाला बना हुआ था। महात्मा गांधी बडी होशियारी से उस मंदिर म घुसे और महादेव जी की मूर्ति पर लिपटे हुए साप का फन पकडकर जोर से उमेठ दिया। तब एकाएक क्या देखते हैं कि पास की जमीन फट गयी। महात्मा जी बडी सावधानी से सीढ़िया उतरने लगे। उनके उतरने के साथ ही साथ जमीन अपने आप ही ठीक हो गयी। नीचे उतरकर देखते क्या हैं कि एक चौकोर कमरा बना हुआ है जिसमें काले और सफेद पत्थर जडे हुए हैं तथा कमरे के चारों ओर चार मूर्तिया तीर-कमान लिए खडी हुई हैं।

ऐयार सम्राट महात्मा गांधी ने उस जगह दो मिनट तक चुपचाप खडे

रहने के बाद फश पर जडे हुए एक सफेद पत्थर पर धीरे स अपना तीर-कमान सभालकर पाव रखा। मूर्तियो ने धनुप सभाला। महात्मा जी न फौरन ही काल पत्थर पर पाव रखा तो कुछ भी नही हुआ। इस प्रकार सतकतापूवक काले पत्थरो पर पर रखत हुए महात्मा जी धीरे-धीरे उन मूर्तियो के पास पहुचे और उनके हाथ स तीरो को खच लिया। इसके बाद फिर उन्होंने सफेद पत्थर पर पैर रखा तो देखते क्या हैं कि मूर्तिया फिर हिली पर उनके हाथ मे अब तीर तो ये नही। इसलिए मूर्तिया खाली हरकत करके रह जाती थी। महात्मा जी ने सतोप की एक गहरी सास ली, फिर जाकर हर मूर्ति के अगो को टटालने लगे। एक मूर्ति के पास जाकर ज्योही उन्होंने उसकी कमान को अपनी ओर खीचा त्योही धडाके के साथ पास की दीवार का पत्थर हट गया और एक सुरग नजर आयी। महात्मा जी ने अपने ऐयारी के बटुए स मोमबत्ती का टुकडा निकाला और उसे चकमक पत्थर स जलाकर सुरग मे पठे। लगभग तीस कास उस सुरग म जाने के बाद देखते क्या हैं कि एक किला बना हुआ है, जिसके चारो तरफ एक खाई बनी है तथा उसमे एक चादी की डागी किनारे पर बधी हुई है और सोने की एक पतवार उसम रखी हुई है। महात्मा जी ने तिलिस्म की किताब खोलकर देखा तो हकीमो ने लिखा था कि तिलिस्म म घुसने वाले को चाहिए कि पतवार को पहले अपन हाथ मे ले, फिर डोगी मे बठ जाये तो डोगी अपने आप ले जायेगी। महात्मा जी ने वसा ही किया। डागी सर्राटे के साथ तीर की तरह चली और जाकर किले के फाटक पर रुक गयी। महात्मा जी डोगी से उतरकर फाटक के पास आये। भीतर जाकर देखा तो एक पहरेदार बैठा ऊघ रहा था। महात्मा जी ने बडी चतुराई के साथ उसे दवा सुघाकर बेहोश कर दिया फिर उसकी गठरी बाधकर पास की एक झोपडी मे गये। वहा उन्होंने बटुए से निकालकर एक दवा उसकी जीभ मे लगा दी, जिससे कि वह ऐंठ गयी। फिर उसके बाद बटुए से सामान निकालकर उसका-सा रूप बनाकर किले मे घुसे। आगे बढ़कर आगन मे एक तालाब था। महात्मा जी उसम कूद पडे। तालाब के नीचे एक दरवाजा मिला। महात्मा जी उसमे चले गये। देखते क्या है कि अदर एक बारहदरी बनी हुई है, उसमे बारह कोठरियां

बनी है। महात्मा जी ने सात नबर की कोठरी का ताला खोला तो उसमे कस्तूरबाई गाधी मिली। महात्मा जी को देखकर कस्तूरबाई बडी प्रसन्न हुइ। हुमककर कहा, 'अहा, इतने दिनो बाद दुख और कष्ट झेलकर तुम मुझे छुडाने तो आये। तुम धन्य हो भूतनाथ ' "

अरे राम रे! मुन्नू की जबान जैसे कट-सी गयी। मुशी जी गिरधन-लाल अब तक बडे आश्चय और कुतूहल के साथ वह सब सुन रहे थे। उन्हें सचमुच इस कथा को सुनकर आश्चय हो रहा था। सभी बातें एकदम अजीबोगरीब, एकदम नयी थी। वे आश्चय से बोले, ऐं, ये भूतनाथ क्या बला है? तुम भूतनाथ एयार का किस्सा पढ रहे हो?

हकलाती जबान से मुन्नू ने कहा नही तो चाचा जी ये ब्रिटिश राज का तिलस्मी दरवाजा है।

चाचा साहब को बडा तैश आ गया, नालायक, मुझे बेवकूफ समझ रखा है तूने? साठ का होने को आया। तमाम जिंदगी तहसीलदारी करते गुजरी। मेरे मातहत कारिंदा लोग मुझसे थर-थर कापते थे और तू मुझको ही उल्लू बनाता है! ये बाल धूप मे सफेद नही हुए। निकल जा मेरे घर से। चल हट मेरे सामने से नालायक!'

मुन्नू की आखो की पुतलिया के बार-बार जोर से फडकने से उसके दिमाग का दरवाजा खुल गया। उसे कुछ भी सुझाई न पडा। अपने चाचा की चरण रूपी खूटी को बार-बार हिलाकर उनके दिल की बारहदरी मे प्रेम को लौटाने की बार-बार कोशिश मे मुन्नू की आखो मे आसू आ गये।

किस्सा बी सियासत भठियारिन और एडीटर बुल्लेशाह का

जाड़े की रात। नया जगल। एक डाल पर तोता, एक डाल पर मना। हवा जो सनसन चली तो दोना काप उठे। मैना अपन परा को समेटकर बोली कि अय तोते, तू भी परदेसी, मैं भी दूसरे देश की। न यहा तेरा आशियाना है, और न मेरा बसेरा। किस्मत ने हमारा घर-बार छुड़ाया, लेकिन मुसीबत ने हम साथी बनाया, इसलिए अय तोते अब तू जतन कर कि जिससे रात कटे, कोई किस्सा छेड कि मन दूसरा हो।

तोता बोला कि अय मना, सुन! मैं देश-परदेश उडा और सरायफानी देखी। उसके भठियारे का नाम इलाही और भठियारिन का बी सियासत, जो जिदगी की सेज से उतरने का नाम ही नही लेती। उन्हें ढली जवानी मे नयी-नवेली बनने का वह शौक चर्राया है कि अल्लह-अल्लह! उनके साज सिंगार की फरमाइशो ने मिया इलाही की सरायफानी को सुनार की दुकान बना रखा है। चारो ओर भट्ठिया धधक रही है दिमाग का सोना गलाया जा रहा है। हर तरफ ठक-ठक का शोर इस कदर कि भठियारे मिया इलाही के हुक्के की गुडगुडाहट ही दब गयी। गाहको की तौबातिल्ला और शिकायतो से सरायफानी का छप्पर उडने लगा। मगर ऐ मना, अजब ढग है बी सियासत के कि कल का खयाल ही नही उन्हें तो आज ही मे कल नहीं पडती। घडी मे सुनारो की छाती पर सवार और दम-दम मे जाम-आजादी का दौर। ढली जवानी का बगूला इस जोर से भडका कि कत्लेआलम बन गयी। और अब तो जानेजहा इस बात पर मचली हैं कि हम आग से आग को बुझायेंगे।

भनक एडीटर बुल्लेशाह को पडी। अक्ल की फकीरी पर शक्ल की अमीरी अपनायी, खुदा के नूर पर मेहदी रचायी, जुल्फो मे तेल डाला

और फिर जो सुरयीली नजरो को तिरछा घुमा के फेंक दिया तो जहान म आग लग गयी। सीना चाक, दहन फाडकर बुल्लेशाह चिल्लाये कि ऐ बी सियासत, जाने मन!

उलफत का जब मजा है
कि दोना हो बकरार,
दोना तरफ हो आग
बराबर लगी हुई।
—लो, आओ बुझाओ।

गमक के उठी बी सियासत भठियारे स बाली, ले मदुए, अपनी दुनिया सभाल मैं तो चली।

बन ठन के चली मैं पी की गली
मुए काहे को शोर मचावत है।
हरजाई बनी, तोस नाही बनी,
तू तो दीन की बीन बजावत है।

—ऐ निगोडे मैं ठहरी सियासत मुझे तरे धरम ईमान स क्या काम? तेरे गाहको के चन-आराम से क्या निस्वत? मुझे बगलें गरमान मे मजा आता है, आज इसकी बना कल उसकी हुई।

भठियारा बोला कि ऐ बीवी, शरीफो का चलन चल, नेकबख्त बन। बदी म मजा नही प्यारी रग रग पोर पोर म चुभन होगी दामन चाक-चाक हो जायेगा।

मना ने पूछा तब?

तोता बोला तब खूने आशिक की हिना स रगी उगलियो को नचाकर, मर्वे मटका मुह बिचकाकर बोली बी सियासत कि ऐ मुए दाढीजार तुझे शायर का कलाम याद नही कि गुलो से खार बहतर हैं, जो दामन थाम लेते है। फिर तेरे पास धरा ही क्या ह? तरे नाम की माला जपने से क्या हासिल? उधर बुल्लशाह के लाखो मुरीद है हिंदी म, उर्दू म, तमिल, गुजराती मराठी बगाली म चीनी, जापानी म, अग्रेजी म रूसी, फ्रासीसी म, गर्ज की हर जबान मे बुलबुले फूटते है। शाह का मतर जमाने के सिर चढकर बोलता है। सफेद कागज पर स्याह हरूफो से

ढलकर उनकी आवाज बुलद होती है। जिस पर उनकी मेहर की नजर हो जाती है, वह तिल से ताड बन जाता है, और जिससे उनकी नजर फिर जाती है वह सूरज की तरह रोशन होकर भी बुझा चिराग माना जाता है। ऐसे सनम के गले मे बाहें डालकर मैं जो एक आह करू तो गली कूचा म शोर मच जाये, जो चाह करू वह पूरी हो, जो गुनाह करू, वह छिप जाय, मेरी वाहवाही हो, मेरी धूम मच जाये। इसलिए ऐ निगोडे मुए भठियारे, मैं तुझे छोड चली, मुह मोड चली—

जाके घर-घर म आग लगाऊगी मैं।
तेरे खल्क को खाक बनाऊगी मैं॥

कहके बी सियासत ने अपनी ओढनी सभाली—तिरगी छटा छहरी, सातो सितारे चमके, हिलाले ईद उगा, पट्टिया और धारिया लहरायी, हमिया-हथौडा ठमका, नजर जिसकी भी पडी उसी ने हाथ भरी, कसके कलजे को थामा, दुनिया दीवानी बनी बी सियासत की ओढनी के गुन गाने लगी।

बोली मना कि अय तोते, तेरा किस्सा आला है, तर्जबया निराला है, मगर यह क्या बात है कि हर बार बेचारी औरत जात पर है? अरे कुछ तो इसाफ कर! मर्दों के कुसूर को तू मद होने की वजह से मत माफ कर। कुछ तो बता कि बुल्लेशाह ने क्या किया?

तोता बोला कि अय मेरी प्यारी मना, उतावली न दिखा बेचन न हो। सुन—

बोला बुल्लेशाह कि ऐ परी पकर! फोटू तुम्हारी दखकर दिल पर हुआ असर। मैं भूल गया गली प्रूफ, प्रेत का मैंटर। अब तो रहम कर। मैं तोडता हू आज से नाता जहान से, कलचर से, लिटरेचर से, दीनो ईमान स। तेरे ही गुन मैं गाऊगा ऐ बीवी सियासत! कदमो पे लुटा दूगा, मैं कुल अपनी सियासत। तू चल के बैठ तो जरा टाइपो के केस म, हर फाट म, पका म, हर पुरजे के फेम म। फिर देख मेरे जौहर कि तेरे शौहर को नाको चने चबवा दू तो मेरा नाम बुल्लेशाह नही भब्बू।

सुन के बी सियासत मुस्करायी, बुलाक की लटकन ने बल खाया, चितवन ने बाका वार किया, बुल्लेशाह के गले म बाहें डालकर, बाली

हम ता किसी पहलू नही आराम आता है।
तुम्ही इस दिल का ले लो य तुम्हार काम आता है।
अभी तो इब्तिदाय इश्क है, अय हजरत फरहत'
तुम्हार सामन क्या देखना, अजाम आता है।

मगर अजाम की परवाह किसको है ! तोत न कहा कि अय मना, यह हौसला मद का ही हाता है जिसन तिरछी नजर से वार किया उस पर दिलाजान सब निसार किया। एडीटर बुल्लेशाह की एडी जो तर हुई तो जोशनूनू म दहन फाडकर चीखे कि ऐ मेरी प्यारी, तू दख मरा करिश्मा ! या कहके लगाया नाक पे चश्मा और कलम को म्यान से निकाल लिया। पच्छिम म बठे और पूरब म टागे फलायी। उत्तर की ओर मुह किया और दक्खिन म आग लगायी। या चारा कोने जीनकर बोले यो एडीटर, अब तेरे लिए क्या करू, बोल ए मरी जिगर। तू कह दे तो इलाही की मैं मूछे उखाड लू। दुनिया सरायफानी का पल म उजाड दू। सूरज की राह राक करू चाद का फना। दरिया का ताख ल कि करू आग को मना। ताबे म तेरे कर न्यि प्रेमटस्ट रायटर। तेरे गुलाम हो गये मरे रिपोटर।

यह सुनकर सियासत बी भठियारिन मुस्करायी। पनडब्बा निकाला दो बीडे आप जमाये और जूठन बुल्लेशाह का इनायत की। बुल्लेशाह के सात पुरखे और आनेवाली सात पीढिया निहाल हो गयी। फिर कलम चूम के बी सियासत बोली कि ऐ मेरे पालतू बन्दर ! बस, मेरे इशारे पर चला कर। मै जो कहू वही लिखा कर। गर सच को कहू झूठ तो तू झूठ बाल दे। हक के खिलाफ बोल—बस जिहाद बोल द। मैंने भठियारे इलाही स बन्ना लेने की ठानी है। मरायफानी के मुसाफिरो को मिस्मार करने की मिन्नत मानी है। तवारीख के वक यह साबित करते है कि सराय इलाही की है, औ मुसाफिरो की बस्ती है। मगर मरी निगाह म औकात हक की सस्ती है। मैं दौलत की बहन हू, उसकी अजीज हू। मान की आन बनी मैं कनीज हू। इसलिए ऐ प्यारे बुल्ल, तू फूट हजार बार फूट। झूठ म अपन तन को काना कर। वहन दौलत का बालबाला कर। मै हक का नाम लके नाहक करूगी शोर। मगर इस नार का तू

सच न समझना मेरे भोले बालम ! यह मेरी चाल है मेरी अदा है, मेरा चकमा है। मेरा दफ्तर तो बस झूठ का महकमा है। दुनिया सराय-फानी के गरीब मुसाफिरों के लिए मैं पकवान बनाऊंगी मगर उन्हें दौलत के चहेतों को खिलाऊंगी। रिपब्लिक का नाच नाचूंगी, मगर पब्लिक को अंगूठा दिखाऊंगी। दौलत का हो गुलाम दुनिया का हर बशर। बस आज सियासत को है कोरी यही फिकर। तू एक काम कर। जो मेरी राह के रोड़े हैं उनको तबाह कर। कल्चर और लिटरेचर, आर्ट और साइंस, हिस्ट्री और हक का फलसफा—ये मुए मेरी पोल खोलते हैं। तू इनकी कमर तोड़ दे ऐ मेरे प्यारे बुल्ले ! इनकी खबरें न छाप, इनकी आखें फाड़ दे। इनमें से जो मेरे गुलाम बन जायें, उनकी वाह-वाह कर, बाकी को तबाह कर।

मैना बोली कि ऐ तोते, इसके बाद क्या हुआ ? तोते ने आह भर के कहा कि इसके बाद जो होना था वही हुआ। वो सियासत ने कमर लचकाकर तेगेनजर का वार किया, और झुककर बुल्लेशाह को चूम लिया।

मैना ने फिर पूछा कि तब बुल्लेशाह ने क्या किया ?

तोते ने जवाब दिया कि बेचारा बुल्ला जवानी का मारा करता क्या ? सियासत के जोबन से मखमूर हुआ। हक से बहुत दूर हुआ। ईमान उसका चूर हुआ।

यह कहकर तोते ने एक ठंडी सांस ली, और दरख्त की डाल पर अपनी गर्दन डाल दी। मैना से उसकी यह हालत देखी न गयी। फुदक-कर उसके पास आयी, चोंच से चोंच मिलायी और बोली कि न रो मेरे साथी, न रो मेरे हमदम। हक का दर्जा ऊंचा है। सराय इलाही की है, मुसाफिरों की बस्ती है। वो सियासत और बुल्ले की ये दोस्ती निहायत सस्ती है। वक्त आयेगा, जब अक्ल आयेगी। दुनिया में फिर से बहार आयेगी। ये देख, भोर हुआ। परिंदों का शोर हुआ। आओ, हम इनके साथ हों। एक होकर आवाज बुलंद करें। वो सियासत और बुल्लेशाह की हस्ती क्या है जो हमारी आवाज को दबा सकें।

यह कहके मैना ने तोते को उठाया, नया जोश दिया। फिर दोनों पंख फैलाकर ऊंचे आस्मान में तेजी से उड़ चले।

और डॉक्टर जम्फर तो जन्म के बेकार हैं। दो बार नौकरिया पायी भी, मगर अपने अकडफू मिजाज की वजह स महीने-दो महीन से ज्यादा वे चला न पाये। उनका नाम वसे तो बाबू गिरधरगोपाल है, मगर स्कूली जमाने से ही वे न जाने किस तरह इसी नाम से प्रसिद्ध हो गये है। डॉक्टर जम्फर स्कूल मे कई पीढियो के क्लास फलो रह चुके हैं। हर दर्जे मे दो-तीन साल रुककर पढाई पुख्ता करन का उन्हें ठीक शौक रहा है। पढने म कमजोर थे, इसीलिए राबट ब्लेक और सेक्सटन ब्लक की किताबें पढने का शौक तेज हो गया था। ठमके कद के, लली सियाहफाम के सगे भाई डाक्टर जम्फर, गो कसरती नही थे मगर चाल और कडा पहलवानी ही था। उनका यह खयाल था कि वे स्कूल के नामी सरगनाओ मे से एक थे। उनका यह भी खयाल था कि राबट ब्लक की मदद से उनकी अंग्रेजी खालिस अंग्रेजो जसी हो गयी थी। स्कूल के मास्टर क्या हेडमास्टर तक उनके मुकाबले म अंग्रेजी नहीं बोल सकते थे बहरहाल स्कूल म उनकी उपस्थिति से, दर्जा तीन से लेकर दर्जा दस तक के लडको मास्टरो, चपरासियो तक के लिए दिन भर वरायटी प्रोग्राम चला करता था। किसी घटे म ये मुर्गा बने क्लास रूम के दरवाजे के पास कोने मे बठे नजर आते, किसी म नीचेवाली बच पर झड जसे खडे हुए। इनको सारा जमाना डाक्टर जम्फर के नाम से चिढाता था और ये अंग्रेजी म नौ-नौ बास उछला करते थे।

डॉक्टर जम्फर के पिता पर लडकी की शादी का कज था सो ये तीन हजार म एक बेटी के बाप के हाथ बेच दिये गये।

डॉक्टर जम्फर का खयाल है कि उनकी घरवाली अभागी है और घरवाली का जो खयाल है वह आये दिन पास पडोस वालो पर प्रकट होता रहता है। डाक्टर अगर अकड म बीस चढते हैं तो डाक्टरानी छब्बीस होकर बरसती हैं।

एक डॉक्टर मक्खनलाल का सहारा है। वो भी उनके जसे ही नसीब के मारे है। रोज-रोज फर्नीचर पलटते रहने की आदत से राह चलते मुहल्लेवालो मे उनका भी नया नामकरण हो गया है। डॉक्टर जम्फर के दोस्त डाक्टर फर्नीचरपलट' के नाम से मशहूर हो गये हैं। दोनो ही जमाने

से तग हैं मगर जीने स मजबूर हैं।

डॉक्टर मक्खनलाल का कपाउडर आज से करीब छह महीने पहले उनका स्टेथेस्कोप और बहुत-सी दवायें चुराकर और यो अपनी तनख्वाह वसूल कर चला गया था। साइनबोड से डिग्रिया घिस गयी थी। डाक्टर मक्खनलाल बगर हथियार के सिपाही बने दिन-रात रोया करत थे क्या करें जनाब, किस्मत का खेल है। बतलाइये स्टेथेस्कोप के बिना और दवाओ के बिना कोई डाक्टर कस प्रेक्टिस कर सकता है! अब साइनबोड पर डिग्रिया भी नही रही, फिर पब्लिक कसे मरी योग्यता समझ पायेगी? कागज पर लिखकर चिपकाता हू तो मुहल्ले वाले लडके एसे शतान है कि रोज फाड डालते हैं। अनाप-शनाप लिखकर मेरी प्रस्टिज बिगाडते हैं।

एक दिन जब घर से तनख्वाह न पाने वाले बाबू की तरह शान कायम रखने की कोशिश के बावजूद मुह लटकाय डॉक्टर जम्फर गली-दुकानवालो की फब्तिया सुनते, अग्रेजी म कभी-कभी बमकते हुए, डॉक्टर फर्नीचरपलट के मतब पहुचे तो दोनो मित्रो मे दुख-सुख होने लगा।

डॉक्टर फर्नीचरपलट ने जब अपनी आम शिकायतो का शतचडी पाठ दुहरा दिया तो डॉक्टर जम्फर भी गहरी ठडी सास निकालकर बोले हा यार, कभी-कभी तो बकौल कसे—जी म आता है कि लगा दू आग कोहेनूर म, फिर ख्याल आता है मूसा वतन हो जायेगा।'

दोनो डॉक्टरो ने साथ-साथ यह शेर पढा गोया रोजमर्राह की बेकारी देवी की पूजा का एक और कायक्रम पूरा हुआ।

डाक्टर जम्फर माथे पर बल डालकर बोले "कुछ नही, दिस वल्ड इज आल माया एड मिथ्या फाल्स, बोगस। सो बटर लीव दि वल्ड डाक्टर! आओ, हम-तुम बैराग ले ले। अब पतालीस छियालीस की उमर आयी। वी कैन बिकम सेट।"

डाक्टर फर्नीचरपलट ने रोज की तरह इस प्रश्न का जवाब दिया "हा दोस्त, अब तो मेरे दिल मे यही लगन है। बस मैंने तो अपनी तकदीर को अब सिरिफ छ महीने की मोहलत और दी है कि चेत वरना मक्खनलाल बराग लेता है।"

फिर लाटरी की चरचा चली सपने वधे, 'अरे कभी हमारी वेरी म भी फल लगेगे।' इस कहावत के साथ दनिक नियम और सधा।

इस तरह वाता म हमेशा की तरह दिन वीता रात आयी। दोना डाक्टर साथ-साथ चले। डाक्टर फर्नीचरपलट पतलून म हाथ डालकर और डाक्टर जम्फर छडी हिलाते हुए।

घर के दरवाजे पर पहुचत ही डॉक्टर जम्फर अपनी तमाम अकड वटारने लगे। अकडकर आवाज दी, 'कुडी खोलो।"

दरवाजा खुलत ही घरवाली वरस पडी—'क्या जी, तुम झूठ बोलते हो! तुमने पाच रुपये ठगने क लिए इतना वडा जाल रचा? मुझे सव मालूम हा गया है तुम डाक्टर फर्नीचरपलट के यहा दिन भर वठे रहत हो ।

'यू आर रिगरेटिंग मी स-नो की अम्मा! यू काल माई फ्रेंड इन वागम नेम्स। मैं आज ही वराग न लूगा।'

खूव गर्मागर्मी हुई। मुहल्ले भर ने जाना। लडाई यहा तक हुई कि डाक्टर जम्फर घर स निकल आय। घरवाली ने तश म फटाफट दरवाजे वद कर लिय।

कही और जगह न पाकर डाक्टर जम्फर ने डॉक्टर मक्खनलाल के मतव के चवूतर पर एक रात का कडकडाता हुआ स यास लिया, फिर सवेरे वेशम वनकर घर पहुच गय। और अव तो यह वशर्मी भी रोज-मर्राह वन चकी है।

ठठाई-सम्राट कहलाने से जो हम ठा नहीं सरनावें !

ना क गहरे न । म इस स्वाम पर हम जितना ही अधिक गौर करने गये उतनी ही हमारी आस्था भी बढ़ती गयी । हम यहां तक कि जो आस्था हम इस व्यापार योजना में मिल रही है, वैसी किसी साहित्यिक योजना में अब तक मिली ही न थी । अस्तित्ववाद नाटयनवाद, रस सिद्धांत पूजावाद आकतनवाद नारतीय सस्कृतिवाद, आदि हर दृष्टि से हमारी यह दुकान-योजना ठोस थी । इसलिए मन पक्का करके हमने अपने लड़कों को बुलाकर अपने मन की बात कही । छोटा बोला, बाबू जी मैं तो सपने में भी यह कल्पना नहीं कर सकता था कि आप दुकानदार बन सकते हैं !

हमने आस्थायुक्त स्वर में उत्तर दिया बेटे यथार्थ सदा कल्पना से अधिक विचित्र रहा है । जहां इच्छा है वहां गति भी है । जवाहरलाल नेहरू का एक वाक्य है कि सफलता प्राय उन्हीं को मिलती है, जो साहस के साथ कुछ कर गुजरते हैं कायरों के पास वह क्वचित ही जाती है ।'

बड़े बेटे ने कहा 'आप अब जो भी मान लें लेकिन यह धाना नहीं लगता बाबू जी ! यदि अपनी नहीं तो कम से कम हम लोगों की बदनामी का ही खयाल कीजिए ।

हमने तुर्की-चतुर्की जवाब दिया तुम लोगों की यह आबरूदारी की सोच निहायत पेटी बुजुआ किस्म की है । हम पर आती हुई छमाछम ल मी को देख रहे हैं । तुम लोग यह क्यों नहीं देखते कि दुकान की सफलता के लिए हमारी साहित्यिक गुडविल पान और भंग रसिया होने के संबंध में हमारी अनोखी किंवदंतियां मेरी ख्याति कितनी लाभकारी सिद्ध होगी । चार-पांच हजार रुपये महीने से कम आमदनी न होगी । तुम लोग चाहे कुछ भी कहो हम यह दुकान जरूर खोलेंगे । हजार-दो हजार की लागत में लाखों का नफा । हम यह अवश्य करेंगे ।

लड़के बेचारे हमारे आगे भला क्या बोलते ! उठकर चले गये और जाकर अपनी मां के आगे रस फूंका । तांबे के गागर की तरह लाल-लाल दनदनाती हुई वह हमारे कमरे में आयी और बोली, ये दूकान खोलने की बात आखिर तुम्हें क्यों सूझी ? '

'पैसा कमाने के लिए।"

'पैसा तो खाने-भर का भगवान दे ही रहा है।'

"हमें ऐश करने के लिए पैसा चाहिए।"

"इस उमर में! अब भला क्या ऐश करोगे? जो करना था, कर चुके!"

"ऐश का अर्थ सिर्फ औरत और शराब ही नहीं होता देवी जी! हम कार, बंगला, रेफ्रिजिरेटर, कूलर और डनलापिलो के गद्दे चाहते हैं। प्राइवेट सेक्रेटरी हो, स्टेनोग्राफर हो हाजी-हाजी करनेवाले दस नौकर हाथ बांधे हरदम खड़े रहें तब साहित्यिक की वक़त होती है आजकल। साले पेटभरू चप्पल चटकाऊ साहित्यिक का भला मूल्य ही क्या रह गया है, भले ही वह तीस नहीं एक सौ तीस मारखां ही क्यों न हो! हम पूछते हैं, क्या तुम्हें चाह नहीं होती इस वैभव की?'

पत्नी शांत हो गयी, गंभीर स्वर में बोली "जब मुझे चाह थी, तब तो तुम यह कहते थे कि साहित्यकार का वैभव साहित्य होता है "

'वो हमारी भूल थी। सोशलिस्ट विचारों ने हमारा दिमाग खराब कर दिया था।"

'पर मैं तो समझती हूं कि तुम्हारी वह दिमाग-खराबी ही बहुत अच्छी थी।"

"तुम कुछ भी समझती रहो, पर हम तो अब पैसेवाले बनकर ही रहेंगे।'

बनो जो चाहो सो बनो पर कान खोलकर सुन लो मैं इस काम के लिए एक कानी कौड़ी भी न दूंगी इस रायल्टी की रकम में से। पत्नी अब तेज हो चली थी।

हमने भी अकड़कर कहा, न दो, हम एक नया उपन्यास लिखकर एडवांस रॉयल्टी ले लेंगे।'

जो चाहो सो करो। जब अपनी बनी तकदीर बिगाड़ने पर तुल ही गये हो, तो कोई क्या कर सकता है? छि रुपये की दो अठन्नियां भुनाना तो आता नहीं, बिजनेस करेंगे ये!' पत्नी तैश में आकर बड़बड़ाती हुई चली गयी और बरामदे में खड़ी होकर गरजने लगी 'ये बिजनेस करेंगे।

अरे गार वरा पहा नरेंद्र जा रा ६ पर्चि । र आया था । जितना छोटा था तब यह, फिर भी गल ही गल म इकान जब उसने कहा कि हम-तुम साझे म पान की दुकान खाल नें तो वह बोला, 'नहीं चाचा जी, आपके साथ साझा करने म घाटा हो जायगा ।' सारे पान और मगता य और इनके यार-दोस्त ही गटक जायेंगे। न य अपना आन्तें छोड़ सकते हैं और न मुहब्बत। बिजनेस करेंगे मेरा रगान !"

कविवर नरेंद्र जी की रट थी वात ध्यान म आ जान म गुस्से का चढ़ाव न चाहते हुए भी थमता नगा । यह तो झूठ नहीं कि ढेठाई और पान क शौक म एस बहुत स परिचित मित्र हमारी दूकान पर रोज आ जायेंगे जिनसे पैसा वसूल करना हमारे लिए टेढ़ी खीर हो जायगा। सोचा कि घरतिन ठीक ही कहता है इस धंधे म घाटा होने की संभावना ही अधिक है । फिर धीरे धीरे मन यहा तक मान गया कि हम न तो धंधा करने के योग्य हैं और न काई नौकरी हो चाहे वह बढ़िया या ना ही क्या न हो । अपनी अयोग्यता और अनाड़ीपन पर झुंझलाहट होने लगी ।

दूसरे दिन इतवार था। इतवार औरों के लिए छुट्टी और हमारे लिए सिर दर्द का दिन होता है। अभी घड़ी म पूरे-पूरे साढ़े सात भी न बजे थे कि बेटी ने आकर मोहल्ले के कुछ रसिकों के पधारने की सूचना दी। हमने सोचा कि शायद मध्यावधि चुनाव के सिलसिले में किसी उम्मीदवार के नाम का प्रस्ताव लेकर आये होंगे । इस विचार ने मन को स्फूर्ति दी । सोचा इस बार हम क्यों न खड़े हो जायें । पान की दूकान न सही, नेतागीरी सही इन दोनों ही धंधों की आमदनी सदा इनकमटैक्स विभाग वालों की पकड़ से बाहर ही रहती है। इस विचार से एक बार फिर आस्थारूपी जीवन मूल्य की उपलब्धि हुई।

तब तक हाथ में अपना हुक्का उठाये हुए बड़े बाबू, लल्लो बाबू, पत्तो बाबू, सत्तो बाबू सुन तो बाबू वगैरह-वगैरह ढब-ढब्बू नामों के चार पांच शिष्टजन पधारे । बड़े बाबू आते ही बोले, 'पंडित जी, गली वाली नाली देखी आज आपने ? गंगा गोमतिया फलड़ियाया करती थी, अब साली नाली म फ्लड आता है । ये जमाना है, ये गवरमेंट है साली !'

"अजी परी गावरमिंट हे साहब, राज भी गावरनर का है। हम तो कहते हैं कि इस बार मध्यावधि चुनाव म इसे पूरी तरह से बदल डालिए।" अपने भावी वोटर भगवान को जोश दिलान की कामना से हमने जरा नेता मार्का नाटकीय अंदाज साधा।

'कहते तो आप ठीक ही हैं पंडित जी, मगर मध्यावधि चुनाव म अभी चार-पाच महीने पडे हैं, आप तत्काल की बात सोचिए। कार्पोरेशन मे किसी बडे अफसर को फोन वोन करके य गदगी ठीक करवाइए जल्दी म, अंदर से मेनहोल उबल रहा है। बडी बदबू फल रही है बाहर।'

खैर, किस्सा कोताह यह कि मेयर, डिप्टी मेयर, हेल्थ अफसर आदि को फोन करके हमने मेहतर दल को बुलाने मे सफलता प्राप्त कर ही ली और उस सफलता के तुफैल म हमने भावी चुनाव म खडे होने का इशारा भी फेंक दिया। चार दिन म धूम मच गयी कि हम खडे हो रहे हैं।

पत्नी फिर सामने आयीं, वोली, 'इलक्शन लडोगे ?"

'हा, अब मिनिस्टर बनने का इरादा है।"

'पसा कौन देगा ?

हमने कहा, "बुद्धिजीवी जब अपना ईमान बेचता है तो पसा की कमी नही रहती।"

तभी लडके आये, उ होने पूछा, 'आप किस पार्टी से इलक्शन लडेंगे ?"

हम बोले, "इस समय तो हमारी गुडविल ऐसी जबरदस्त है कि सभी पार्टिया हमें टिकट देना चाहती है।"

बडा वाला, "मगर इस समय तो इन सब पार्टियो की साख गिरी हुई है। इनम से एक भी पूरी तरह सफलता नही पायगी।"

हमने कहा, "सही कहते हो। हम बुद्धिमत्ता से काम लेकर अपनी पार्टी बनायेंगे।'

"आपका मेनिफेस्टो क्या होगा ?"

हम गौर करने लगे। अपना स्वार्थ साधने के लिए ऐसा मेनिफेस्टो बनाना चाहिए जो औरो से अलग लगे और साथ ही पैसा मिलने के

साधन भी जुट जायें। हमने कहा, 'देखो, इनमे से कोई भी पार्टी इस बार बहुमत नहीं पायेगी। क्योंकि जनता सबमे अपना विश्वास खो बैठी है। और यहा के सेठ हमे पैसा भी नहीं देंगे, क्योंकि इनमे से कुछ कांग्रेस के साथ हैं और कुछ जनसंघ के। इसलिए हमारा पहला नारा यह होगा कि भारत के जिन जिन प्रदेशों मे इस समय मध्यावधि चुनाव हो रहा है उनमे स्थायी शांति और सुशासन लाने के लिए हम बरसों तक पाकिस्तान अमरीका और ब्रिटेन का सम्मिलित राज होना चाहिए। इसमे हिंदू-मुस्लिम एकता और स्थायी शांति बढ़ेगी तथा इन तीनों की तरफ से मुख्यमंत्रित्व का भार हम सभालेंगे। इस त्रिदेशीय फार्मूले से हिंदुस्तान और पाकिस्तान के सारे मसले हल हो जायेंगे। इस तरह देश की पूर्वी और पश्चिमी सीमाओं पर निःशस्त्रीकरण की नीति को अमल मे लाने के लिए एक रास्ता खुल जायेगा।

'ठीक। और क्या होगा आपके मैनिफेस्टो मे ?

विचारों की रोशनी से हमारी आखें सहसा चौंधिया उठीं। हमने फौरन अपना धूप का चश्मा चढ़ा लिया और गंभीर पैगंबरी स्वर मे कहा 'हम अपरिवर्तनवाद का सिद्धात चलायेंगे—हिंदू हिंदू रहे और मुसलमान मुसलमान। इन्हें एक भारतीय समाज हरगिज न बनने देना चाहिए, हम एक और अखंड भारत के खिलाफ हैं।'

और भाषा !

''भाषा का भूमि और संस्कृति से कोई संबंध नहीं। पाकिस्तान, अमरीका और ब्रिटेन मे से जो हमारे इलेक्शन का खर्च उठाने को राजी हो जायगा उसकी भाषा का समर्थन करेंगे। बस अपनी जनता की सुविधा के लिए हम अंग्रेजी को भारत की राष्ट्रभाषा

क्या कहा ? अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाओगे ! अपने स्वार्थ के लिए हर झूठ को सच बनाओगे ?

पत्नी के तेह पर हमने अपनी बौद्धिक मायावी हंसी का गुल खिलाया और कहा, अरी पगली नेता और वकीलों की सफलता ही इस बात पर निर्भर करती है।

झाड़ू पड़े तुम्हारी नेतागीरी पर। मैं आज से ही तुम्हारा खुला

विरोध करूँगी।"

"अरे, पूरी बात तो सुन लो। देश म इस वक्त अन्न की कमी है " हम वाले, तो पत्नी ने बात बीच म काट दी, "तुम्हें कौन खाने-पीने की तकलीफ है जा "

हमसे आग सुना नही गया। हमने अपना तहा दिखाया, "ज्यादा बक-बक मत करा ज्यादा बात करने स भूख भी ज्यादा लगती है जब तक भारत म औरतो के मुह पर पटटी नही बाध दी जायेगी तब तक अन्न समस्या हल होनेवाली नही है। अन्न मगवाने के लिए हमने तय किया है कि एक टन गहू के बदले म हम एक नेता उस देश को सप्लाई करेंगे, जो हम अन्न देगा। वह सौ टन गहू देगा हम सौ नेता उसे देंगे। वह हजार दगा तो हम हजार देंगे।'

पत्नी मुह बाये सुन रही थी। मौका देखकर हमने और खुलासा किया, 'हमारी पार्टी भ्रष्टाचार को शिष्टाचार के रूप म मजूर करती है, बगर तकल्लुफ के कही राज चलत है ? घूसखोरी का तकल्लुफ हमारे राज मे बराबर बरता जायेगा। रोजी-रोटी मागने वाला की खाल खिचवाकर बाटा वाला को सप्लाई की जायेगी, ताकि रूस से आनेवाली जूतो की माग पूरी की जा सके।

"गीता का यह श्लोक हमारा सिद्धात वाक्य होगा और नारा भी

स्वधर्मे निधन श्रेय परधर्मो भयावह।'

"दकियानूसियो ने इस श्लोक की रेढ करके रख दी है। हम इसका सीधा, सरल और सही अथ अपनी धमप्राण जनता को समझायेंगे।"

"क्या ?" पत्नी ने बिफर के पूछा।

"अरे भाई, सीधी-सी बात है। हर आदमी का अपना-अपना धम है। चोर का धम चोरी करना, डकैत का डाका डालना, बेईमान का बेईमानी करना, इसी तरह गरीब का धम है गरीबी और अमीर का अमीरी। गरीब को अमीर का धम अपनाने की छूट नहीं दी जायेगी और न अमीर को गरीब का धम अपनाने की। हम इस धम-परिवतन के सख्त खिलाफ हैं। इस धमवादिता से जनसघ के समथक भी हमारी पार्टी म आ सकते हैं "

[illegible]

कृपया दायें चलिए एक घोषणा-पत्र

पत्नी हमारे विरुद्ध प्रचार करने लगी हैं। हमारा चुनाव का सपना डांवाडोल हो रहा है और जनता के क्रोध से बचने के लिए हम इस समय बंबई भाग आये हैं। क्रोध में बराबर यही बात मन से फूटती है कि सत्यानाश हो इस जनता का, जो हमें नेता नहीं मानती।

देश-सेवा शाह मदारों की

कुछ बरसों पहले की बात है, जस आज वस ही उन दिनों भी उत्तर प्रदेश के पिछड़ेपन पर हमारे अखबारी मदानो म मब टोपी मार्का नेताओ के घडियाली आसुओ का सलाव उमड पडा था, जहा देखो, जिस देखो वही उत्तर प्रदेश को उल्टा प्रदेश और पिछडा प्रदेश घोषित करने के लिए गले फाडफाडकर चीख रहा था। इन्ही दिना जमीन-जायदाद के दलाल मुशी गुरसहाय कुदसिया अपने मुहल्ले के महापुरुष यानी नगरमहापालिका के सदस्य और बडे इमारती ठेकेदार पडित गर्जेंद्रनाथ सड की मवा मे एक दिन डलिया-भर गोभियो का तोहफा लेकर पहुच गये और पर छूकर हाथ जोडकर कहा, "बाबू जी, आप हमारी पिछडी पब्लिक के लीडर और महापुरुष हैं ऊपर वह नीली छतरीवाला है और नीचे बस आपका ही सहारा।"

अनुभवी नगरपिता न उदीयमान नगरपुत्र को एक बार गौर से देखा और फिर हुक्के की निगाली की तरफ अपना मुह वढाते हुए पूछा, 'तुम तो वकील साहब के लडके हो ना ?"

"जी हा, बाबू जी, पर इस वखत तो आप ही हमारे 'तुमव माता च पिता तुमेव' हैंगे। हमारे वाड का पिछडापन बस आप ही से दूर हो सकता है।'

हुक्का गुडगुडाते हुए सड जी ने मुशी कुदेसिया को कनखो से देखा, फिर पूछा, 'कोई इस्कीम लाये हो।"

'इस्कीम तो बाबू जी आप जसे महापुर्षों के दिमाग से ही उपज सकती हैं, हम छोटे लोग तो छोटे-मोटे आइडियाजो तक ही उडान भर पाते हैं।'

मुशी जी की विनय पंडित जी को आगम निगमो के समान मन भरी लगी, पूछा, 'और ये गोभियां ?'

मुशी जी ने हाथ जोडकर त्रिपुटी में ध्यान लगाने वाली अदा के साथ कहा 'ये—ये भगवान का साक्षात औतार है बाबू जी !"

सेठजी की धार्मिक भावना को धक्का लगा त्यौरी चढ़ाके कहा, "क्या बकते हो !'

बच्चा हूं आपका दो जूते लगा लीजिए तो भी चुप रहके ही मेरा गुजारा होगा बाबू जी ! पर यह मेरी धरम बुद्धी से निकला हुआ भाव है। आज तीन-तीन बरसो से प्रतक्ष अपनी आखो से देख रहा हूं कि जब गोभी के फूल उगने लगे तो कब्रिस्तान में पुरानी कबरें लोप होने लगीं।'

घाघो के घाघ पंडित जी मुशी जी की यह उलटबासी सुनकर मन ही मन में उलट गये। सोचा लडका बडा कायथ खोपडी है। थाह नहीं देता। उन्होने नेताशाही ढंग से डपटकर पूछा तुमने अल्पमत वालों के पवित्र अस्थान को क्या नाम के इस तरह से नष्ट कर डाला, क्या नाम के ! बिचारे मुसलमानी मजब के जमदूत कयामत के दिन जब रूहें खोजेंगे तो यहा उन्हें कबरें ही नहीं मिलेंगी। धिक्कार है तुम्हारी स्वार्थपरता को क्या नाम के !' इस डाट-डपट में एक डिप्पी और आगे बढके कोई सख्त धमकी देने की लहर भी उनके मन में उठने उठने को हुई पर दबा गये, सोचा स्कीम सुन लें पहले।

पंडित जी तो यों गुर्राते भिडाके डपटते रहे और मुंशी जी संत सूरदास की तरह आखें बंद किये हरिस्मरण करते रहे। पंडित जी के चुप होते ही हाथ जोडकर कहा बाबू जी आपका बच्चा हूं अपने धरम से गाफिल नहीं पर सोसायटी में सिक्यूलर हूं। कब्रिस्तान को गोभी का खेत बनाने का आइडिया भर मेरा था बाकी सारा काम मन्कचोगज और खुर्रमारखा के होते वाले गरीब मुसलमानों ने, या कहिए कि उनके पापी पेटों ने किया है। औ रही रूहों के हिसाब की बात तो बाबू जी, जमीन से जितने अस्थी फूल निकले वो सब मैंने नदी में बहा दिये जिससे कि रूहें सीधे भगवान के लंगरखाने में ही जा के बस जायें, फरिश्तों को उन्हें ढूंढ़ने में तकलीफ हो न हो। मेरा मतलब यह कि किसी भी धरम की

आस्था म काम किया जाये, अगर धरम है तो राम-रहीम एक हो जाते हैं। पिछड़ापन दूर "

"अच्छा, अब मतलब की बात पर आ जाओ झट से। हमारे पास टाइम की कमी हगी क्या नाम के।"

'बाबू जी मतलब बस इतना ही है कि हमारा पिछड़ापन दूर कीजिए और ये वरदान दीजिए कि इस म्रित्तूलोक मे फिर से नयी आबादी बस। वो पाच एकड़ जमीन आपके नाम स हो जाये और मेरा भी हाता और खेत-वेत मिलाकर कोई दस बारह एकड जमीन वही है।"

"तुम्हारी जमीन "

"जी वो खुदायार खा का हाता जो है ना, वो सन फोर्टी सेविन के साल से मेरे नाम ही है। शब्बीर मिया की फेमिली के लोग जब एक के बाद एक गायब होने लगे तो मेरे कान ठनके। आप जानिए कि उन दिनो म बचपन की नादानी म कम्यूनिस्ट था सो पिछड़ी बस्ती मे अनाज-बटटा उगाही रूभाही करता था और यूनियन का काम भी करता था। मुझे वहा का सब पता था। खर तो किस्सा कोता यह कि हाता और गोभी गार्डेन के बाद वाला दो एकड़ का फारम तब से मेरे नाम पर है। अब इन गोभियो को देखकर ज्ञान जागा कि इस जमीन म छोटे-छोटे प्लाट बन जायें और हायर पर्चेस सिस्टम पर अपने बाबू क्लास वालो के लिए फ्लट बन जायें तो जगल म मगल हो जाये। गुरु गजिंदर कालोनी बस जाय।"

कालोनी की स्कीम बनी और नगरपिता सडजी के प्रभाव से महा-पालिका ने पास भी कर दी, पर उसका नाम गुरु गजेंद्र कॉलोनी के बजाय गजेंद्र नगर हो गया। मुशी जी को बहुत दुख हुआ था। उनके बरसा के सपने पर लात पडी थी। इससे बडी चोट उन्हें तब लगी जब उनकी पत्नी गुनकली देवी मुहल्ले म कही से यह सुन आयी कि सडजी की पत्नी ने यह कहा कि उनके जसे बडे आदमी और ऊचे ब्राह्मण के साथ किसी कुदेस की कायथ खोपडी का नाम भला अमर हो सकता है। सुनकर मुशी जी बाल इस साड के सीग न तोडे तो कायस्थ नही, चमार कहना।'

खर होगा। उन्होंने हमारी जात को नीच कहा तो अपनी ही

नीचता दिखलायी। अब अपने मुहँ से हम किसी और जात को नीच क्यों कहें। अपने प्लाटों को तुम ज्यादा से ज्यादा कायस्थ भाइयों में ही बेचो। वो ब्राह्मणों का हमारे प्लाटों में न भरने पायें समझे।"

मुंशी जी बोले 'गुनमनी, तुम्हारी पहली बात ठीक है, उन सांड के सींग तोड़ने के लिए मुझे नियुमरिज्म के रॉकेट पर सवार होना पड़ेगा। मुनाफावाद जातिवाद से बड़ी चीज है। उधर के कुछ खेतों की जमीन भी मेरे पास आने वाली है। मैं चाहता हूं ऐसे लोगों का बसाऊं जो नये पैसे वाले हों और अब आबरूदार बनना चाहते हों। कायस्थ, खत्री, ब्राह्मणों का हाल एक ही जैसा है सबके सब नौकरीपेशा। बनियों का सूरज भी दोपहरिया पर आ गया समझो। इनके लड़के भी अब पढ़ लिख के अफसरी की नौकरी पाना चाहते हैं। पसा दूधवाला हलवाई, तमोली चिकवे मनिहार और सब्जीफरोश कबाड़ियों में बढ़ रहा है। इनके पतलूनबाज नौनिहालों को पटाऊंगा कि सड़ी गलियां छोड़कर बंगलों में रहो। इससे दो फायदे होंगे एक तो ये लोग सडजी की पंडिताई अच्छी तरह से छाटेंगे दूसरे आगे अपनी इंडस्ट्री की स्कीम में उनका पैसा मैं आसानी से लगवा सकूंगा। मुझे अपना पिछड़ापन दूर करना है रानी। पैसेवालों की जाति ही अब सबसे बड़ी जात है।'

मुंशीजी अपने स्कूटर पर घूम घूमकर ऐसे ही असामियों में कनवसिंग करने लगे। इसमें वे इतनी तेजी से सफल हुए कि सडजी जब अपने उच्च वर्णोंवाले ग्राहकों को जमीन दिखलाने के लिए लाने लगे तब तक कुदेसियाजी अपने आधे से अधिक प्लाटों का सौदा पटा चुके थे।

यह देखकर सड जी प्रचंड बने। मुंशी जी को बुलाकर डपटा, 'गुरसहाय, तुम एग्रीमेंट की शर्त तोड़ रहे हो।'

मुंशी जी ने बड़े भोलेपन से पूछा कौन-सी शर्त पंडित जी?

'कस्टमरों से तुम डायरेक्ट बात नहीं कर सकते।"

'ये तो पंडित जी, एग्रीमेंट में कहीं लिखा नहीं है।

'बिजनेस में जबान की साख होती है।'

"ठीक है मगर, ऐसी बात भी हमारे बीच में नहीं हुई—न आपसे न सुरेंदर से। मैं प्लाट हैं बेच रहा हूं। आपके कब्रिस्तान का सौदा तो कर

नही रहा।"

"तुमने मुझे बाबू जी-बावजी करके पहले तो फसाया और अब चकमा देते हो। इस कॉलोनी म क्या अहीर चमार और नीच कौम के मियटें "

"पडित जी, आपकी ये बातें आपके वोटरो मे अगर अभी से फलने लगें तो क्या आप अगला चुनाव जीत सकेंगे ? मैं तो जनाव, यह जानता हू कि आदमी को सिक्यूलर होना चाहिए। गाधी, विवेकानद और बादशाह खा, जमाने की तीन महान-उल महान हस्तियो का यही उपदेश है। इनमे भगवान ने एक को बनिया, दूसरे को कायस्थ और तीसरे को मुसलमान बनाके भेजा। ब्राह्मणो का भाव अल्लामियां के यहा भी घट गया है। पिछडे समय और पिछडी जातियो को भगवान भी नही पूछते हैं पडित जी ! खर तो पालागन।" कहकर मुशी जी उठे।

उनकी बातो मे पडित जी का चेहरा तमतमाया तो जरूर पर उन्हें उठते देखकर सभलें, कहा, 'सुनो-सुनो, तुम तो अपना जातिवाद फलाके चले, मगर मेरी भी सुन जाओ। प्लाट, खैर, अपनी मर्जी स बेचो। मगर कस्ट्रक्शन सड एड सस "

"जी, हमारे कस्टमस मे बहुतो की राय मे कस्ट्रक्शन का काम गुरसहाय चेलाराम कबाइड कट्रक्टस से कराना चाहिए।"

सुनकर पडित जी का ब्रह्म तेज एकदम शात हो गया। वश्यनीति का अनुसरण करके चट से खीसें निपोरने लगे। बोले, "भैया, कॉलोनी के नाम के फेर म हम तुम्हारे इतने पराये हो गये कि उस पराये सिंधी कैपिटलिस्ट स समझौता कर रहे हो। हम तुम्हारे पिता को हर्रो भाई कहते थे। हमारा तजुर्बा कहता है कि अगर साप और सिंधी एकसाथ मिलें तो पहले सिंधी को खतम करना चाहिए।"

मुशी जी ने दार्शनिको जसा गभीर मुख बनाकर कहा, "पडित जी, आपकी ये बातें नेशनल इटीग्रेशन की पालिसी के खिलाफ हैं। दूसरे कथा बाचना या तो आप लोगो का काम है, पर इस सम मुझसे सुन लीजिए कि एक बार, एक कारे नाऊ ने कठोर तप करके शिवजी को खुश किया और उनके परगट होने पर उनसे कुछ बडे छत्तीसे किस्म का वरदान मागा। भगेडी भोलानाथ उसके जाल म फसने ही वाल थे कि उनके

मुण्डमाल में से एक मुण्ड ने उनसे कहा कि भगवान मैं अलग करें। भगवान सम्भल गये। कुछ दूसरा वरदान देके नाऊ भगत का बिदा किया और अपनी माला में उस मुण्ड से पूछा कि क्यों बे, तू कौन है? उसने कहा कि भगवान, मैं कायथ खोपड़ी हूं। सो आप बेफिकर रहिए, मैं भी तो बकौल आपके कायथ खोपड़ी ही हूं। यू० पी० ही नहीं पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा, द्राविड़, उत्कल बंगा—किसी से भी अपनी खोपड़ी लड़ सकती है।

नहीं-नहीं मैंने तुम्हारे लिए ऐसा कभी नहीं कहा। मैं तो जातिवाद के घोर खिलाफ हूं। प्रगतिशील हूं। देखो, ब्राह्मण हो के दूसरा पीता हूं। कॉफी हाउस में सालवगी बेरों के हाथ की काफी पीता हूं और तुम बच्चे हो, क्या कहूं जवानी में क्या नाम के मुसलमान रंडी के साथ बैठके शराब-कबाब भी—मतलब यह कि मुझमें जरा भी जातिवाद नहीं। किसी दुश्मन ने तुम्हें भड़काया हैगा बेटा!"

खैर, तो फिर झगड़ा ही नहीं रहा।

तुम्हारे नाम से कॉलोनी में एक पार्क जरूर बनेगा।'

'ठीक है जब आपका हुक्म है तो अपने नाम का एक संगमरमर का पत्थर खुदवाय लेता हूं। चेलाराम के लिए आपकी सलाह नहीं है तो तिवारी ब्रदर्स से ही सौदा कर लूंगा।"

पंडित जी दुष्ट कायथ खोपड़ी की इस बात से मन में भड़क पर मुंह से मिठबोल ही रहे, कहा, 'भई तिवारी जी हैं और तो सब ठीक है, पर कनौजिया में अकड़फूं बहुत होता है।

तो टकम प्राइवेट लिमिटेड।"

"नया सत्री मित्रम कभी न मित्रम जब मित्रम तब दगा ही दगा' सुना होगा न। और एक बात और समझ लो, ये मेरा जातिवाद नहीं, बल्कि सोशल साइकॉलोजी का तजुर्बा है। मुझको नुकसान पहुंचाकर तुम इनमें से किसी के साथ भी कॉलोनी नहीं बना सकोगे।'

"अच्छा ये किंगरन ब्रदर्स तो आपके रिश्तेदार हैं। इनका काम!"

"दस पीढ़ियों ने पोथी-पत्रा बांच के गुजारा किया। लड़का अमरीका से आर्किटेक्ट क्या बन आया कि हम पुराने रईसों से होड़ लेने लगे। रिश्तेदार नहीं, दुश्मन हैं मेरे!" पंडित जी गरमा गये।

"तो ठीक है, किसी दूसर शहर मे "

देखा गुरसहाय, बडी सडक से कॉलोनी को जोडने वाली सडक का नाम भी मैं गुरसहाय माग रखवा दगा। अव मेरी लाज रखा। ये मरी फम की पहली कालोनी बनेगी। तुम्हारे प्रस्ताव पर हम इसीलिए तो उत्साह आया था। आपस के झगडे स बुढापे म मरी साख गिर जायेगी।' कहते हुए उनकी आखो म अ.सू झलझला उठे।

मुशी गुरसहाय ने हाथ जोडकर कहा 'अगर यह बात है बाबूजी,तो मेरी तरफ से अब कोई आपत्ति न होगी। मैं खाली एक शत लिखा-पढी के साथ चाहता हू। इस कालोनी के निमाता को मुझे नफे मे छह आने '

"छह आने ? भई, ये बिजनस की बात नही है गुरसहाय !

"आपका चेलाराम का ऑफर दिखलाऊ ? कागज इत्तफाक से मेरो जेब मे ही है।" कहते हुए जेब से चेलाराम कपनी की चिट्ठी निकालकर सामने रख दी। पडित जी निस्तेज हो गये, खिसियाये स्वर मे कहा, 'मुझे तबाह करन के लिए चेलाराम तुम्हें फिफ्टी-फिफ्टी की पाटनरशिप भी दे सकता था। खैर, इस बखत तुम्हारे ग्रह-नक्षत्र उच्च के चल रह है, जो कहोगे मान लूगा। मगर बात है, अपन प्लाटो पर तुम्हें नफा न दूगा चाहे सौदा टूट जाय।"

'ग्रह नक्षत्रो की बात ही नही बाबू जी, यह तो पिछडापन दूर करने की बात है। आप सिंधी चेलाराम से और सुजातीय झिंगरन ब्रदस स पिछडे है और पिछडना नही चाहत। मेरा भी यही हाल है। पिछडे हुए लोग अगर आपस म यो ही सहयोग करके चलते रहें तो सबकी उन्नति हो जायगी। और वो कब्रिस्तान तो मैंने आपको प्रेजेंट किया है। उस पर आगे नफा छोडता हू। अच्छा तो फिर आप एग्रीमट कर लीजिए।'

इस लिखा पढी की बात जब पडित जी के कर्त्ताधत्ता बेटे सुरेंद्र न सुनी ता पहले चट से चेलाराम के शहजादे से पूछताछ की। मालूम हुआ कि गुरसहाय और चेलाराम म कभी कोई बात नहीं हुई। न कोई लिखित आफर ही उन्हे भेजा गया है। यह सुनकर सुरेंद्र सड अपने बाप का लाललूगा मानकर साड की तरह उनकी ओर झपटा "मैंने आपसे कितनी

बार कहा पापा जी कि अब बिजनेस के मामले में दखल देना बंद कीजिए। आपका दिमाग सड़ गया है। आप जातिवाद की पॉलिटिक्स से ऊपर उठकर कभी सोच ही नहीं सके और गुरुघंटाल [illegible] हुआ पॉलिटीशियन है।'

बेटे की गन्दी डाँट से अधिक पंडित जी को इस बात पर लज्जा आ रही थी कि कायस्थ गाजद्दीन ने उन्हें पोंगा ब्राह्मण सिद्ध कर दिया। अपने पागलपन का खिसियान मिटाने के लिए उन्होंने सुरेंद्र से कहा, 'अच्छा बहुत हुआ। गलती मनुष्य से ही होती है। अब मैं भी अपना प्लान बताता हूँ। वहाँ अब तुम्हारे बाबा के नाम से योगी नगर मार्केट बनेगा। [illegible]ल्नी के बनाने पर का नक्शा मॉडर्न बनाऊँगा। लग रहा इधर की पब्लिक फिर गंज में गंजी करता छोड़कर यहीं आयेगी। जिसके हाथ में मार्केट है वह राजा है।'

सुरेंद्र ने संतुष्ट होकर कहा, 'हाँ, मार्केट का विचार अच्छा है, लेकिन कॉलोनी के नाम में

फ्लैट्स कराने में पास करा लूँगा। तब तक किसी को काना-कान खबर न हो। मार्केट के साथ एक सिनेमा और एक कॉफी हाउस भी स्कीम में पास कराऊँगा। अच्छी पार्टियाँ फलेंगी।

ठीक है और एक मंदिर भी बनना चाहिए पापा जी!' 'लेकिन उसे पापुलर और प्रॉफिटेबिल बनाने के लिए कुछ चमत्कार जरूर करना होगा। एक अदद शिवजी और एक अदद हनुमान जी किसी उजाड़ मंदिर से लाकर पहले से ही जमीन में गड़वा दूँगा। नींव डलवाते समय मूर्तियाँ निकलने से लोगों में धार्मिक भक्ति भाव उमड़ेगा। कब्रिस्तान के भूतों का भय भी जनता से दूर हो जायेगा।'

पंडित जी गदगद हो उठे, कहा, 'वाह मेरे बेटे, तू सच्चा ब्राह्मण है।'

'ब्राह्मण-ब्राह्मण कुछ नहीं। मैं मॉडर्न जातिवादी हूँ। अब जातियों को सती की तरह नहीं, वेश्या बनाकर एक्स्प्लॉइट करने का युग है, अपनी जाति का पहले सोचिए। मार्केट का नाम मेरे बाबा-वाबा पर नहीं मुसलमानी होना चाहिए जिससे सब मामला सेक्यूलर लगे। बादशाह सा मार्केट या आजाद मार्केट।'

'हाँ, सेक्यूलर नाम रखना है तो अपने ही यहाँ के किसी धनी

देना । वहा से गरीब गुरबा को बस्ती उजाडो और अपना बाजार फैलाओ।

मुशी जी खुश हो गये ऐ है गुनकली तुम तो असली डार्लिंग हो!"

गुनकली खुश होके बोली 'अरे अभी कहा जब मै तुमसे अपने नाम का कोल्ड स्टोरेज खुलवा लूगी तब कहना ।'

मुशी जी की आखें चमक उठी। कलेजा तर हो गया। पत्नी को झपट कर सीने से लगाया और कहा "अरे तब तो तुम्हें मै डबल असली डार्लिंग कहूगा प्यारी! ऐ है क्या बनिया ब्रेन दिखाया है तुमने इस वक्त कि जी खुश हो गया। भई मानना पडता है कि आजकल हमारे समाज का हर आदमी हर छोटी-बडी जात के संस्कार अपने खून मे समेटे घूमता है। अकबर साहब सच ही कह गये हैं कौम हमारी रोटी और मजहब चूरन है ।

मदकचीगज मे कायस्थो मुसलमानो और कुछ बढइयो की गरीब बस्ती थी। मुशी जी ने उन्हें पटाना शुरू किया। जातिवाद के नाम पर पहले उन्होने अपने ही गरीब बिरादरी वालो को फसाया। मुशी जी ने मदकचीगज के एक सजातीय निवासी से कहा मुनो बिशनू बाबू, जब तक जातिवाद का सहारा नही लिया जायगा तब तक हम लोगो का पिछडा-पन दूर नही हो सकता। देखो मैं प्रामिस करता हू कि अगर तुम सब कायस्थो की जमीनें मेरे हाथ बिकवा दो तो मैं यहा चित्रगुप्त इडस्ट्रीज कायम करूगा। जितनी फमिलियो के घर यहा हैं सबको उसका शेयर होल्डर बनाऊगा और जितने लोग बसे हुए हैं उन सबको अपने हायर पर्चेज के फ्लैटो मे बसा दूगा। इस वक्त जात की स्प्रिट मे चलो बिशनू बाबू य कायस्थो की उन्नति का मामला है। मैं प्रामिस करता हू कि सब का घर भर दूगा।

बिशनू बाबू ने भी अपना पिछडापन दूर करने के लिए जाति को बाधा। रुपया बटा कलिया शराब चला और अपना बिरादरीवालो की गरदन शहद लिपटी छुरी से काटकर मुशी जी ने चित्रगुप्त इडस्ट्रीज के लिए वह जमीन गुपचुप हथिया ली। कसाने से लगे बढइयो के दस मे पाच घर भी इनके पास आ गये। लेकिन पडित जी तक हवा या फलाबी

गयी कि हाजी मुन्नू ये सारी जमीनें हड़प ले गये हैं। उन्होंने गजेंद्रनाथ सड के पिलाये हुए दूध को आखिर या जहर बनाया है।

सड जी हुमक उठे। मुंशी जी मजा लेने लगे। उनकी चालों से मार्केट की स्कीम में हिस्सा लेने वाले मुसलमान सेठिये साम्प्रदायिक गुस्से से फूलने लगे। पंडित जी की स्कीम खटाई में नजर आने लगी। मन्कचीगंज के मुसलमान कब्रिस्तान की जमीन के लिए पंडित जी के अन्याय के विरुद्ध आवाजें उठाने लगे। पंडित जी ने चूक की तरह में आ गये। उन्होंने मदकचीगंज में दंगा-फसाद करा दिया। कई निरपराध घायल हुए कई उजड़े। मुंशी जी हाजी मुन्नू और दस-पांच प्रतिष्ठित हिंदू मुसलमान नेताओं का लेके मौके पर पहुंच गये। शांति और मानवता के नायक बने। जले और उजड़े घरवालों को शरण दी। उनके खाने-पीने का ठिकाना किया और हाजी मुन्नू का गरीब मुसलमानों की वह उजड़ी बस्ती औने पौने दिलवाके उनकी नजरों में चढ़ गये। सौदा कराके उनसे कहा, "ये गज्जू साड साला बड़ा कम्यूनल है। ऐसे लोगों की वजह से ही तो यू० पी० का पिछड़ापन दूर नहीं हो पा रहा है। यह काम हमारे आपके जैसे सिक्यूलर मिजाज के लोग ही कर सकते हैं।" हाजी साहब ने हामी भरी। दोनों महानुभाव मिलकर यू० पी० का पिछड़ापन दूर करने के नाम पर मरी हुई पब्लिक का शाह मदार बनकर मारने लगे।

गोरख धंधा

फटी हुई अलवायन ओढ़कर एक अल्मुनियम के पिचके-दुचके गिलास में चाय पीते हुए सतीश को सहसा अपनी गरीबी पर तरस आने लगा। उसके पिता यद्यपि रईस नहीं थे फिर भी पचास रुपया महीना तो पाते ही थे। उनके जमाने में टूट जाने पर चाय का प्याला तो दुबारा खरीदा ही जा सकता था।

आज दो बरस से सतीश को पैसे पैसे की तंगी है। वह बेकार है, यह कहना उसके प्रति अन्याय करना होगा। सबेरे से शाम तक काम करते-करते थक जाता है कभी किसी दफ्तर के लिए बैठा अर्जी लिख रहा है, तो कभी किसी 'बड़े बाबू' के तलवे चाट रहा है। बीवी के कई गहने गिरवी रखकर उसने कई बार सरकारी महकमों के 'कम्पिटीटिव' इम्तहानों की फीस दाखिल की मगर वे रुपये सरकार के खजाने में उसी तरह जमा हो गये जैसे कि उसकी पत्नी के गहने महराजन के सेफ बाक्स में।

दो दिन पहले की बात है उसके दोनों बच्चे चीनी के प्याले में चाय पीने के लिए मचल उठे थे। मार पीट, छीना झपटी रोना चिल्लाना हुआ गर्ज कि तश्तरी और प्याला दोनों ही शहीद हो गये।

उस दिन चाय पीते समय वह सोचने लगा कि उसका सहपाठी मनोहर, जो अब सेनेटरी इंस्पेक्टर हो गया है इस वक्त अगर संयोग से दौरा करता हुआ इस मुहल्ले में निकल आये तो इस अल्मुनियम के भद्दे गिलास में चाय पीते देख वह क्या सोचेगा? ख्याल आते ही उसे अपने बड़े लड़के पर गुस्सा आ गया। तेजी से आवाज दी 'प्रेमू'!

प्रेमू जैसे ही बैठक में आया गली में जलेबी वाले ने आवाज

लगायी। पाच बरस का प्रेमू जलबी खाने के लिए मचल उठा। सतीश ने पहले तो उसे डाटने की कोशिश की, जब वह न माना तो समझाना शुरू किया। जलेबी वाले की जलेबियो मे खराबिया बतान लगा, चाय के दो एक घूट भी उसे पिला दिये।

जलेबी वाला गली मे सामने ही खडा हुआ प्रेमू को प्रलोभन दे रहा था। सतीश सोचने लगा कि अभी एक ही विद्रोह पूरी तरह नही दवा और यदि इसी बीच मे कही रामू भी आ गया तो गदर मच जाने म कोई शका न रहेगी।

उस जलेबी वाले पर क्रोध आ गया। फटी अलवायन उतारकर दरवाजे के पास जलेबी वाले को डाटा, 'जलेबी बचने के लिए क्या तुम्हें यही एक मुहल्ला मिला है जी, जो दस घटे से खडे टे टें कर रहे हो ?'

"आप तो बाबू नाहक के लिए गुस्सा हो रहे है। मैं अपना सौदा बेच रहा हू, इसम आपका क्या नुकसान है ?"

सतीश झुझला उठा। नुकसान तो उसका सरासर ही हा रहा था। लडका मचल रहा था और उसक पास पैसे थे नही। लेकिन ये सब बातें तो उस टके के जलेबी वाले से कही नही जा सकती। जब उसे कोई जवाब न सूझ पडा ता सहज अकड कायम रखन के लिए डपटकर बाला "नुकसान ? नुकसान यही कि तुम फौरन यहा स चले जाओ।'

जलेबी वाला भी गर्मा उठा। बोला, वाह, अच्छे धौस जमान वाले आये साहब ! आपक लडके के मारे काई क्या अपना सादा भी न बेचे ? आपके पास पसे हा तो खरीदें, नही तो अपना दरवाजा बद करके बैठ जायें। मैं भला, यहा स "

सतीश आप स बाहर हो गया। कुर्ते की बाह चढाकर मुट्ठी बाधत हुए जरा आगे बढ़, लाल-लाल आखें निकालकर कहा, 'यह तुम क्म कहते हो बदमाश कि मेरे पास पस नही ? तू मरी तौहीन करना है नालायक ! निकल जा अभी मेरे मुहल्ले स, नही तो, नही ता ।

नही तो वह क्या करेगा या कर सकता है, उसे खुद भी नही मालूम ! बहरहाल, वह खट से खासने लगा।

महाभारत ने इस द्रौपदी का सबरे ही गुजारा ना-नान पास-पड़ोस भी बाहर निकल आये। कारण पूछा। सतीश कहने लगा 'साला सड़ी हुई जलेबियां बच रहा है चर्बी मिल ऊ घी की और ऊपर से मेरा तौहीन करता है बेईमान। इसमे पूछिए आखिर उसने मुझे समझा क्या है? अभी हैल्थ आफिसर को रिपोर्ट कर साले का चालान कराता हूँ।

घी मे मिलावट होने की बात अनायास ही सुनते ही जलेबी वाला बौखला गया। इधर उन आदमियों ने भी उसी का धमकाना शुरू किया। वह बड़बड़ाता हुआ चला गया।

बालों के ऊपर एक बार हाथ फेर सतीश ने माना जरा फुला लिया। फिर जब से एक बीड़ी निकाल अंदर आ ... चूल्हे में सुलगाते हुए एक कश खींचकर अपनी पत्नी राधा से बोला मैंने कहा सुनती हो? मैं जरा लाइब्रेरी जा रहा हूँ।

वह दूसरी ... में झाडू लगा रही थी, बोली 'सबेरे-सबेरे किससे उलझ पड़े थे आज?'

सतीश ने अकड़कर कहा जलेबी वाला था साला! यहीं रोज मेरी जान को आकर खाता है कम्बख्त। आज फटकार दिया बच्चू को।

राधा बोली अरे वाह तुम्हारे मुहल्ले में क्या कोई अपना सौदा भी न बेचेगा? ऐसी क्या कहा की लाटसाहिबी मिल गयी है जो उसे मुहल्ले से निकाल दोगे? बेचता है बेचने दो। तुम्हारा क्या?'

सतीश झुंझला उठा तुमने तो मुंह बनाकर कह दिया बेचने दो। तुम्हारा क्या? तुम तो बस लड़कों को पैदा करके छुट्टी पा गया और यहां जब वे सबेरे सबेर उसे देखकर मेरी खोपड़ी पर सवार होते हैं तब मालूम होता है।'

देखो जी हजार बार मना कर चुकी हूँ फिजूल के लिए मुझे सताया न करो। जब देखो तब मेरे पास घुस घुसकर आते हो लड़ाई-झगड़ा करते हो और ऊपर से बातें बनाते हो!

राधा शादी से लेकर आज तक के संस्मरणों का पुलिंदा खोलकर बैठ गयी।

सतीश चुपचाप अपनी अलवायन सभालता हुआ बैठक मे चला आया। कोट पहना, चप्पल पहनी, बैठक की कुडी चढ़ायी और लाइब्रेरी चल दिया।

आखिरकार 'स्टेटसमन' मे एक मार्के की खबर पढ़ने को मिली। एक चाय कपनी को एजेंटो की जरूरत थी, वेतन और कमीशन—दोनो ही तरह मे कपनी रखने का राजी थी।

सतीश न सतोष की एक सास ली। कपनी का पता नोट किया और घर की तरफ चला। रास्ते म उसे निश्चय हो गया कि उसका यह तीर लग ही जायेगा। वह सोचने लगा, पहले तो तनख्वाह पर 'कन्वेसिंग' की जायेगी, बाद मे जब उस चाय का काफी प्रचार हो जायेगा तब अपने लडको के नाम से 'प्रेमचद्र रामचद्र फर्म' खोलकर उसकी सोल-एजेंसी ले ली जायेगी।

कम्पीटीशन के जमाने म माल तो उम्मीद है उम्दा देंगे ही, खूब बिकेगा। तब फिर उसका जीवन भी सुखी हो जायेगा। सतीश को उसकी कल्पना गुदगुदाने लगी। लपकता हुआ घर आया। कागज निकाला, कलम ढूढ़ी, फिर दवात की तरफ जो नजर डाली तो सूखी मिली। पानी डालना भी फिजूल साबित हुआ क्योकि उस दवात मे अकेला पानी इतनी बार पड चुका था कि अब खाली पानी का रग तो जरूर हल्का आसमानी हो गया मगर लिखने के काबिल स्याही हरगिज न बन सकी। बैठक से ही आवाज लगायी, "मैंने कहा सुनती हो ? जरा एक पसा तो देना, स्याही लानी है।

राधा दरवाजे के पास आकर बोली मेरे पास सिर्फ दो ही पसे हैं, आज दाल मगानी है। अब भाई, कही से कुछ लाओ, नही तो कल चूल्हा भी नहीं जल सकेगा। यह मैं तुम्हें बताए देती हू।'

पसे के प्रबध की बात सुन सतीश खीज उठा। बोला, 'क्या कही रुपयो का पेड लगा है जो जाकर तोड लाऊ ?"

शायद पति की बेबसी देखकर ही राधा चुपचाप चल दी। सतीश को अपनी तकदीर पर उस वक्त रह रहकर गुस्सा आ रहा था। अगर उसके पास पैसा होता तो वह निश्चय ही, उसी दम दुनिया की समस्त

ईश्वर विरोधी संस्थाओं का सदस्य हो जाता। चाय की एजेंसी उस वक्त उसके लिए एक बहुत बड़े आकर्षण की वस्तु हो रही थी। इस गूलर के फूल को हाथ में पाकर भी उसे छोड़ना पड़ रहा था, इसका उसे आतरिक क्लेश था।

उसने सोचा फिलहाल पैसा का प्रबंध करने के लिए उसे किसी और काम की तलाश शुरू करनी चाहिए। नौकरी पाने की ओर से वह एकदम निराश हो चुका था। हर पहलू पर काफी गौर करने के बाद, सहसा उसके दिमाग में आया कि जब तक चाय की एजेंसी का अर्जी भेजने के लिए उसके पास एक आना पैसा नहीं आता तब तक के लिए अगर वह किसी बीमा कंपनी की एजेंसी ले ले तो क्या रहे?

इंश्योरेंस की एजेंसी के तमाम फायदे उसके दिमाग में चक्कर काट गये। उसका एक दोस्त इसी काम की बदौलत आज मोटरसाइकिल पर सैर करता है। उसने सोचा अगर यह काम चल गया तो फिर वह चाय की एजेंसी ले लेगा। वह घोड़ा पर सवार होगा। बड़ा फायदा रहेगा। मकान की मरम्मत भी हो जायेगी। प्रेमू-रामू के कपड़े भी बन जायेंगे और उनकी मां के सब गहने फिर बन जायेंगे। बेचारी मुंह से कुछ बोलती भी नहीं। आखिर वह भी जवान है। उसकी पहनने ओढ़ने की तबीयत होती है।

सब कुछ सोच-समझकर सतीश ने तय किया वह किसी बीमा कंपनी की एजेंसी ले लेगा। शहर में कई कंपनियां हैं। सोचा, दो-तीन की एकसाथ ही लेने में काफी फायदा होने की गुंजाइश है। वह अर्जियां लिखने बैठा।

स्याही नहीं है, अच्छा कोई हर्ज नहीं, स्याही भी घर में ही तैयार कर लूंगा।' सतीश बड़बड़ाता हुआ उठा, लालटेन लाया उसकी कालिख खुरच कर इकट्ठा की दवात के नीले पानी में उसे घोला। मगर कालिख और पानी अलग ही अलग रह गये। स्याही फीकी रही। उसने सोचा, गर्म करने से शायद ठीक हो जाये। कटोरी में घोलकर उसे आग पर औटाने चला। राधा रोटी सेंक रही थी। दोनों लड़के बैठे खाना खा रहे थे। राधा ने पूछा, 'यह क्या कर रहे हो?'

बोलो मत, स्याही तैयार कर रहा हूं। दो-तीन अर्जियां लिखनी

ईश्वर विरोधी सस्थाओ का सदस्य हो जाता। चाय की एजेंसी उस वक्त उसके लिए एक बहुत बडे आकर्षण की वस्तु हो रही थी। इस गूलर के फूल को हाथ म पाकर भी उसे छोडना पड रहा था, इसका उसे आतरिक क्लेश था।

उसने सोचा, फिलहाल पसा का प्रबध करन क लिए उसे किसी और काम की तलाश शुरू करनी चाहिए। नौकरी पान की ओर से वह एकदम निराश हो चुका था। हर पहलू पर काफी गौर कर चुकन के बाद, सहसा उसके दिमाग म आया कि जब तक चाय की एजेंसी को अर्जी भेजने के लिए उसके पास एक आना पसा नही आता तब तक के लिए अगर वह किसी बीमा कपनी की एजेंसी ल ले तो कसा रह ?

इश्योरेंस की एजेंसी के तमाम फायदे उसके दिमाग म चक्कर काट गये। उसका एक दोस्त इसी काम की बदौलत आज मोटरसाइकिल पर सर करता है। उसन सोचा अगर यह काम चल गया तो फिर वह चाय की एजेंसी ले लेगा। ता घोडा पर सवार होगा। बडा फायदा रहेगा। मकान की मरम्मत भी हो जायगी। प्रेमू-रामू क कपडे भी बन जायेंगे और उनकी मा के सब गहने फिर बन जायेंगे। बेचारी मुह से कुछ बोलती भी नही। आखिर वह भी जवान है। उसकी पहनन ओढने की तबीयत होती है।

सब कुछ सोच-समझकर सतीश ने तय किया वह किसी बीमा कपनी की एजेंसी ले लेगा। शहर म कई कपनिया है। सोचा, दो-तीन की एकसाथ ही लेने म काफी फायदा होने की गुजाइश है। वह अर्जिया लिखन बठा।

'स्याही नही है अच्छा कोई हज नही स्याही भी घर म ही तयार कर लूगा। सतीश बडबडाता हुआ उठा लालटेन लाया उसकी कालिख खुरच कर इकट्ठा की दवात के नीले पानी म उसे घोला। मगर कालिख और पानी अलग हो अलग रह गये। स्याही फीकी रही। उसन सोचा, गर्म करने से शायद ठीक हो जाये। कटोरी म घोलकर उस आग पर औटाने चला। राधा रोटी सेंक रही थी। दोना लडके बठे खाना खा रहे थे। राधा ने पूछा, यह क्या कर रहे हो ?

'बोलो मत स्याही तयार कर रहा हू। दो-तीन अर्जिया लिखनी

हैं।"

एक ठडी सास लेकर राधा ने कहा, अरे, अजिया लिखते लिखते ता दा साल बात गय। कहीं से किसी मरे पोटे का जवाब तक नहो आता।'

सतीश काफी प्रसन्न था। इस वात को अनसुनी-सी कर वाला अरे इस वार ऐसा काम कर रहा हू कि पाचो घी म हागी तब वठी वठी मजा करना।"

स्याही औटकर ठीक हान लगी। सतीश के मन म एक और विचार उत्पन्न हुआ। शहर म स्याही की भी काफी खपत हाती है। दो-तीन स्कूलो के मास्टरा स भी उसकी जान पहचान है, अगर वह स्याही बना-बनाकर बचना शुरू कर द तो भी काफी फायदा हागा। नखास स कुछ बातलें खरीदकर लाई जायें। आसमानी, लाल रग वगरह खरीदा जाये। बस, दो-तीन रुपयो की लागत म उसक पास कम स कम पचास बोतलें तयार हो ही जायेंगी, एक बोतल का दाम चार आना रखा जायेगा। उसे साढे बारह रुपये मिलेंगे। पाच रुपये घर खच के लिए रखकर वह फिर स्याही का सामान लायेगा। साढे तीन लाख की आबादी क शहर म वह कम-से-कम पचास बातलें तो घूम-घमकर रोज बच ही लगा। पहले तमाम स्कूलो और कालेजो म 'सप्लाई' की जायगी फिर दूकानदारो को और बाद म अगर टिप्पस लग गयी तो शहर भर क सब सरकारी और गर-सरकारी दफ्तरो म भी उसी की स्याही खपा करेगी। काम बढने पर वह एक कारखाना भी खोल लगा। नौकरी भी रहेगी। बाद म घूम धाम से विज्ञापनबाजी कर देश भर म अपनी स्याही को बेच सकता है। 'स्टीफेंस' से अगर तगडी न रही तो काम ही क्या हुआ। आजकल स्वदेशी का बोलबाला है। वह साल दो साल म काफी कमा लगा।

सतीश को ऐसा लगा कि उसकी किस्मत का सितारा अब जल्द ही चमकने वाला है। मगर पहले रुपयो का प्रबध करने के लिए उसे कोई न कोई काम करना ही पडेगा। उधार उसे अब मिल नही सकता, क्योंकि राधा के पास अब एक भी गहना नही बचा था जिसे गिरवी रखा जा

सके। लेकिन कोई हज नही, पहले वह इश्योरेंस से रुपया पदा करेगा।

स्याही तयार हुई, किसी तरह अर्जिया भी लिखी गयी। उसके पास एक घराऊ कोट और पतलून था जिसे वह हर 'इटरव्यू' म पहनकर जाता था। उसने सोचा, बगर चिक्ने चुपडे वने इश्योरेंन्स की एजेंसी लेना ठीक नही। बडे-बडे आदमी किसी से बात भी नही करते।

घर मे कपडे धोने वाले साबुन का एक छोटा-सा टुकडा था। सतीश मुह धोने चला। गाल पर हाथ रखते ही ख्याल आया, हफ्ते भर म हजामत नही बनी। घर म ब्लेड ही नही था। इतनी बढ़ी हुई हजामत वाले को इश्योरेंस का काम हरगिज नही मिलता, इसका उसे निश्चय था। सिर्फ दो ही पैसे घर म थे ब्लेड किसी भी तरह खरीदा नही जा सकता था। पास पडोसी भी दफ्तर चल गये थ।

वह बडे जोर से झुझला उठा। पहले तो मेहनत से तयार की हुई अर्जिया फाडा, फिर स्याही की कटोरी उलट दी। हाथ म कलम भी उठा लिया, लकिन फिर कुछ समझकर रुक गया और एकदम छत पर जा कपडे उतारकर वह धूप मे लेट गया। सिफ दो पसो के बगर उसके सकडा रुपय के व्यापार का नुकसान हो रहा था। उसे इस बात का काफी मलाल था। दुनिया भर के कुलाबे भिडाते भिडात अत म उसे नींद आ गयी।

शाम को तफरीह के ख्याल से सतीश बाजार की ओर चला। एक दोस्त की बिसातखाने की दूकान थी। पान खाने की गरज से सतीश वही बैठ गया। इधर-उधर की बातें चल रही थी, तभी एक अग्रेज महिला हाथ मे बग लटकाए दूकान पर आयी। एक कपनी लखनऊ डायरेक्टरी प्रकाशित करने जा रही थी। मेमसाहब आखिरकार मुस्करा मुस्कराकर विज्ञापन ले ही गयी। उनके जाने पर मित्र महोदय कहने लग, "यह पाच रुपये खल गये उस्ताद! मगर उस लेडी को भला कसे मना कर देता ?"

थोडी देर इधर-उधर की बातें कर सतीश घर चला आया। बाजार की चहल पहल जसे उसे जहर मालूम पड रही थी।

घर आया। राधा ने खाने के लिए कहा। सतीश उस वक्त अपनी

ख्याली दुनिया म घूम रहा था। कुछ अनमना-सा होकर बोला, "ढककर रख दो। मुझे भूख नही है। सबेरे लडको के लिए काम आ जायेगा।"

चारपाई पर वह काफी देर चुपचाप पडा रहा। एकाएक उसकी आखें चमक उठी। सट से बैठते हुए आवाज दी, 'मैंने कहा सुनती हो?"

चौके-बरतन से छुट्टी पाकर राधा रसोईघर म खाना ढक रही थी। बोली सुनती हू, अभी आयी।"

"अरे भई, अब दर न करा। तुमसे एक बडा जरूरी काम है। मतलब यह कि फौरन चली आओ। ये घर के धधे तो रोज ही नगे रहते हैं।"

राधा इत्मीनान से ही आयी। बोली, 'क्या कहते हो?"

'अरे, पूछो मत, मैंने एक ऐसी बढिया बात सोची है कि बस चार दिन म ही सब तकलीफें दूर हो जायेंगी।"

राधा जरा अक्खडपन के साथ बोली, "वह चाहे बढिया बात हो या घटिया, मैं साफ कहे देती हू, मेरे पास अब सोने चादी का एक तार भी नही जो तुम्हें दे सकू। सब कुछ तो बटोरकर ले गये।"

सतीश को यह बेवक्त की भैरवी बुरी लगी, झुझलाकर बोला, 'अरे बाबा, तो तुमसे माग कौन रहा है? मैं तो एक दूसरी बात कहने जा रहा था और तुम "

सतोप की सास ले, जरा नरम पडकर राधा ने कहा, "क्या कह रहे थे?'

बात यह है कि आज मैंने बडे मजे की बात देखी।"

क्या?'

'परसोत्तम की दूकान पर बठा था। इतने म जनाब, एक मेम आयी। मैं समझा, कुछ खरीदने आयी होगी। मगर भाई, वह तो आते ही आते ऐसी फर्राटेदार बात करने लगी कि पूछो मत। कहने लगी—देखिए यह बडी अच्छी किताब छप रही है और इसमे आप अपना विज्ञापन जरूर दें। आपका बडा नाम हो जायेगा। बडे-बडे आदमी इसे पढेंगे। आपकी दूकान चल निकलेगी। इस तरह की तीन सौ बीस बातें बनानी शुरू

को। अब परसोत्तम बेचारे से 'नाही' करते न बन पडा। चुपचाप पाच रुपये निकालकर दे दिये।"

राधा न लापरवाही के साथ मुह बनाकर कहा, "अरे य मम बडा चरबाक होती है।

'चरबाक की बात नही। देखो तो, कस मजे म खट से पाच रुपये पैदा कर लिये।"

राधा ने कोई उत्तर न दिया। थोडी देर चुप रहकर सतीश बोला, 'मैंने कहा अगर हिंदुस्तानी औरतें भी इसी तरह काम किया करें तो बडा अच्छा हो।

राधा बोली, 'हिंदुस्तानी बेचारी को कौन पूछेगा? न तो वे मेमो की तरह खूबसूरत होती है और न उनका-सा छत्तीसापन ही उन्हें आता है।'

सतीश एक क्षण रुककर फिर कहने लगा, 'मगर भई सच कहता हू कि तुम इस मेम से भी लाख गुना ज्यादा खूबसूरत हो।"

राधा ओठो मे ही मुस्करायी, कहा, "अरे जाओ भी, बहुत बातें न बनाया करो। भला कहा मम और कहा मैं?"

'लो तुम मजाक समझ रही हो! मैं तुमसे बिलकुल सच कहता हू अगर भगवान की दया से तुम्ह जरा सुख मिलने लग तो लाखा म एक निकलो, मगर यह कहा कि नसीब से मरे पाले पड गयी, वरना तुम तो बनने लायक हो रानी!"

राधा रानी ने हमदर्दी दिखलात हुए कहा 'मुझे रानी बनने की चाह नही। मै अपने घर म ही सुखी हू। भगवान करे तुम बने रहो मुझे और कुछ न चाहिए। तुम क्या कुछ कम खूबसूरत हो मगर ये कहा कि चिता डायन तुम्हें खाये डाल रही है। कहते हुए उसने निश्वास छोड दी। सतीश न मौका देखा। कहा मैंने एक बात सोची है। अमीनाबाद म मजिक लालटेन से स्लाइड दिखाय जायें। बडा फायदा रहेगा। हर दूकानदार स पाच रुपया महीना चाज किया जाय। महीन भर म कम स कम सौ रुपये की आमदनी तो हो ही जायगी।

राधा की आखें चमक पडी। कहा, 'तो फिर क्या नही करत?

"भई, बात यह है कि यह काम अकेले मेरे बूते का नहीं। अगर तुम भी जरा मदद करो तो कल से ही शुरू कर दू।'

"मैं भला इसमें तुम्हारी क्या मदद कर सकती हू ?

सतीश गंभीरता के साथ बोला "सुनो अब हम लोग बहुत तकलीफें उठा चुके। तुम अब ये सब हया शरम छोडो। मैं तुम्हें दो-तीन दिन के अन्दर शहर की सब बडी-बडी दुकाने दिखा दूगा। सब कायदे कानून भी समझा दूगा। बस, फिर तुम सबसे मिलकर विज्ञापन ले लेना। एक औरत को देखकर सब चुपचाप रुपये निकालकर दे देंगे, समझी ? बस फिर मजे में जिंदगी बीतेगी।"

"चलो हटो। बहुत ज्यादा फिजूल की बक-बक न किया करो। अहा-हा बडा अच्छा मालूम पडेगा जब मैं दुकान दुकान घूमती फिरूगी। चार बिरादरी वाले तुम्हारी खूब तारीफ करेंगे।

"अरे बिरादरी वाले चले जायें चूल्हे में। भला इसमें बुराई ही क्या है ? अपना पेट पालते है, कोई चोरी-बदमाशी तो करते नहीं।

'वह चाहे जो कुछ भी हो, मैं इस तरह नही घूम सकती। भूखो मर जाना कबूल है, मगर इस तरह अपने बाप-ससुर का नाम मैं नही उछाल सकती। तुम्हारा क्या, तुमने तो सब हया शरम भून खायी है।"

"इसमें हया शरम की क्या बात है ? मेमो को देखो, इस तरह लाखो रुपया पैदा कर लेती है। अमरीका, जापान, जर्मन सब जगह ऐसे ही होता है। हमारे देश में इसे बुरा समझते है तभी तो यह गरीबी भुगतनी पडती है। कोई काम नही चलता। हमारी औरतें तो दुनिया-भर का ढकोसला लेकर बैठ जाती है। फायदे की बात कहो तो बाप-ससुर का नाम उछलने लगता है साहब।" सतीश ने खीजकर कहा।

राधा भी गर्मा उठी। बोली, 'तो फिर किसी मेम से ब्याह क्यो नही कर लेते ? वह गली गली कमाती फिरेगी। तुम बैठे बैठे मजे करना।

धीरे धीरे बात का बतगड बनने लगा। अंत में हारकर सतीश ने हाथ जोडे "अच्छा बाबा, माफ करो। गलती हुई। मैंने तो एक कायदे की बात कही थी। यह सब दुख-दलिद्दर दूर हो जाता। मगर तुम

सुबह तो हो गयी मगर सतीश को रात भर मलाल रहा। उसने इतनी अच्छी स्कीम सोची थी कि अगर विलायत म पैदा होता तो लाखों कमा लेता।

तड़के ही उठकर सतीश कई जगह ट्यूशन की तलाश म गया। लौटकर पड़ोसी से अखबार लिया। हजामत बनायी, कपड़े पहने। बाबा कंपनियों म गया एजेंसी प्रास्पेक्टस वगैरा लेकर दिन भर कई मठों के यहां कनवेसिंग करता रहा। मगर सब महमान बसूर बेकार। सतीश खीज उठा। ढाई बज रहे थे। धूप कड़ाकेदार लग रही थी। सतीश घर की तरफ चला। दरवाजे पर ही म्यूनिसिपलिटी का आदमी आवाज लगा रहा था। पूछने पर मालूम हुआ टैक्स अदा न करने की वजह से वह पाइप का कनेक्शन काटने के लिए आया है।

झुंझलाया हुआ तो था ही, सतीश एकदम चीख उठा, 'ले साले काट डाल बंबा। अब नहीं पियेंगे पानी। ले काट।

सतीश ने आगे बढ़कर खुद ही बंबे का खजाना खोल दिया, फिर तेजी से घर के अंदर जा राधा से बोला सुनती हो जी, बंबा कट रहा है।'

वह बिलकुल चुप रही। सतीश भी चुपचाप चारपाई पर आंखें बंद कर लेट रहा।

आध घंटे बाद उसने धीरे से उठकर कहा सुनती हो भई, अब ये तकलीफें तो मुझसे नहीं सही जाती। चलो, कांग्रेस म नाम लिखा लें। मिनिस्ट्री अब खत्म हो ही गयी है आंदोलन छिड़ेगा ही। अरे कम-से-कम जेल म रोटियां तो मिल ही जायेंगी।'

राधा हंसी, बोली और ये बच्चे ?'

सतीश ने छूटते ही जवाब दिया, मैंने सोच लिया है। इन्हें किसी अनाथालय म भेज दो।'

तथागत नयी दिल्ली मे

कुशीनारा मे भगवान् बुद्ध की विश्राम करती हुई मूर्ति के चरणो मे बैठकर चैतपूर्णिमा की रात्रि मे आनन्द ने कहा, 'शास्ता अब समय आ गया है।"

भगवान बुद्ध की मूर्ति ने अपने चरणो के निकट बठे इस जन्म के वृषभ देह धारी आनद से पूछा, 'कसा समय आवुस्स ?"

"दिल्ली चलने का भगवान !

भगवान थोडी देर मौन सोचते रह, फिर बोले "आवुस्स युग के प्रभाव से मैं जड हो गया हू। देखते नही। मूर्ति के रूप म मैं यहा जसे लिटाया गया, वसे ही लेटा हू। जहा जिसने बठा दिया, बठा हू, खडा किया तो खडा हू, और यदि तोड डाला गया तो टूट पडा हू। इस जडता के कारण मेरी स्मृति समाधिस्थ है आनद, उसे निर्वाण निद्रा से जगाओ तभी सम्यक मबुद्ध तुम्हारी बात पर विचार कर पायेगे।"

इस जन्म के वृषभदेहधारी आनद बोले, "जागिए भगवान स्मरण कीजिए कि परिनिर्वाण प्राप्त करने के लिए जब आप वशाली छोडकर इस छोटे से जगली और झाड झखाड वाले जगल कुशीनारा म पदापण का विचार करने लगे थे तब आपका यह विचार मुझे पसद नही आया था। मैं चाहता था कि आपके परिनिर्वाण प्राप्त करने के योग्य स्थान कोई बडा नगर ही होना चाहिए, जसे चम्पा राजगह, श्रावस्ती, साकेन कोशाबी, वाराणसी आदि। वहा उस समय आपके अनेक महाधनी क्षत्रिय ब्राह्मण, और वश्य शिष्य थे। वे आपके शरीर की पूजा किया करते।'

मूर्ति रूप भगवान ने उत्तर दिया, "मेरी स्मृति जाग उठी है आवुस्स ! तुम अपनी स्मरण शक्ति को भी जगाओ आनद ! मैंने तुमसे कहा था,

शहरो मे दफ्तरो के कमरे सूने होने लगे, सडके साइकिलो से भर गयी। नयी दिल्ली के ए० बी० सी० डी० आदि क्रम के क्वाटरो और बगला म चाय का समय हो गया, बच्चे पार्कों म खेलने लगे।

दिल्ली के पथरीले सेक्रेटेरिएट म काम करन वाले विनयनगर एरिया क भी क्लास क्वाटर निवासी क्लक मिस्टर सोहनलाल ने अपनी श्रीमती के साथ चाय पीते हुए कमरे के कोन म रख मटूको की ओर देखा। उनकी भवें और नाक सिकुड गयी। रोबीले होठ भी बिचक गये। पत्नी स कहने लग, 'ये कोना अच्छा मालूम नही पडता। यहा सजावट की कुछ कमी है।'

मिसेज प्रेमलता ने भी चाय से गील अपने लाल होठ खोल और कहा, यही मैं भी फील कर रही हू जी! चलो मार्केट चलकर कोई डेकोरेशन पीस खरीद लाया जाय। मगर क्या इस बेतुके कमरे म! हमारा नसीब भी कितना खराब है, न बगला, न मोटर न ड्राइगरूम!" मिसेज प्रेमलता के लाल होठ आपस म जुड गय नाक स ठण्डी आह निकालकर उन्होने अपनी गदन डाल दी।

डाटवरी डार्लिंग, सोशलिज्म म ब्यूरोक्रेसी खत्म होकर ही रहगी तब हम बगल म रहग।'

मिस्टर सोहनलाल और मिसेज प्रेमलता आज के युग के पढ़े-लिखे शरीफ आदमी अर्थात कल्चरवर्णी साहब और मेम साहब थ। उन पर नयी दिल्ली का रग भी चढा हुआ था। वह दिल्ली जो स्वतन्त्रता क बाद नये सिरे स नयी हो गयी है जहा चीनी, रूसी बर्मी ईरानी तूरानी उजबक, खुरासानी, इंग्लिश अमरीकी, जापानी आदि भाति-भाति के तमाशे नित्य हुआ करते है जहा त्रिवेन्द्रम स लेकर श्रीनगर तक और कच्छ स लेकर नागा पहाडियो तक क लोकगीत लोकनृत्य आदि आय दिन उसी तरह देख-सुन पडत है जिस तरह छोटे शहरो म बीडी और सिनमा वालो के नाचते-गाते विज्ञापनी जुलूस।

नयी दिल्ली के अफसरी जूत दर जूते के नीचे दबा हुआ कल्चरवर्णी साहब और उनकी मेम साहब नाना ही सेक्रेटरियो (ज्वाइट एडीशनल और अडर सहित) क बगलो की रहन-सहन की हसरत मन म लेकर

अपने ही क्लास वाले क्वाटर में रहते थे। साइकिल और बस पर चढ़कर वे ठंडी आह के साथ मोटरों को निरखते मेम साहब भी सस्ते रेशमी कुर्ते सलवार लिपस्टिक और नकली सान-मोती के जेवर पहनकर अर्दली वैरे चपरासियों के अभाव में अपने साहब को ही अंग्रेजी में फटकार कर कलेजे को ठंडा कर लिया करती थीं। दोनों ही को इस बात की सख्त शिकायत थी कि इस कल्चर युग में वे धन और ओहदे के अभाव में उस एवरेस्ट पर नहीं चढ़ पाते जहां पहुंचकर आज के मनुष्य को आन-बान शान तीनों परम वस्तुएं प्राप्त हो जाती हैं। इसलिए वे आम में सवर्गीय की तरह काटे की नोक पर हर घड़ी ऐसे विचार प्रकट किया करते थे जो समाजवादी साम्यवादी हिंदूवादी प्रांतीयतावादी जातीयतावादी कुंठावादी बकवादी किस्म के होते हैं।

चाय पीकर मिसेज प्रेमलता डाटते हुए बोली छोड़ो अपनी यह बकवास। चलना है तो चलो। कोई डेकोरेशन पीस खरीद लायें। मेरे ख्याल में लार्ड रामा लार्ड कृष्ना लार्ड बुद्धा या लार्ड नटराजा की आर्टिस्टिक मूर्ति ले लें इस वक्त तो यही फैशन है।

लार्ड रामा? उहूं। साहब ने बहुत मुंह बनाकर कहा, रामा बहोत ही प्लारिटेरियट गाड है। हिंदुस्तान में जिसे देखो वही राम राम करता है। इसलिए अब वह गॉड नहीं हो सकते। अब हर पुराने राजा की बकत नहीं रही—सिर्फ राजप्रमुखों को छोड़कर। मेरे ख्याल में लार्ड बुद्धा को ही खरीदा जाय। इस वक्त वह लेटेस्ट फैशन में हैं। ढाई हजारवीं जयंती भी मनायी जा रही है। हमारे प्राइम मिनिस्टर खुद इतना इंटेरेस्ट ले रहे हैं। इसलिए खरीदना है तो बुद्धा को खरीदो।

अणु परमाणुओं में लीन सर्वज्ञ भगवान बुद्ध ने सुना और सुनकर मुस्करा दिये। आनंद इस जन्म में पुंगव है उसकी बलबुद्धि की बात मानकर तथागत फिर ढाई हजार वर्ष पुरानी देह धारण कर रहे हैं तो तथागत को देह भोग भी भोगना ही पड़ेगा। भगवान ने सोचा। और अणु परमाणुओं में लीन भगवान बुद्ध नयी दिल्ली के वातावरण में प्रविष्ट हो गये।

साहब सोहनलाल और प्रेमलता मेम साहब मार्केट से सेंडिल, साड़ी,

ब्लाउज और बुद्ध खरीदकर लौट रहे थे। मेम साहब ने कहा, "आज बडा खरचा हो गया तुम्हारी वजह से।"

"मेरी वजह से क्यो ? ये साडी-ब्लाउज क्या मैं पहनूगा ?

"तुम नहीं पहनोगे, मगर खर्च तो तुम्हारे कारण ही हुआ।" मेम साहब की आवाज म सख्ती आ गयी।

साहब न दबी ठडी सास खीचकर कहा, जब तुम कहती हो तो अवश्य ही हुआ होगा। ये तुम्हार सडिल शायद मेरी खोपडी के लिए खरीदे गये।"

"मैं इतनी मूख नही कि अठारह रुपये का माल तुम्हारी निकम्मी खोपडी पर ताड दू। मगर मैं कहती हू कि तुम्हें जरा भी बुद्धि नहीं। बुद्धि होती तो महीने के आखिर म बुद्धा को खरीदने की बात ही न उठाते। हिश, तुम्हें जरा भी समझ नहीं। मेम साहब के कदम झुझलाहट मे तेज पडने लगे।

' बट डार्लिंग, मेरे बुद्धा तो सिर्फ अठन्नी के हैं।

"अठन्नी की क्या कीमत ही नही होती ? इस एक अठन्नी के कारण मेरे सतालीस रुपये खच हो गये। शम नही आती बहस करते हुए भर बाजार मे ?" मेम साहब का स्वर इतना ऊचा हो गया था कि सडक पर आसपास चलते लोगो—अन्य साहबो, मेमो ने भी सुन लिया और सोहनलाल साहब को देखकर मुस्कराये।

सोहनलाल साहब का सिर झुक गया, मन भारी हो गया। आदमी लाख साहब हो जाय पर क्लक का कलेजा पाकर वह डाट-फटकारप्रूफ जरूर हो जाता है। लोगो की व्यग्यभरी मुस्कानें देखकर सोहनलाल साहब का दिल टुक भारी तो हुआ, वैराग्य के विस्म वे भाव जागे, मगर फिर चिकने घडे की तरह होकर मेम साहब का साथ निबाहने के लिए साडी, सडिल, ब्लाउज और बुद्ध के बोझ से लदे तेज कदम बढाने लगे।

सडक के किनारे सायबान पडे लकडी के एक रिफ्यूजी रेस्तरा म बुद्ध जयती के मौसम मे रेडियो सुना रहा था—'बुद्ध शरण गच्छामि। साहब सोचने लगे, काश कि आज के दिन लॉर्ड बुद्धा होते तो वे दफ्तर और मेम साहब को त्याग कर 'बुद्ध शरण गच्छामि' हो जाते। हिन्दुस्तान

तथागत नयी दिल्ली में

आजाद हो गया मगर मोहनलाल साहब को अभी तक आजादी नही मिली। आधे मिनट के लिए वे चुल्लू भर दुख में डूब गये।

नयी दिल्ली के वातावरण में व्याप्त भगवान ने विचारकर देखा कि उनके प्रकट होने के लिए उपयुक्त परिस्थिति और क्षण उत्पन्न हो चुका है। तथागत राष्ट्रपति भवन में प्रकट होने के बजाय पीडित प्राणियो के बीच में प्रकट होना चाहते थे।

पत्नी और अफसरो द्वारा चिरप्रताडित बाबूवर्गीय, कुलवरण के साहब साहनलाल के दाहिने हाथ से अचानक वह कागजी डिब्बा उछल गया जिसमे भगवान की मूर्ति थी।

हाय मेरे बुद्ध ! साहब घबराकर बोल उठे, डिब्बे को जमीन पर गिरने से बचाने के लिए वे सुध-बुध भूलकर लपके। मेम साहब के साडी-ब्लाउज का डिब्बा उनकी बगल से खिसक गया।

हाय मेरी साडी-ब्ला ! मेम साहब की बात का हार्ट फेल हो गया आती जाती भीड आश्चर्य मे उभचुन होकर ऊपर ताकने लगी और विनयनगरी वाले साहब का तो अजब हाल था। उन्होने देखा कि उनका बुद्धवाला डिब्बा जमीन पर गिरने के बजाय ऊपर उड गया और देखते-ही-देखते उसमे से एक प्रकाश पुंज निकलकर धरती के अदर बढ़ने लगा।

जनता आश्चर्य से देख रही थी। प्रकाश-पुंज सिमटकर आकार ग्रहण करने लगा। काषायचीवरधारी भगवान अभयमुद्रा मे धरती पर प्रकट हो गये। वे हूबहू म्यूजियमो मे रखी स्वमूर्तियो जैसे ही थे। भेद केवल इतना था कि सिर पर घुघराले केश नही थे। भिक्खुओ के समान शास्ता का सिर भी मुडित था।

आकाश से भगवान पर पुष्पवर्षा होने लगी। हवा मे घटा शख आदि मगलवाद्य गूजने लगे इतिहास की सैकडो सदियो ने बुद्ध शरण गच्छामि का तिवाचा गुजरित किया। जनता भगवान के पादपद्मो मे विह्वल होकर गिरने लगी। सडको पर ट्रैफिक जाम हो गया। यह सब देखकर साहब सोहनलाल की प्रत्युत्पन्नमति जागी। वे पास की किसी दूकान से प्राइम मिनिस्टर को फोन करने के लिए लपके, बौना चाद को

छू पाने का ऐसा सुनहरा अवसर भला क्योकर छोड सकता था, खास तौर पर जबकि यह चमत्कार उसके लाड वुद्धा ने दिखलाया हो।

दस मिनट के अदर सारी दिल्ली मे हुल्लड मच गया। सरकारी टेलिफोन एकदम से व्यस्त हो उठे।

सरकारी पुरजो मे सवाल-जवाब लडने लगे

"यह खबर उडाई गयी है। स्टट है।

'खबर की सचाई जाच ली गयी है। भारत म सब कुछ सभव है। वुद्ध जयती के अवसर पर भगवान बुद्ध का आना वडी महत्त्वपूण बात है। दुनिया म इडिया की प्रेस्टिज बढ जायगी।

'मगर पहले इस बात की जाच कर लेनी चाहिए कि भगवान वुद्ध अपनी मूर्तियो जसे सुदर ह या नही। क्योकि अगर उनकी पसनेलिटी वीक हुई तो बुद्ध जयती का सारा शो बिगड जायेगा। लोगो पर वडा खराब इम्प्रेशन पडगा।

'ठीक है। मगर यह भी जाच लेना चाहिए कि उनके विचार अब भी वसे ही है और वे हमारी प्रजट नशनल और इटरनेशनल पालिसी से मेल खाते है या नही।

"मगर पहले उनका स्वागत।'

"कसे हो सकता है स्वागत ? अब हमारे प्लान म नही। और बुद्ध जी को इस तरह लिखा पढी किये बगर प्रकट नही होना था।'

लाल फीते पर दौडने वाल पुरजे हर कदम पर वधानिक गाठो स अटकने लग।

उधर भगवान निरतर उमडते अथाह जन समुद्र के हडकपी जोग से घिरते ही जा रहे थे। बडी-बडी धनी छोरियो की डीलक्स लिमोसीन कारें हान बजाती और होडा हाडी करती हुई भगवान की सेवा मे पहुचने के लिए भक्तो की भीड चीरे डाल रही थी। हर लक्ष्मी पुत्र चाहता था कि सबसे आगे पहुचकर वही भगवान को अपना मेहमान बना ले। और इन्ही लक्ष्मी पुत्रो की भीड म लखपती करोडपतियो को ढकेलते, प्राइम मिनिस्टर को फोन कर लौटे हुए विनयनगरी साहब साहनलाल भी ठीक उसी प्रकार आग बढे जा रहे थे जिस प्रकार ढाई हजार और कुछ

बरस पहले बगाली ने राजपथ पर निश्चवि कुमारो के रया स टकरात हुए अवपाली का रथ आगे बढ़ा था।

सेठा न धक्के सारे ओर आप और उपा म माहनलाल साहब का तरफ दखार कहा ग वाबू अपना टेमिवन दखरर हाड लो। पर हटो।'

भगवान के नराम विनयनगरी साहब भी आज अकड गये, बात सामाजिज्म आ गया है जानते हो। भगवान अब तुम्हारी मानोपली नहा रही। यू डर्टी कपिटलिस्ट।

पीडित प्राणी को सात्वना देन के लिए भगवान विनयनगर पधारे। भगवान की कृपा से विनयनगर इन समय ज्ञान नगर बन गया।

इतनी देर म प्रधानिक आलस्य और प्रतिबधा की फास काटकर राष्ट्रपति एव प्रधानमत्री स्वय भगवान की सेवा म उपस्थित हुए एव राष्ट्रपति भवन के मुगलाराम म विहार करने की प्रार्थना की। सोहनलाल साहब की ओर एक दृष्टि डालकर भगवान बोले, आयुष्म एक दिन इसके यहा ही विहार करूंगा। राष्ट्रपति भवन म जनता न पहुच सकेगी।

भक्तों को भगवान से अलग रखने का विधान आपके देश म अब तक लागू नहीं हुआ प्रभु ! आप भले पधारें।

भगवान ने अत्यत विनयशील राष्ट्रपति का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। साहनलाल साहब और प्रेमलता के चेहरे उतर गये। खैर, इतनी देर ही सही, भगवान उनके घर ठहरे यही क्या कम है ! प्रेमलता मेम साहब ने साहब के कान म फूका—भगवान स कहो सिफारिश कर देंगे। साहब तुरत भगवान के पास पहुच उनसे कान म प्रार्थना करने लगे 'आप नेहरू जी स कह दें। वे मुझे सेक्रेटरी नहीं तो जॉइण्ट एडीशनल या अडर !

यह क्या ये क्या बदतमीजी है ? आप भगवान बुद्ध के कान म बात करने की गुस्ताखी कर रहे हैं ! जाइए यहा से। जवाहरलाल जी नाराज हुए।

दुनिया भर के हवाई जहाज पालम हवाई अड्डे पर उतरने लगे।

देश-देश के टेलिविजन फिल्म यूनिट पहुच गये । चीन, जापान, जावा, सुमात्रा, इडोनेशिया, थाईलड, बरमा, श्रीलका, तिब्बत और भारत के कोने-कोने से बौद्ध भिक्खु 'चलो दिल्ली, का नारा लगाते धमचक्र घुमाते पहुचने लगे । दिल्ली काषायचीवरा और मुडित मस्तको से भर गयी । त्रिपटकाचाय महापडित राहुल साकृत्यायन और प्रगतिशील कवि नागाजुन गहस्थाश्रमी वेश मे अपने भिक्खु हृदय सभाले दौडे चले आये । मार्क्सवादी विद्वान डॉ० रामविलास शर्मा को चूकि भाषाविज्ञान का मोहनजोदडो खोदते-खोदते हाल ही मे यह पता चल गया है कि भगवान बुद्ध की भाषा म अवधी शब्दो की भरमार है इसलिए वे भी श्रद्धापूवक भागे चले आये । पडित बनारसी दास जी चतुर्वेदी भगवान के प्रोपेगडाथ हिंदी भवन में स्वागत समारोह का प्रबध करने लगे । बुद्ध अभिनदन ग्रथ के चक्कर म डॉ० नरेंद्र की मोटर का चक्का अनवरत गति से घूमने लगा । गाधी जी के समान बुद्ध जी का पोर्ट्रेट बनवाने के लिए जनेद्र जी दिल्ली के हर मूगफली वाले की दुकान से छिलके बटोरने के काम मे सलग्न हो गये । हिंदी जगत और सारे देश के साहित्यिक जगत म नयी प्रेरणा का साइक्लोन उठ आया । यशोधरा के रचयिता राष्ट्रकवि स्लेट बत्ती लेकर तुरत यशोधरा सवस्व नामक महाकाव्य रचने बैठ गये । निराला जी को 'भगवान बुद्ध के नाम स्वामी रामकृष्ण परमहस का पत्र कविता लिखते देख उनके सरकारी पडे सरकार मे लिखा-पढी करने लगे कि महाकवि भगवान बुद्ध को चायपार्टी देना चाहते हैं इसलिए रुपये लाओ । पत जी का मेडीटेशन एक घटे स बढकर कई घटा का हो गया और वे स्वण सूय की अवतारणा करने लगे । दिनकर जी बुद्ध जीवन के चार अध्याय लिखने के लिए दिल्ली मे अडर ग्राउड चले गये । नवीन जी महादेव जी, सियारामशरण जी, रामकुमार जी बच्चन जी नरेश जी सभी एक भाव से बुद्ध-चिंतन मे रत हो गये । प्रयोगवादी कवियो ने भी बुद्ध जी पर अनेक प्रयोग कर डाले ।

प्रेस कान्फरेंस हुई । भगवान से तरह-तरह के प्रश्न पूछे गये, स्तालिन के प्रति रूस के रवये को आप किस दृष्टि से देखते हैं ? क्या आप प्रेसिडेंट आइजन हावर से शाति की अपील करने अमेरिका जाना पसद करेंगे ?

अपने और नेहरू जी के पचशील की तुलना कीजिए। सारिपुत्र और महा योग्यलायन की पवित्र अस्थियों के बारे म आपके क्या विचार हैं ? बबई महाराष्ट्र को मिलना चाहिए अथवा नहा ? उत्तर प्रदेश के सेल्सटक्स आर्डिनेंस पर आपके क्या विचार है ? हिंदी म प्रयागवाद के बाद अब क्या आयेगा ? आदि अनतप्रश्नो की झड़ी लग गयी। अनेक मुनिवर्सिटियो ने डॉक्टरेट की डिग्रिया देने का निश्चय कर डाला। भगवान को नोबुल शान्ति पुरस्कार और स्टालिन शान्ति पुरस्कार देने की बात भी बडे जोर स उठी। कुछ प्रभावशाली लोगो न यह आपत्ति उठायी कि स्टालिन चकि इधर बदनाम हो गये हैं इसलिए उनके नाम का पुरस्कार न दिया जाये।

सारा कार्यक्रम बन गया। सबेरे राजघाट जाकर गाधी जी की समाधि पर फूल चढ़ायेंगे। शाम को दिल्ली नगरपालिका की ओर स रामलीला के मैदान म भगवान का अभिनदन पत्र अर्पित किया जायेगा। इस अवसर पर राष्ट्रपति भवन स भगवान का जुलूस निकलेगा। दीवान खास म हिंदी उर्दू मुशायरा, रेडियो म अतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, सगीत नाटक एकादमी की ओर से सप्रू हाउस म उदयशकर जी का नृत्य, सुब्बुलक्ष्मी का गायन तथा प्रादेशिक शीतनृत्यो का प्रदर्शन होगा। फिर भगवान को नीलोखेड़ी भाखडानगल चुक, चितरजन आदि की सैर कराई जायेगी। ताजमहल के ऊपर भी उनका हवाई जहाज चक्कर लगायेगा। अत मे प्रधानमंत्री के साथ पचशील के सधिपत्र पर हस्ताक्षर करते हुए भगवान फोटो खिचवायेंगे तथा रेडियो से विदाई सदेश प्रसारित करेंगे।

दिल्ली म भगवान को लेकर बडा कल्चर फला। बालो का टेढ़ा जूडा बाधकर उनपर फूल लपेटे, लिपस्टिक लगाये, अजता लिबास म मिसें और मेम साहबें सुजाता की कल्चरल नकल करती हुई खीर के कटोरे लेकर आने लगी। भगवान को कल्चर के कारण अवकाश ही नही मिल पाता था। बहुजन हिताय बहुजन सुखाय भगवान लोक को उपदेश देना चाहते, लेकिन लोग उनके उपदेश न सुनकर जय बोलना चाहते थे, उनके ऑटोग्राफ लेना चाहते थे, उन्हें चाय, लच, डिनर पर

अपने घर बुलाना चाहते थे। कचर की इस भरमार से भगवान इतने थक गये कि कुसिया जाकर शांति पाने का कसबल उनमे नही रह गया था। वे भारी भीड के बीच से अचानक अतर्धान होकर राजघाट मे समा गये।

बेचारे आनद कुशीनगर मे रेडियो मे रनिंग कमेटरी सुनने की लालसावश कई दिनो तक कान से लगाये बैठे ही रहे।

महिला उर्फ मिजाजे माशूक

कोई दूर भी नही बस कानपुर तक ही जाना था, पर यात्रा के बाधनू बाधते-बाधते ही हमारा मन जलेबी बन गया। चक्कर उतने ही, मगर चाशनी नदारद।

रोडवेज की बस से जा तो सकते थे मगर उसका टिकट खरीदने के लिए जिस लबे 'क्यू' से गुजरना पडता है वह बडा दुखदायी है। बाके-तिरछे लोग धौम सहित आगे धसकर पीछे वाला का पिछाडत ही चले जाते है। क्यू म ऐसी कोवारार मचती है कि सुनते-सुनते कान पक जात है। पहल हम डायलाग लिखन के लिए मसाला मिलता था, अब उसके स्टाक के स्टाव चूकि हमारी नोटबुको और दिमागी गोदामो म भरे पडे है इसलिए मसाला बेभाव हो गया है। खडे खडे और पिछडते पिछडते बोरियत का मुजस्सिमा बनना अब हमारी सेहत को नही सुहाता इसलिए सबसे सस्ते यात्रा साधन को हम अनिच्छापूर्वक अस्वीकारना पडा। दूसरा उपाय यह था कि टक्सी से जायें मगर जब स टक्सियो के भाव चढ गये है तब से छह सवारियो की अपनी माग पूरी करने के लिए टक्सी ड्राइवर के साथ-साथ वठी सवारिया को भी घटो तपस्या करनी पडती है। सोचा कि ट्रेन स ही जायें लेकिन सकड क्लास यानी पुरान थड क्लास म जब हमारे बाप-दादा ही नहो गये तो फिर हमी उस घुग्टी म पडी परपरा क्या तोडें? परपरायें सही हो या गलत, बडी मुश्किल से जुडती या खत्म होती है। खर यह बात तो अपनी जगह पर थी ही अलावा इसके फिर वही पुराना मसला दरपेश था कि दूसरे दर्जे की टिकट खिडकी के क्यू मे खडे होना हमारे बस की बात न थी। यह जानते थे कि अब फस्ट क्लास के किराये वहुत बढ गये है हमने अपनी सतजुगी सनक म यह

नही सोचा था कि लखनऊ से कानपुर का किराया अब दस रुपये से तेईस रुपया हो गया होगा। भगवती बाबू की कहानी के एक पात्र नेता गनेसी-लाल के अनुसार उनकी सरकार ने यह महगाई इसलिए बढा दी है कि लोग फिजूलखर्ची स बाज आयें। बहरहाल हम बाज ता न आये पर जेब पारा-पारा हो गयी। बबई जान वाली बोगी के एक कपाटमट म हम जा बठे। थोडी देर म एक अ य मज्जन आय। लगना था कि रिटायर होने से पहल या तो अफसर रह हाग या फिर कोई पुराने जमाने के अग्रेजा फानपरस्त जमीदार हाग, जि हें अब तुर्नी वाटिया और नया शारवा ही नसीब हाता हागा। नये समय की महगाई ने उनके रोब की रस्सी तो जला दी थी मगर ऐंठन नही गयी थी। उनका साज सामान ेखकर लगा कि शायद बबई जा रह है। दस-पाच मिनट वाद एक देवी जी आ पधारी। उन्हें देखकर लगा कि चेहरे पर असली घी की चिकनाई ही कुछ और होती है। खडहर हुई जवानी के वावजूद बूढी इमारत अजीम उदशान लगती थी। चेहरा-मोहरा, पोशाक हीरे की तकिया, मोतिया की माला सब कुछ यह बता रहा था कि यह महगाई का प्रखर सूय इनके काल चश्म को भेदकर इन्हें चौधियाने म अब तक लगभग असमथ ही रहा होगा। माल असबाब का छोटा मोटा हिमालय तो साथ था ही, एक रदद वाबकट भूतपूव सिने-हीरोइन सी लगन वाली अधेड नौकरानी भी थी। हम ता खिडकी के किनारे बैंठे थे, दो एक बार उचटती कनखियो से उन्हें दखा और दूसरी पटरी पर खडी मालगाडी के सामन वाल उस खुले डिब्ब को देखने लगे जिसम दो भसे खडी पगुरा रही थी। यद्यपि यह सही था कि उन कृष्णवणा पशु-महिषियो के दशन करन के बजाय इन गौर-वर्णा मानव महिषी का मुखडा निहारना अधिक सुखकर लगता मगर उनकी रगीन चश्मा चढी आखा म हमे चूकि नुकीने सीग नजर आ रहे थे, लिहाजा उधर से कन्नी काट लेना ही उचित लगा। अच्छा ही हुआ शायद इसी कारण स वह नयन मृग सामने वाले मज्जन को ही चुभे। तीखा बारीक स्वर मराठी बोलने लगा, "शेवती, असबाब इकडे ठेव। हमाल इधरीच रखो।

हमने दखा नही, पर कुली शायद उधर ही बढा होगा। तब तक

सज्जन का स्वर सुनाई पडा, "यह लोवर बर्थ मेरे लिए रिजर्व्ड है।"

"पर मेरी वास्ते भी लोवर रिजर्व्ड है।" मराठी मार्का हिंदी म उत्तर आया।

"ठीक है, तो सामने वाली अकुपाई कर लीजिए।"

शुद्ध घी छाप महिषी का तीखा, झुझलाया स्वर सुना "इधर सामान लगाओ हमान। इधर के लोगों म मनर्स मुलीच नही।" महिषी हमारी सीट की तरफ बढ़ी। उनके नयन सीग चुभने से पहले ही हम चटपट उठ खडे हुए और अपनी पक्की मराठी को लखनवी तकल्लुफ मे पाग कर पेश किया "आपण इकडे बसा। मी तिकडच्या सीट वर जाऊन बसतो।"

महिषी की आखो म सीगो की जगह टाफी जसी मिठास झलकी। मैं साहब की सीट पर एक आर बठ गया। देवी जी की नौकरानी ने उनका बिस्तर बाकायदे बिछा दिया, हालाकि रात होने मे अभी पूरे बारह घटे बाकी थे। देवी जी पालथी मारकर सतायी माता की मूर्ति बनकर बठ गयी। तभी कडक्टर आया, टिकट देखे। नौकरानी का टिकट सकड क्लास का था। कडक्टर ने आपत्ति की, "तुम यहा नही बठ सकती।" देवी जी भडक उठी, "हू विल लुक आफ्टर मी ? मैं ब्लड-प्रेशर की मरीज हू। मुझे हर समय एक अटेंडेंट अपने साथ चाहिए। पुराने फस्ट-सेकड क्लासेज के साथ सर्वेंटस कपार्टमेटस बनाये जाते थ। अब वह सुविधा भी छिन गयी है। आखिर हम क्या करें ? मैं उसके लिए कोई बथ तो मागती नही, यही फश पर मेरे पास रहेगी।"

नये जमाने म जातिवाद का कायल नही होना चाहिए, मगर कडक्टर के गुण-लक्षण मुझे वश्यो जसे ही लगे—आदि म विनीत, अत मे विनीत, मगर कायकाल मे निष्ठुर। बडे शात भाव से सुना और बडे विनम्र भाव से बडी शुद्ध हिंदी मे उत्तर दिया 'माता जी हम तो जनता के अकिंचन सेवक हैं ! जो विधि-विधान नियमादि हमारे विधायका और शासको ने निर्मित किये हैं उनका हम पालन करते हैं। मुझे आपके रक्तचाप के समाचार स चिंता हो गयी है। आप माता मैं पुत्र, पूरी सेवा करूगा, परतु इस परिचारिका को यदि आप यही रखना चाहती है, ता आपको

पूरा मूल्य चुकाना ही होगा।"

माता जी बहुत लाल-पीली हुईं। संस्कृत में 'राजा कालस्य कारणम्' और फिर अंग्रेजी में ब्रिटिशयुगीन माहात्म्य बखाना, मगर कंडक्टर के बारे में मेरी धारणा ही अधिक पुष्ट हुई और कोई फल न निकला। माता जी-माता जी' करके मेरे शेर ने उनसे नौकरानी के टिकट का मूल्य धरवा ही लिया।

"सुनिए!"

"जी, माता जी!"

'इसमें उधरवाली सीट के ऊपर बाजू का बंध दूसरे का वास्ते देना। हमरा ऊपर वाला पर हमेरा मेडसर्वेंट सोयेगा।"

"जी, माता जी, आपकी आज्ञा का अक्षरशः पालन होगा। आप अपने रक्तचाप को उत्तेजित न करें। मुझे उसकी बड़ी चिंता है।

लेकिन ऐसा लगता है कि स्वयं विधना ने ही उन महामहिमामयी के भाग्य में रक्तचापोत्तेजन की कठिन तपस्या लिख दी थी। अभी एक अंगार भड़क भड़ककर राख हुआ भी न था कि दूसरा, स्वयं उन्हीं की 'आ बैल मुझे मार' वाली आदत ने भड़का दिया। मैं अपना कानपुरी टिकट दिखलाकर समाचार-पत्र पढ़ने में रम गया था। कंडक्टर भी चला गया था, तभी एकाएक महिमामयी का पैनी कटार जैसा स्वर कानों से टकराया, "हमेरे कू पैसा देना पड़ा, इस वास्ते आपको बड़ा खुशी हुआ। क्यों ना?"

हमने चौंककर अखबार हटाया। देवी जी दूसरे सज्जन की ओर आग्नेय दृष्टि से देख रही थीं। सज्जन का चेहरा तमतमा आया, कुछ-कुछ घुड़ककर अंग्रेजी में पूछा, "आपने मुझसे कुछ कहा?"

हां! मुस्कराए आप थे। यह बेचारे तो भद्र पुरुष की तरह पेपर पढ़ रहे थे।"

भूतपूर्व जमींदार या अफसरनुमा सज्जन का चेहरा लाल हो गया। उनका चेहरा बतला रहा था कि वे अपने आप संयम रखने के लिए कितना जूझ रहे हैं और शायद इसी संयम साधन के कारण ही उन्होंने अंग्रेजी छोड़कर एकाएक हिंदी में कहा "आपकी जैसी ऊंचे दर्जे की महिला को

इन तरह "

'डाट यू डेयर टू इमल्ट मी ! जेंटिलमैन !" मेरी ओर देखकर "आप साक्षी है। मैं इन पर मानहानि का दावा ठोकूगी। बिना बात के यह पुरुष मेरा अपमान करता है।

अब पुरुष महाशय का भी पारा चढ़ा, हमने बार, ... रहे हैं न आप मैंने तो नारापन म महिला लफ्ज का इस्तेमाल किया। और यह औरत किमी

देखिये-देखिये फिर यह कह रहा है महिला। मेरा बार बार अपमान कर रहा है।

लेकिन मैं अपमान कर कहा रहा हूँ ? महिला क्या बुरा लफ्ज है ?' साहब गर्माये।

महिला यानी वासनाप्रिय मदोन्मत्त स्त्री। डू आइ लुक लाइक दट ?

यह सुनकर हम तो धड़ाम से मन ही मन में गिर पड़े। हजारों बार भरी सभाओं में इस शब्द का प्रयोग किया होगा। यह मात्र संयोग ही था कि अभी तक हम कोई ऐसी स्त्री नहीं मिली जो महिला शब्द का यह अर्थ बतलाती। देवी जी के बतलाए हुए अर्थ से महिला कालिज महिला अस्पताल या महिला होस्टल किसी भी संस्था का नाम किस अर्थ में लिया जायगा ? हमारी बुद्धि का चक्का ही जाम हो गया। हमने फिर भी साहस बटोरकर पूछा देवी जी आप विदुषी हैं मैं अल्पबुद्धि हूँ। इस शब्द का ऐसा बुरा अर्थ मैंने आज ही सुना है। जिज्ञासावश पूछ रहा हूँ, किस कोश में यह अर्थ लिखा है ?

'वामन शिवराम आप्टे। नाम सुना है कि नहीं ?

जी हाँ यह तो बड़ा वरेण्य नाम है।

'तब इस असभ्य पुरुष से कहिए कि यह मुझसे क्षमा मांगे।

अब तो पुरुष महोदय अपना आपा खोकर क्रोध में कांपते हुए खड़े हो गये, मैं इस पागल औरत के साथ सफर नहीं कर सकता। कंडक्टर—कंडक्टर !"

'आप खुद पागल हैं असभ्य है। मी ऐसा हलकट लोक के साथ

एकच कपाटमट मे मुसाफरी नही करूगी। कडक्टर कडक्टर।' देवी जी की आवाज एकदम डवल तारसप्तक मजर थी। आसपास क कपाटमटा स लाग-वाग चौंक-चौंककर हमारे डिब्बे क सामन गलियारे म आ गये। कडक्टर भी वगल म ब्रीफकेस दवाय अलादीन क चिराग वाले देव की तरह प्रकट हो गया। दाना वयोवद्धा न प्राय एक साथ ही चिल्लाकर अपनी माग पेश की। कडक्टर ने अपन मुख पर ऋषि छाप गभीरता लादकर कहा 'माता जी! पिता जी! आप दाना ही महान महान व्यक्तियो के समक्ष प्राय सभी प्रतिष्ठित यात्री उपस्थित ह। स्वय ही किसी स अपना स्थान-परिवतन करन की सहमति ल ल।

पुरुष महादय दरवाजे पर जाकर गलियारे मे खडे लागो को वतलाने लग 'यह अपनी मेड सर्वेंट को भी फस्ट क्लास म रखना चाहती थी। कडक्टर ने टिकट के लिए इसरार किया जो उ ह देना पडा। बस मुझ पर उवल पडी कि आप मुस्करा रहे है आपको खुशी हुई है। भला यह भी कोई वात है।"

दवी जी भी आग वढ आयी अग्रजीम वाली जटिलमेन इस आदमी ने मेरा अपमान किया है मुझे वड अश्लील शब्द स सबोधित किया है'

'साहवान, मैंन इन्हें महिला कहा। आम तौर से हम लोग सब शरीफ औरता को महिला ही कहत हैं—एड शी सेज दट इट इज ए वल्गर वड।'

किसी मसखरे युवक ने पीछे हसकर कहा 'देन काल हर महिषी। शी लुक्स लाइक ए पर्फेक्ट ह्वाइट भस।"

यह रिमाक फस्ट क्लास के यात्रियो के बीच म खासा झटकेदार था। किसी स्त्री के लिए चाहे वह साक्षात भस ही क्यो न हो ऐसा कहना उचित नही तिस पर सभ्यता की दृष्टि से कान म खाज या हुई कि एक ठहाका भी सुनायी पडा। कपाटमट के सामने खडे लोगो ने जवदस्ती गभीरता के मुखौटे लगाये, मगर मैं वारीकी से देख रहा था कि हर चहर पर दूज के चाद जसी मुस्कराहट की लकीर खिच गयी थी। औरो की क्या कहूँ, स्वय हमारा भी यही हाल था। दरअसल इस मुफ्त की भाव-भाव से हम बोर हो गये थे। इस सभ्रात-सी लगने वाली स्त्री ने जब

की तरह होता है और एक तेज जलधारा मे पडने वाली भवरो जैसा जो बात को एकाध बार ऊपर उछालकर फिर गहरे घुन्नेपन म खीच ले जाती हैं। हम लगा कि इनका क्रोध दूध के उबाल जैसा नही है। यह माना कि पृष्ठभूमि की हसी से इनका क्रोध पटक गया था परतु उसका कारण कुछ और हो सकता है। यह देवी जी अपना क्रोध प्रकट करके अपनी महत्ता दिखलाना चहती था, लेकिन उस क्रोध पर किसी के मजाक करने पर वह महत्त्व चूकि असली साबित न हो सका इसलिए खिसियाकर पीछे अवश्य हट गया है, पर अब भी जहा का तहा ही बरकरार है। खर जो हो, हमारे भीतर का जासूस शर्लाकहोम्स इसी मुद्दे पर विचार करता रहा कि आखिर इन बूढी हसीना का गुस्सा भडका किस बात पर था ? मन मे एक बात आयी, हालाकि उसस हमारी उम्र और प्रतिष्ठा को कुछ कुछ झिझक लगती थी, लेकिन हम अपने अदर-दर अदर बठे उस किस्सागो का क्या करें जो लखनवी सी है। पुराने लाग कहा करते थे कि लखनऊ वालो म महज एक ही ऐब होता है, नजर का एब। चूकि अपने ऐब से दूसरो के एब पहचानने मे सुविधा हाती है इसलिए हमारा किस्सागा हमारी सठियाती उम्र को पाठा बना दता है। घर से एक दोस्त के बच्चो के लिए मिठाइयो का पकेट लेकर चला था झट स उसे खोला और बडे अदाज से मुस्कराकर देवी जी के सामने पश करते हुए अपनी टूटी फूटी मराठी मे कहा, "यह लीजिय, लखनउ की खास मिठाई है दूधिया हलवासोहन।

"नको, नको।"

"अरे लीजिय भी। सर्दी की ऋतु म ही बनती है ये मिठाई। आपका चित्त प्रसन्न हो जायगा।" हमने उनके ना ना करते भी दो टुकडे प्लेट म डाल दिये और ऐसा करते हुए उन्ही के पास बैठ भी गये। उनके तप्त चेहरे पर मान पूरा होने की तरलता आयी और भी मान का आग्रह हुआ। हमने खुशामदाना लहजे मे कहा 'आपके समान परम विदुषी से सयोग्वशात ही भेट हो गया। मै मैं स्वीकार करता हू कि मुझे महिला शब्द का यह अर्थ आज पहली बार ही आपमे जानने को मिला है। आपका शब्द-ज्ञान अगाध है।" देवी जी के मुखमडल पर सतोष की आभा झलक उठी। मिठाई चखने लगी, हमने फिर छेडा 'किंतु सच बात है, भगवान

ने नारी को साक्षात मदिरा ही बनाया है। जियत मरत झुकि झुकि परत जेहि चितवत एक बार।'

हमारा तीर निशाने पर लगा। होठो पर मुस्कराहट की लकीर के साथ ही देवी जी की चश्मा चढ़ी चितवना म चिकनायी चमकी। हमसे पूछा काफी लेंगे ? देवती एक कप इन्हे भी दे।'

धीरे धीरे क्रोध का रहस्य खुलता गया। देवी जी को अपने सुदर होने का गरूर है। ब्रिटिशकाल म बबई का एक अंग्रेज गवर्नर उनकी सुदरता का प्रशसक था। पहले वह एक साधारण स्कूल की हेड मिस्ट्रेस थी, पर लाट कृपा से वह कालेज की प्रिंसिपल हो गया। अब एक 'चरित्रहीना' ने किसी स्वराजी अफसर को अपने हुस्न के जादू म फसाकर उन्ह जबदस्ती रिटायर करवा दिया है। भाग्य की मार इस रूप म भी पडी कि उनके घर म उनकी दोनो पुत्र वधुए सुदर आयी। उनके सबध म उनकी ताने भरी बातो से हमने यह अनुमान भी लगाया कि वे शायद उनसे अधिक सुन्दर है और शायद इसी कारण से देवी जी के ढिल्ले यौवन को हीन भाव से पीडित होना पडता है। उन्हें अपनी बहुआ उनके दास अपने पुत्रो और बूढे पति से शिकायते ही शिकायते है। हमने अब अपना लक्ष्य भेद करने के लिए उपयुक्त क्षण पा लिया। दबी जबान से कहा 'यह व्यक्ति (सामने बठे सज्जन) नि सन्देह बडा ही नीरस है। आपके समान सुदर श्रेष्ठ और परम विदुषी स्त्री के लिए उन्ह अपनी सीट खाली कर देनी चाहिए। मुझसे कहता तो सीट क्या आपके लिए जान तक हाजिर कर देता।'

उस दाती डाइ की मण्डूक स्वभाव की आत्मछलनामयी नारी की आखे छलकत जामो सी लहरा उठी। हमने उनके शाश्वत क्रोध का कारण जान लिया। यह विगत रूप गर्विता महिषी अपने इस अहम भाव के कारण ही सतत पीडित रहती होगी। यही अमनाष उन्हे आठो पहर भड़काता रहता है।

हमारा मन कितनी पत दर पर्तो म झाकता है। बहरहाल हमने उनसे अत म यह कहलवा ही लिया कि महिला के माने शराबी औरत के अतिरिक्त केवल और केवल स्त्री भी होते है और अत म यह भी मनवा लिया कि आप माने या न माने, मगर अपने बतलाये हुए अर्थ के अनुसार

भी आप महिला ही है।"

वे आखे नचाकर, लजाकर बोली, "इश्श !"

उन्नाव क आसपास देवी जी और दासी जी कपाटमट से जरा देर के लिए बाहर हुईं तब हमने साहब की ओर मिठाई का डिब्बा बढाया। उन्होंने अखबार हटाया। हमारे मुस्कराते मुख का देखकर, मुस्कराते हुए दूधिया का एक टुकडा उठाते हुए कहा, "आपने तो मराठी बोल-बोल के खूब रिश्ता गाठ लिया जनाबेवाला !"

हमने कहा, "आपकी रौब्रीली मूछा पर रीझकर वह आपसे शिवेलरी की माग कर रही थी कौल साहब !" उनक ब्रीफकेस पर सुदर अक्षरो म उनका नाम पढते हुए हमने कहा, "अब भी बिगडी बना लीजिए, बबई तक सारा रास्ता बस गुटुरगू करते ही बीतेगा आप दोनो का। और अगर खुदा के फजल स आपके सूटकेस मे व्हिस्की भी रखी हुई है तो रात मे आप उन्हे फिर महिला कह लीजियेगा। वह नाराज होने के बजाय आपको प्यार से देखेंगी।"

कौल साहब जोर से हस पडे और हमारी पीठ पर बाह रखकर कहा, 'मैं आपको पहचान रहा हू। रेडियो पर आवाज बहुत सुनी है। आपने बडी प्रक्टिकल सलाह दी है। मैं उस वक्त समझ न पाया। दरअसल जिंदगी ऐसी तनाव-भरा हो गयी है कि जिस दिल म हरियाली लहराया करती थी वहा अब रगिस्तान बना है। खर अब आते ही सिचुएशन सभाल लूगा।"

अब आग की कथा फक्त इतनी है कि कानपुर म हम उन दोनो ने साथ-साथ गुडबाई' किया।

□□